राष्ट्रीय विचारों का पाक्षिक

पाथेय कण

www.patheykan.com

माघ कृष्ण 6 व माघ शुक्ल 7, वि.2080,युगाब्द 5125,
1 व 16 फरवरी, 2024 (संयुक्तांक)

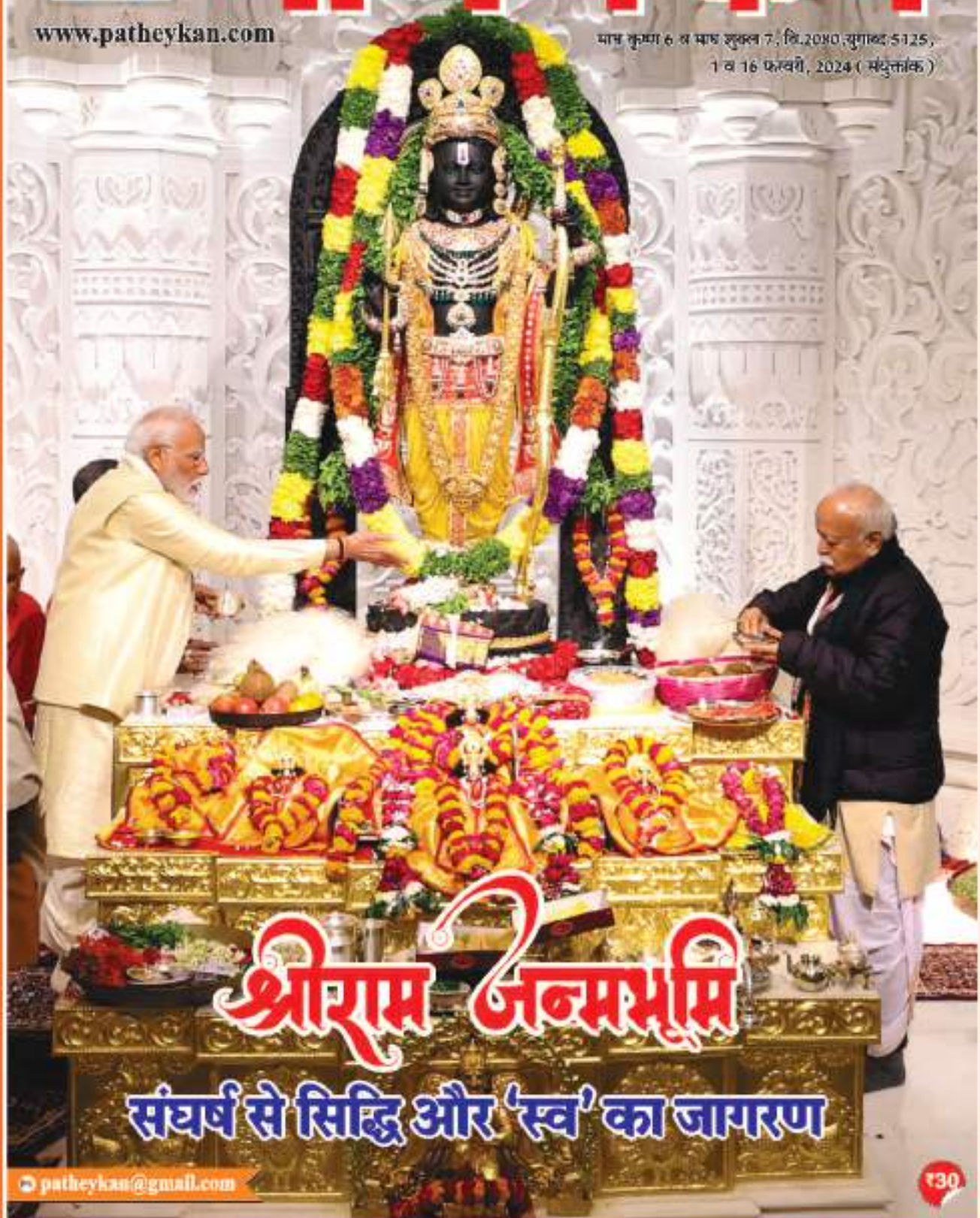

श्रीराम जन्मभूमि

संघर्ष से सिद्धि और 'स्व' का जागरण

patheykan@gmail.com

₹30

भगवान श्री राम
अयोध्या मंदिर
प्राण प्रतिष्ठा की
हार्दिक बधाई
राजू चौधरी
अध्यक्ष
प्रकाश परमार
उपाध्यक्ष
तरुण अग्रवाल
उपाध्यक्ष
सुरेश चौधरी
उपाध्यक्ष
हेमेन्द्र भण्डारी
सचिव
दामोदर मुलड़ा
कोषाध्यक्ष
पारसमल सुथार
सह-सचिव
चन्दाराम कुमावत
सह-सचिव
राकेश शर्मा
सह-सचिव
ग्रेनाईट एसोसिएशन, जालोर

नगर विकास न्यास, अलवर

मोती डूंगरी, अलवर

बाला किला, अलवर

नेहरू पार्क, अलवर

प्रताप ऑडिटोरियम, अलवर

सरिस्का टाईगर रिजर्व अलवर

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र अन्तर्गत राजस्थान के सिंहद्वार नाम से विख्यात हरियाली से आच्छादित अरावली पर्वत श्रृंखला से घिरा हुआ तथा आगामी पर्यावरण सम्बन्धी चुनौतियों हेतु सतत् समाधान उपलब्ध कराने के लक्ष्य के साथ अलवर शहर राष्ट्रीय राजधानी नई दिल्ली व राज्य राजधानी जयपुर के मध्य स्थित प्रमुख औद्योगिक एवं पर्यटन क्षेत्र के रूप में सुनियोजित विकास के नये आयामों की ओर अग्रसर हैं।

अलवर शहर नई दिल्ली व जयपुर से 150 कि.मी. की समान दूरी पर स्थित हैं तथा दिल्ली-मुम्बई एक्सप्रेस-वे (एन.ई.-4) एवं पनियाला-अलवर-बड़ौदामेव मार्ग से जुड़ा हुआ है।

विकासशील अलवर शहर के सुनहरे भविष्य में सहभागिता हेतु आवासीय, व्यावसायिक, संस्थानिक, पर्यटन ईकाई एवं औद्योगिक क्षेत्र में निवेश प्रयोजनार्थ आज ही सम्पर्क करें।

सम्पर्क सूत्रः- 01. विशेषाधिकारी भूमि
मो. 8005505657
02. प्रभारी अधिकारी नीलामी
मो. 9001092315

सचिव
नगर विकास न्यास, अलवर

जिला कलक्टर एवं अध्यक्ष
नगर विकास न्यास, अलवर

अयोध्या में नवनिर्मित श्री रामलला का भव्य मंदिर

SUBSIDY mantra

Amit Kumar Agarwal
Mob.9414062551

आप सभी को 500 वर्षों बाद श्री रामलला के अयोध्या आगमन पर

बधाई और शुभकामनाएं

अनुक्रमणिका

पाक्षिक
पाथेय कण
माघ कृ. 6 व माघ शु. 7
वि. सं. 2080, यु. 5125
1 व 16 फरवरी, 2024
(संयुक्तांक)
वर्ष : 39 अंक : 18

सम्पादक
रामस्वरूप अग्रवाल
सह सम्पादक
मनोज गर्ग
सम्पादन सहयोगी
हेमलता चतुर्वेदी
प्रबंध सम्पादक
ओमप्रकाश
सह प्रबंध सम्पादक
श्याम सिंह
अक्षर संयोजन
कौशल रावत

पाथेय कण संस्थान के लिए
प्रकाशक एवं मुद्रक:
माणकचन्द

सहयोग राशि
एक वर्ष 150/-
पन्द्रह वर्ष 1500/-

प्रबंधकीय कार्यालय
'पाथेय भवन'
4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, अग्रसेन मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर-17 (राजस्थान)

पाथेय कण प्राप्त नहीं होने पर संपर्क करें-
WhatsApp 79765 82011
Mobile No. 94136 45211
99297 22111

पाथेय कण प्राप्त करने के लिए सहयोग राशि Paytm से Mob.No. 7976582011 पर भेजें

E-mail
patheykan@gmail.com
Website
www.patheykan.in

08 रामलला प्राण प्रतिष्ठा का अवर्णनीय, अलौकिक पल: 150 से अधिक परंपराओं के संत-धर्माचार्य, 50 से अधिक जनजातीय परंपराओं सहित देश के सभी क्षेत्रों के प्रमुख लोग बने साक्षी

09 रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के बाद भारत का 'स्व' लौटकर आया है

13 श्री राम जन्मभूमि आंदोलन और हिन्दू स्वाभिमान: 6 दिसम्बर मील का पत्थर

21 कार्य तो जागृत समाज ही करेगा संघ की भूमिका भवन के खम्बे में लोहे के पंजर जैसी...

साक्षात्कार
15 अयोध्या में प्राण प्रतिष्ठा भारत के विश्व गुरु बनने की शुरुआत

12 भारत का नव प्रभात
- नरेन्द्र मोदी

12 संपूर्ण भारत का योगदान
- चम्पतराय

16 अविस्मरणीय क्षण
- जुगल किशोर

17 भारत के 'स्व' का पुनरुत्थान
- डॉ. नारायण लाल गुप्ता

20 जोधपुर में लिखी भागीदारी की पटकथा
- महेन्द्र सिंहल

22 श्रीराम के आगमन का उत्सव
- डॉ. कमलेश शर्मा

26 राममय हुआ सम्पूर्ण विश्व
- प्रो. भगवती प्रकाश शर्मा

29 रज से तिलक तक राजस्थान की चमक...
- हेमलता चतुर्वेदी

31 बंसी पहाड़पुर के लाल बलुआ पत्थर
- दिनकर शर्मा

32 विकसित अयोध्या धाम
- सन्तु अर्थशास्त्री

35 प्राण प्रतिष्ठा व मुस्लिम समाज
- रामस्वरूप अग्रवाल

38 राममंदिर एवं न्यायपालिका
- डॉ. सुरेन्द्र जाखड़

40 रामलला ने लड़ा था मुकदमा
- शांतनु जुगतावत

41 श्रीराम जन्मभूमि के लिए संघर्ष
- सन् 1528 से 1947 तक

42 श्रीराम जन्मभूमि के लिए संघर्ष
- सन् 1947 के पश्चात्

48 मुक्ति महायज्ञ के लोकप्रिय गीत व नारे
- डॉ. श्रीकांत

51 मेरी स्मृतियों में श्रीराम जन्मभूमि संघर्ष
- डॉ. संदीप रांकावत

54 मुस्लिम नेतृत्व की जिद .....
- मौलाना वहीदुद्दीन खान

55 कट्टरपंथियों ने भड़काए दंगे
- के एल बैरवा

57 थाइलैण्ड में भी है एक अयोध्या
- मधुसूदन शर्मा

58 हिन्दी सिनेमा में आस्था से खिलवाड़
- डॉ. शुचि चौहान

60 रामकथा पर बनी फिल्में
- पाथेय डेस्क

61 गोचर भूमि की रक्षा से रामराज्य
- ललित मेघराज जैन

62 आंदोलन और मीडिया कवरेज
- गुलाब बत्रा

64 पुस्तक समीक्षा : कारसेवा से कारसेवा तक
- ऐश्वर्या चौहान

कविता
50 तुमको सौ बार बधाई है
- बलवीर सिंह 'करुण'

कारसेवा के संस्मरण
65 शत-शत नमन
संस्मरण : गौरवान्वित करती स्मृतियां
66/जुगल किशोर, 67/डॉ.विनोद कुमार शर्मा, 69/परमानंद आचार्य, 71/ सीमा दया,71/ महेन्द्र नागर, 72/नारायण उपाध्याय, 73/राजेन्द्र पामेचा, 74/ राज कुमार सोनी, 75/भंवर लाल शर्मा, 76/संजय वशिष्ठ, 77/डॉ. नन्द सिंह नरुका, 78/विवेक कुमार गुप्ता, 79/रवीन्द्र जाजू

मात्र एक और मंदिर नहीं है राम मंदिर

राम एक कल्पना नहीं है।
राम इतिहास है, राम वर्तमान है।
राम मानवता का भविष्य होना चाहिए
और होंगे भी।
राम धर्म की मूर्ति नहीं है, विग्रह है।
राम स्वयं धर्म है।
राम राष्ट्र है।
राम और राष्ट्र भारत के संदर्भ में
विभक्त नहीं हैं, अविभक्त हैं।
वे द्वैत नहीं हैं अद्वैत हैं।
राम शरीरधारी धर्म हैं।
राम धर्म के मूर्तिमान हैं।
राम अनुकरणीय हैं। अनुसरणीय हैं।
जहाँ जहाँ जीवन के सर्वोच्च मूल्य हैं
वो सब राम हैं।
इसलिए,
मंगलकर जो है,
शुभंकर जो है,
मानव हितकारी जो है
सृष्टि के संरक्षक जो भी बात है,
वह सब राम हैं।
यह भारत की,यहां के समाज
की मान्यता है
इसलिए राम मंदिर,
एक और मंदिर नहीं है।

–श्री दत्तात्रेय होसबाले,
सरकार्यवाह, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

स्वाधीन भारत में क्यों करना पड़ा संघर्ष ?

अद्भुत, अनिर्वचनीय, अवर्णनीय, अलौकिक क्षण... करोड़ों आंखे, जिसे देखने के लिए टीवी या एलईडी पर्दे पर गड़ी हुई थीं, आतुर थीं उस क्षण की साक्षी बनने के लिए। 500 वर्षों की प्रतीक्षा का अंत होने वाला था। और, जब देखा अपने रामलला को, तो आंखों से अश्रुधारा बह चली, भावुक हो गया मन। भारत का 'स्व' प्रतिष्ठित हो रहा था। भारतीयों की चिरविजयी अस्मिता और गौरव की पुनर्स्थापना हो रही थी। उस दिन लाइव प्रसारण के सभी पूर्व रिकॉर्ड ध्वस्त हो गए। एक जानकारी के अनुसार रामलला के प्राण प्रतिष्ठा समारोह को विभिन्न चैनल्स पर 16 करोड़ से ज्यादा लोगों ने देखा।

श्रीराम इस देश की पहचान, अभिमान, आदर्श, जीवन मूल्यों और 'स्व' के जीवन्त प्रतिमान थे और हैं। उनके जन्म स्थान पर खड़ा अपमान का प्रतीक हटाकर भव्य मंदिर बनाने में इतने वर्ष क्यों लग गए? इसके लिए क्यों स्वाधीन भारत में भी करना पड़ा लंबा संघर्ष? क्यों देने पड़े बलिदान?

सन् 1947 में जब धर्म के नाम पर देश का विभाजन किया गया तो भारत को हिंदू राष्ट्र (Hindu State) घोषित करने की प्रबल मांग उठी थी। 30 सितम्बर, 1947 को मिल मजदूरों व कर्मचारियों की एक सभा को संबोधित करते हुए भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने कहा, ''जब तक भारत से जुड़े मामले मेरे अधिकार में हैं, तब तक भारत हिंदू राष्ट्र नहीं बनेगा।'' दो दिन बाद 2 अक्टूबर, 1947 को दिल्ली कांग्रेस के महात्मा गांधी जयंती कार्यक्रम में उन्होंने फिर कहा, ''मैं इस हिंदू राष्ट्र की मांग का एकदम विरोध करता हूँ। हिंदू राष्ट्र की मांग न केवल मूर्खतापूर्ण और मध्ययुगीन है बल्कि फासीवादी भी है।'' ऐसी बात नेहरू ने कभी भी मुस्लिम राष्ट्र-पाकिस्तान की मांग के संदर्भ में नहीं कही। दरअसल वे न तो हिंदू राष्ट्र के सर्व-समावेशी चरित्र को समझ सके और न ही हिंदुओं की सहिष्णुता, सह-अस्तित्व और पंथनिरपेक्षता के दर्शन और इतिहास को अनुभव कर पाए। नेहरू जी 'हिंदू' शब्द को लेकर कई पूर्वाग्रहों से ग्रसित थे। उन्हें एक प्रकार से हिंदू शब्द से ही चिढ़ थी। आगे चलकर यही हिंदू विरोधी सोच वोटों की राजनीति के चलते मुस्लिम तुष्टीकरण से जुड़कर कांग्रेस सहित अधिकांश राजनीतिक दलों की परिपाटी बन गई। वामपंथी तथा छद्म धर्मनिरपेक्षतावादी बुद्धिजीवियों ने लंबे कांग्रेसी राज में इसे शिक्षा सहित समाज के सभी क्षेत्रों में प्रतिस्थापित करने का प्रयास किया।

कितने लोग जानते हैं कि सोमनाथ मंदिर को अपने मूलरूप में फिर से बनवाये जाने तथा इसके चारों ओर एक वर्गमील क्षेत्र को विकसित करने का प्रस्ताव नेहरू मंत्रिमंडल में स्वीकृत हुआ था। इसके लिए योजना बनाकर क्रियान्वित करने के लिए एक एजेंसी बनाई गई थी। सरदार वल्लभ भाई पटेल का आभा मंडल और व्यक्तित्व ही था कि मंत्रिमंडल में सोमनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण का प्रस्ताव पारित हो सका। यह नेहरू जी की इच्छा के विरुद्ध था। इसलिए जैसे ही सरदार पटेल का 15 दिसम्बर, 1950 को निधन हुआ, नेहरू जी ने सोमनाथ मंदिर के निर्माण में रोड़े अटकाने शुरू कर दिए।

सरदार पटेल सोमनाथ मंदिर पुनरुद्धार के लिए तत्कालीन खाद्य व कृषि मंत्री केएम मुंशी को दायित्व सौंपकर गए थे। नेहरू ने मुंशी को कहा, ''मैं पसंद नहीं करूंगा कि आप सोमनाथ मंदिर पुनरुद्धार का प्रयास करें।'' केएम मुंशी ने इसके जवाब में नेहरू को लिखे अपने पत्र (दिनांक 24 अप्रैल, 1951) में जो लिखा वह स्वर्णाक्षरों में सब जगह लिखवाए जाने योग्य है। उन्होंने लिखा-

''भारत की स्वतंत्रता अगर हमें गीता से दूर करती है या हमारे करोड़ों लोगों के मंदिरों के प्रति विश्वास को चोट पहुंचाती है तो ऐसी स्वतंत्रता का मेरे लिए कोई मूल्य नहीं है।''

मुंशी जी ने यह भी लिखा-

''सोमनाथ के पुनरुद्धार की योजना से समस्त जनमानस को जितनी खुशी मिली है वह हमारे द्वारा किए गए या किए जा रहे किसी कार्य से नहीं मिली है।''

केएम मुंशी राजनेता के साथ ही स्वतंत्रता सेनानी, प्रसिद्ध साहित्यकार, शिक्षाविद और भारतीय संस्कृति के अध्येता थे। उन्हें भारतीय जनमानस की पहचान थी। हिंदू मानस में आक्रांताओं के प्रति आक्रोश व अपने आराध्यों के जन्मस्थलों को प्राप्त करने की आकांक्षा को ठेस पहुंचाने तथा हिंदू धर्म एवं हिंदुत्व के विचार को पीछे धकेलने के प्रयासों की शुरुआत नेहरू जी ने की।

जब नेहरू जी को जानकारी मिली कि भारत के राष्ट्रपति डॉ. **राजेन्द्र प्रसाद 11 मई, 1951 को सोमनाथ प्राण प्रतिष्ठा के लिए जाने वाले हैं तो उन्होंने राजेन्द्र बाबू को कहा, ''मुझे आपका सोमनाथ मंदिर के उद्घाटन से जुड़ना पसंद नहीं है। अच्छा होगा कि आप इस समारोह की अध्यक्षता न करें।'' राजेन्द्र प्रसाद ने नेहरू की बात नहीं मानी और प्राण प्रतिष्ठा में गए। नेहरू जी यहीं तक नहीं रूके, 2 मई, 1951 को राज्यों के मुख्यमंत्रियों को पत्र लिखकर सोमनाथ मंदिर के समारोह से दूरी बनाने के निर्देश दिए तथा सूचना-प्रसारण मंत्रालय को राष्ट्रपति के मंदिर कार्यक्रम को**

शेष पृष्ठ 19 पर →

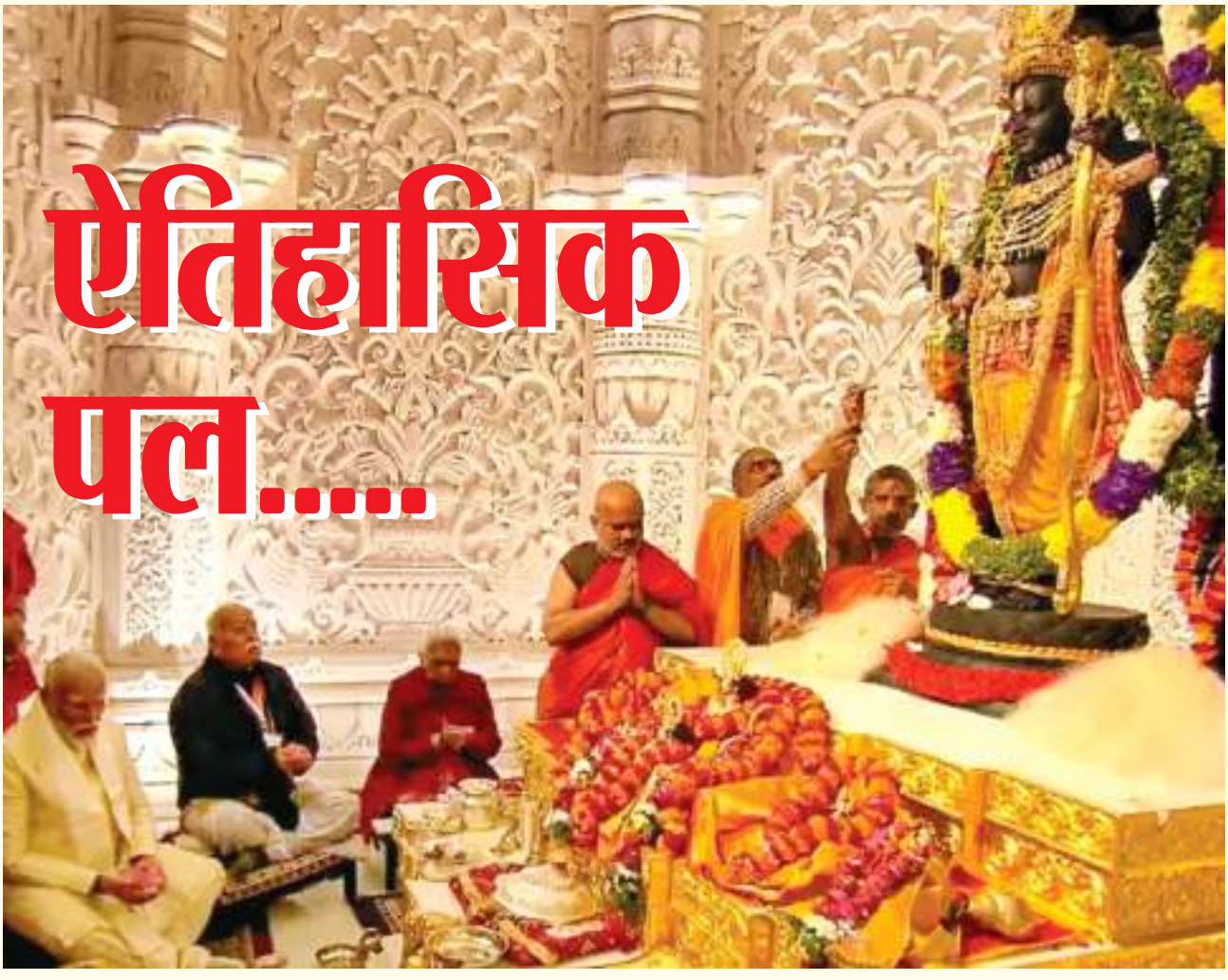

ऐतिहासिक पल......

श्री रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के साथ ही विश्व के करोड़ों रामभक्तों के हाथ स्वतः भगवान के समक्ष श्रद्धा से जुड़ गए, शीश नमन में झुक गए आंखें छलछलाआईं। 'स्व' की पुनर्प्रतिष्ठा हो रही थी।

अयोध्या में हुए कार्यक्रम में संत-महात्माओं के साथ ही उद्योग, साहित्य, राजनीति, सामाजिक-सांस्कृतिक क्षेत्र, खेल, सिनेमा सहित समाज जीवन में अग्रणी आठ हजार से अधिक विभूतियों को आमंत्रित किया गया था। समारोह में विभिन्न देशों के प्रतिनिधि शामिल हुए। देश के कोने-कोने में मंदिरों और घरों से लेकर सड़कों तक रामोत्सव मनाया गया। रामलला का मंदिर में विराजना राष्ट्रीय पर्व बन गया। समारोह पूरा होने के बाद अवधपुरी 10 लाख दीपों से जगमगा गई और देश भर में प्रकाशोत्सव का परिदृश्य साकार हो उठा। लगभग हर घर की छत पर श्रीराम पताका फहरा दी गई।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हाथों श्रीरामलला के विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा हुई। अनुष्ठान को काशी के प्रख्यात वैदिक आचार्य गणेश्वर द्रविड़ और आचार्य लक्ष्मीकांत दीक्षित के निर्देशन में 121 वैदिक आचार्यों ने संपन्न करवाया। इस दौरान 150 से अधिक परंपराओं के संत-धर्माचार्य और 50 से अधिक आदिवासी, गिरिवासी, तटवासी, द्वीपवासी, जनजातीय परंपराओं की भी उपस्थिति रही। प्राण-प्रतिष्ठा के बाद पीएम मोदी का संबोधन हुआ। उनसे पहले सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने संदेश दिया। प्रारंभ में श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के अध्यक्ष महंत नृत्य गोपाल दास जी तथा कोषाध्यक्ष स्वामी गोविंद गिरी जी के संक्षिप्त उद्‌बोधन हुए। गोविंद गिरी जी ने अपने हाथों से प्रधानमंत्री मोदी को चरणामृत पिलाकर उनका 11 दिवसीय व्रत खुलवाया।

शाम को अयोध्या 10 लाख दीपों से जगमगा गई। इसके साथ ही मकानों, दुकानों, प्रतिष्ठानों और पौराणिक स्थलों पर राम ज्योति प्रज्वलित की गई। अयोध्या, सरयू नदी के तटों की मिट्टी से बने दीपों से रोशन हुई। रामलला, कनक भवन, हनुमानगढ़ी, गुप्तारघाट, सरयू तट, लता मंगेशकर चौक, मणिराम दास छावनी समेत 100 मंदिरों, प्रमुख चौराहों और सार्वजनिक स्थलों पर दीप प्रज्वलित किए गए।

देशभर में लाखों मंदिरों सहित घरों पर दीए जलाए गए। दीपावली के 70 दिनों बाद फिर एक दीपावली देश भर में मनाई गई। जिधर देखो उधर ही राम-हनुमान के चित्रों वाले भगवा ध्वज लहरा रहे थे। रामोत्सव राष्ट्रोत्सव बन गया था। ▪

रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के साथ भारत का 'स्व' लौटकर आया है- डॉ.भागवत

जिस धर्म की स्थापना करने के लिए राम का अवतार हुआ था, उस धर्म की स्थापना करने के लिए अपने आचरण से अपने देश में अनुकूल स्थिति उत्पन्न करना- यह हमारा कर्तव्य है। रामलला हमें हमारा यह कर्तव्य याद दिलाने के लिए ही आए हैं। यदि हमने अपना कर्तव्य पूरा किया तो मंदिर निर्माण के साथ-साथ विश्वगुरु भारत का भी निर्माण पूरा होगा।

सरसंघचालक डॉ.मोहन भागवत ने अयोध्या में 22 जनवरी को श्री रामलला प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर सम्बोधित करते हुए कहा कि रामलला के लौटने के साथ ही भारत का 'स्व' लौटकर आया है। यह कार्यक्रम इस बात का प्रतीक है कि सम्पूर्ण विश्व को त्रासदी से राहत देने वाला एक नया भारत खड़ा होकर रहेगा।

इस इतिहास का श्रवण करने वाला बनेगा कर्मप्रवण

उन्होंने कहा कि रामलला की प्राण प्रतिष्ठा से पूरे देश में जो उत्साह और आनन्द का संचार हुआ है उसका वर्णन संभव नहीं है। सरसंघचालक जी ने इस अवसर पर उन सब को नमन किया जिनकी तपस्या, त्याग, बलिदान व परिश्रम के कारण 500 वर्षों बाद यह दिन आया। उन्होंने कहा कि इस युग में रामलला के फिर वापस आने का इतिहास जो भी व्यक्ति श्रवण करेगा वह राष्ट्र के लिए कर्म प्रवण होगा।

रामराज्य लाने के लिए तप करना होगा

उन्होंने रामचरित मानस में वर्णित रामराज्य के लक्षणों की चर्चा करते हुए कहा कि भारत में रामराज्य तो आने वाला है। परन्तु हमें भी इसके लिए तप करना होगा। आपसी कलह समाप्त करने होंगे। आपस में छोटे-छोटे मतभेद-विवाद रहते ही हैं। उनको लेकर लड़ाई करने की आदत छोड़नी होगी। रामराज्य के नागरिक प्रामाणिकता से आचरण करने वाले, बात-बात में अहंकार न पालने वाले, केवल बातें नहीं, काम करने वाले तथा धर्मरत थे। हमें भी ऐसा बनना होगा।

धर्म के चार मूल

सरसंघचालक जी ने श्रीमद्भागवत में बताए गए धर्म के चार मूल्यों- सत्य, करुणा, शुचिता व तपस की चर्चा की। आपस में समन्वय रखते हुए व्यवहार करना ही सत्य का आचरण है। करुणा में सेवा और परोपकार निहित है। जहां दु:ख, पीड़ा दिखती है वहां हम सेवा करें। खूब कमाएं, परन्तु अपने लिए न्यूनतम रखकर शेष सेवा एवं परोपकार के माध्यम से वापस

समाज को दें, यही करुणा का अर्थ है। शुचिता यानी पवित्रता के लिए संयम चाहिए। अपने जीवन कुटुम्ब,समाज, सब में अनुशासन चाहिए। उन्होंने भगिनी निवेदिता को उद्धृत किया- '' स्वतंत्र देश में नागरिक संवेदना रखना और नागरिक अनुशासन का पालन करना ही देशभक्ति है'' तपस अर्थात् तपस्या के संदर्भ में प्रधानमंत्री मोदी जी का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि हमें व्यक्तिगत के साथ ही सामूहिक तप भी करना होगा। सामूहिक तप है-' संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनासि जानताम्।' अर्थात् हम सब साथ चलेंगे, आपस में बोलेंगे और उसमें से सहमति का संवाद निकालेंगे। एक जैसी भाषा बोलेंगे जो वाणी,मन, कर्म व वचन समन्वित होगी। अपने देश को फिर से विश्व गुरु बनायेंगे यह तप हमें करना है।

अपने आचरण से अनुकूलता उत्पन्न करें

अपने उद्बोधन के अंत में डॉ.भागवत ने कहा कि जिस धर्म की स्थापना करने के लिए राम का अवतार हुआ था, उस धर्म की स्थापना करने के लिए अपने आचरण से अपने देश में अनुकूल स्थिति उत्पन्न करना- यह हमारा कर्तव्य है। रामलला हमें हमारा यह कर्तव्य याद दिलाने के लिए ही आए हैं। उन्होंने आशा व्यक्त की कि यदि हमने अपना कर्तव्य पूरा किया तो मंदिर निर्माण के साथ-साथ विश्वगुरु भारत का भी निर्माण पूरा होगा। ■

मोदीजी का 11 दिवसीय उपवास चरणामृत के साथ खुलवाते गोविंद गिरी जी, साथ में खड़े हैं सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत व उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ

प्रधानमंत्री मोदी रामलला को साष्टांग प्रणाम करते हुए

अन्य संतों के साथ बागेश्वरधाम के संत श्री धीरेन्द्र कृष्ण शास्त्री

बाबा रामदेव तथा कथावाचक मोरारी बापू

अभिनेता अनुपम खेर

अरुणाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री पेमा खांडू अपने मंत्रियों व विधायकों के साथ रामलला के दर्शन करने पहुँचे। साथ में खड़े हैं श्री चंपतराय (06 फरवरी)

अलौकिक क्षणों के साक्षी
प्राण-प्रतिष्ठा में शामिल कुछ प्रमुख लोग

हिंदी सिनेमा के रणधीर कपूर व आलिया भट्ट की बगल में बैठी हैं बैडमिंटन स्टार सायना नेहवाल, पीछे बैठे हैं आयुष्मान खुराना, विक्की कौशल और कैटरीना कैफ आदि

आंदोलन की नेत्रियां: उमाभारती व ऋतम्भरा जी

प्रसिद्ध संगीतकार-गायक शंकर महादेवन एवं गायक सोनू निगम ने गाए भजन

मूर्तिकार अरुण योगीराज

उड़नपरी पीटी ऊषा व दक्षिण भारत के सुपर स्टार अभिनेता चिरंजीवी तथा उनके स्टार पुत्र रामचरण

कंगना राणावत के साथ दीपिका चिखलिया
(धारावाहिक रामायण में बनी थी सीता)

उद्योगपति मुकेश अंबानी पत्नी नीता अंबानी के साथ

क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर व दक्षिण भारतीय फिल्मों के सुपर स्टार रजनीकांत

क्रिकेटर अनिल कुंबले पत्नी के साथ

न्यायमूर्ति एनवी रमन्ना, अशोक भूषण और यूयू ललित (ऊपर चित्र में) सहित सर्वोच्च न्यायालय के तेरह भूतपूर्व न्यायाधीश प्राण प्रतिष्ठा में उपस्थित रहे।

विरासत पर गर्व करते हुए भारत का नव प्रभात लिखना है

"हमारे लिए ये अवसर सिर्फ विजय का नहीं, विनय का भी है।"

श्री रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर आमंत्रित लोगों को संबोधित करते हुए भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा–

हमारे पुरुषार्थ, त्याग, तपस्या में कुछ तो कमी रह गई होगी कि हम इतनी सदियों तक ये कार्य कर नहीं पाए। आज वो कमी पूरी हुई है। मुझे विश्वास है, प्रभु राम आज हमें अवश्य क्षमा करेंगे। भारत की न्यायपालिका ने न्याय की लाज रख ली। न्याय के पर्याय प्रभु राम का मंदिर भी न्याय बद्ध तरीके से ही बना।

देव से देश तथा राम से राष्ट्र तक चेतना का विस्तार

हमारी चेतना का विस्तार... देव से देश तक, राम से राष्ट्र तक होना चाहिए। आज देश में निराशा के लिए रत्तीभर भी स्थान नहीं है।

हर छोटे-बड़े प्रयास की ताकत

अगर कोई ये सोचता है कि वह बहुत सामान्य सा छोटा व्यक्ति है तो उसे गिलहरी के योगदान को याद करना चाहिए। गिलहरी का स्मरण ही हमारी इस हिचक को दूर करेगा, हमें सिखाएगा कि छोटे-बड़े हर प्रयास की अपनी ताकत होती है, अपना योगदान होता है और सबके प्रयास की यही भावना, समर्थ-सक्षम, भव्य-दिव्य भारत का आधार बनेगी। अपनी विरासत पर गर्व करते हुए आपको भारत का नव प्रभात लिखना है।

भारत के उत्कर्ष का साक्षी विकास की ऊँचाई पर जाना है

ये भव्य राम मंदिर साक्षी बनेगा- भारत के उत्कर्ष का, भारत के उदय का। ये भव्य राम मंदिर साक्षी बनेगा- भव्य भारत के अभ्युदय का, विकसित भारत का। शताब्दियों की प्रतीक्षा के बाद हम यहां पहुंचे हैं। हम सब ने इस युग का, इस कालखंड का इंतजार किया है। अब हम रुकेंगे नहीं। हम विकास की ऊंचाई पर जाकर ही रहेंगे।

मंदिर निर्माण में संपूर्ण भारत का है योगदान

श्रीराम जन्मभूमि तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट के महासचिव श्री चम्पतराय ने समारोह में बताया कि श्रीराम मंदिर के निर्माण के लिए देश के भिन्न-भिन्न स्थानों से सामग्री जुटाई गई। छत्तीसगढ़ से अनाज, चिउड़ा, सोना-चांदी, फल, मेवे वस्त्र आए हैं। जोधपुर के संत-महात्मा छह क्विंटल घी बैलगाड़ी पर लादकर लाए। इसके अलावा देश के अन्य भागों से भी घी प्राप्त हुआ है। मंदिर के निर्माण के प्रारंभ में जमीन के अंदर मजबूती देने के लिए जिस गिट्टी का इस्तेमाल हुआ, वह मध्य प्रदेश के छत्तरपुर से आई है। रायबरेली, ऊंचाहार से राख आयी है। ग्रेनाइट तेलंगाना, कर्नाटक से आया है। मंदिर का पत्थर राजस्थान के भरतपुर जिले का है। सफेद रंग का मार्बल राजस्थान के मकराना से लाकर लगाया गया है। मंदिर के दरवाजों की लकड़ी महाराष्ट्र के बल्लारशाह की है। मुंबई के एक हीरा व्यापारी की ओर से मंदिर में लकड़ी के दरवाजों पर सोना चढ़ाया गया है। भगवान श्रीराम की मूर्ति जिस पत्थर से बनी है, वह कर्नाटक का है। यह मूर्ति जिस कारीगर ने बनाई है वह मैसूर के अरुण योगीराज हैं, जिनकी आयु 41 साल है। मंदिर के सामने दो हाथी, दो गज, सिंह, हनुमान जी, गरुड़ की मूर्ति जयपुर के मूर्तिकार सत्यनारायण पांडे ने बनायी है। मंदिर में लकड़ी के दरवाजों की नक्काशी का काम हैदराबाद के अनुराधा टिम्बर ने किया है और उनके सभी कारीगर तमिलनाडु के कन्याकुमारी के रहने वाले हैं। मार्बल के काम में राणा मार्बल, धूत, नकोड़ा और रमजान भाई का सर्वाधिक योगदान रहा है। भगवान के वस्त्र दिल्ली के एक नवयुवक मनीष त्रिपाठी ने अपने हाथ से यहीं पर बैठकर तैयार किए हैं। प्रभु श्रीराम के आभूषण लखनऊ की एक कंपनी ने जयपुर से बनवाकर यहां भेंट स्वरूप दिए हैं। जटायु का निर्माण भी परंपरागत मूर्ति निर्माण करने वाले रामवण सुथार परिवार ने किया है। प्रभु श्रीराम का मंदिर अपने आप में अनोखा है। ■

श्रीराम जन्मभूमि आन्दोलन और हिन्दू स्वाभिमान

6 दिसम्बर 1992 मील का पत्थर

स्वांतरंजन जी

लेखक प्रश्न उठाते हैं कि क्या अयोध्या में कोई खाली जगह नहीं था जिस पर बाबर की ओर से मस्जिद बनाई जाती? हिंदू समाज को अपमानित करने के लिए ही मंदिर तोड़कर मस्जिद बनाई गई। स्वाधीनता के बाद गुलामी के सभी प्रतीकों को हटाया जाना था, परन्तु ऐसा नहीं हुआ। 6 दिसम्बर को हिंदू समाज ने श्रीराम-जन्मभूमि पर खड़े अपमान के चिन्ह को हटा दिया। यह हिंदू समाज के स्वाभिमान की आंधी थी।

आज जब श्रीराम जन्मभूमि पर भव्य मन्दिर बन गया है तब हमें पीछे मुड़कर राम मन्दिर निर्माण के निहितार्थों पर भी विचार करने की आवश्यकता है।

महमूद गजनी का आक्रमण जब सोमनाथ मंदिर पर हुआ तो वह मन्दिर लूटने के लिये ही नहीं हुआ था बल्कि उसने मूर्तियों को भग्न किया और मन्दिर को भी ध्वस्त किया था। भारत के लिये यह एक अलग ही अनुभव था क्योंकि भारत में युद्ध एक सेना से दूसरी सेना के बीच होता था। किसान, मजदूर, व्यापारी अन्य समाज युद्ध के निशाने पर नहीं रहते थे। आस्था के केन्द्र मन्दिर आदि को भी कोई क्षति नहीं होती थी। लेकिन महमूद गजनी तो मन्दिर को लूटने ओर मूर्तियों को अपवित्र करके मन्दिर ध्वस्त करने के इरादे से ही आया था । इस प्रकार का मन्दिरों को तोड़ने का तथा समाज के ऊपर अत्याचार का एक अलग अनुभव हिन्दू समाज के ध्यान में आया।

इसी प्रकार बाबर के आक्रमण के समय भी उसकी सेना ने अनेक मंदिर ध्वस्त किये। बाबर के सेनापति मीर बांकी (1528) ने अयोध्या में विक्रमादित्य द्वारा राम जन्मभूमि पर बनवाये मन्दिर को ध्वस्त कर उसी के मलबे से मस्जिद बनवाने का प्रयत्न किया था। क्या अयोध्या में कोई खाली स्थान नहीं था जिस पर वह मस्जिद बनवाता ? लेकिन जान-बूझकर हिन्दू समाज को अपमानित करने के लिये राम जन्मभूमि पर ही मस्जिद बनवाने का उसने प्रयत्न किया। इसी प्रकार औरंगजेब ने भी काशी विश्वनाथ मंदिर और श्रीकृष्ण जन्मभूमि मंदिर, मथुरा में मन्दिर तोड़कर मस्जिद बनवायी। प्रश्न उठता है कि क्या इन दोनों स्थानों पर कोई खाली भूमि नहीं थी? यहाँ भी हिन्दू समाज को अपमानित करने तथा उसका स्वाभिमान नष्ट कर देने का ही उसका इरादा दिखाई देता है।

1947 में जब भारत स्वतंत्र हुआ तो उसके बाद चौराहों

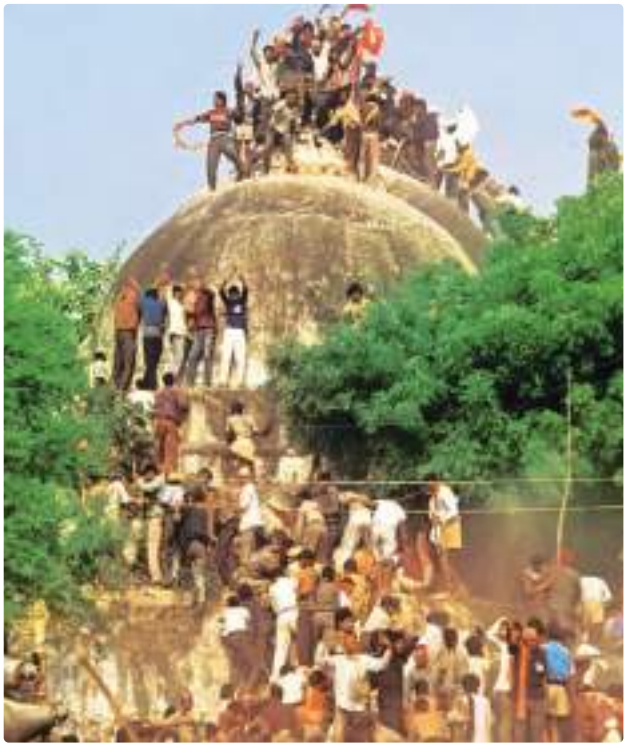

भारत में युद्ध एक सेना से दूसरी सेना के बीच होता था। किसान, मजदूर व्यापारी अन्य समाज युद्ध के निशाने पर नहीं रहते थे। आस्था के केन्द्र मन्दिर आदि को भी कोई क्षति नहीं होती थी। लेकिन महमूद गजनी तो मन्दिर को लूटने ओर मूर्तियों को अपवित्र करके मन्दिर ध्वस्त करने के इरादे से ही आया था । इस प्रकार का मन्दिरों को तोड़ने का तथा समाज के ऊपर अत्याचार का यह नया अनुभव था।

पर लगे जार्ज पंचम और इंग्लैण्ड की रानी विक्टोरिया के पुतले चौराहों से हटा दिये गये क्योंकि वे गुलामी के प्रतीक माने गये थे और उनको देखकर समाज को किसी प्रकार का हीनता बोध ना हो इसलिये वे हटा दिये गये थे।

इसी प्रकार 6 दिसम्बर, 1992 को हिन्दू समाज ने राम जन्मभूमि पर खड़े अपमान के चिन्ह को हटा दिया था। क्योंकि हर क्षण वह हमारे अन्तर्मन को कचोटता था।

राम जन्मभूमि पर मन्दिर बनाने के लिये 76 बार संघर्ष हो चुके थे। 77वां संघर्ष 1949 से शुरू हुआ और 1984 में जब श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति यज्ञ समिति का गठन हुआ उसके बाद आन्दोलन में तीव्रता आई। 1984 से पहले हिन्दू समाज अयोध्या में दर्शन, पूजन करने के लिये हनुमानगढ़ी, कनक भवन आदि मन्दिरों में ही प्रमुख रूप से दर्शन करने जाता था। अयोध्या में कई मठ, अखाड़े और छावनियाँ हैं उनमें अनेकों साधू, संत, महन्त रहते है जिनका दर्शन और सत्संग करने भक्तगण वहाँ जाते थे।

सभी मन्दिरों में श्री रामनवमी का उत्सव और पंचकोसी परिक्रमा भी बड़े धूमधाम से होती थी लेकिन समाज को बहुत जानकारी न होने के कारण से बहुत कम लोग ही राम जन्मभूमि स्थान पर दर्शन के लिये जाते थे। राम जन्मभूमि स्थान पर बाबरी ढाँचे के बाहर एक चबूतरे पर भगवान श्रीराम के चित्र सजाकर साधुगण अखण्ड राम धुन करते रहते थे। खण्डहरनुमा ढाँचे के भीतर दरवाजे में बन्द श्रीरामलला के विग्रह को देखकर वे खिन्न मन से वापस चले जाते थे। हिन्दू समाज ने इस स्थिति को एक प्रकार से नियति ही मान लिया था।

आन्दोलन जब प्रारम्भ हुआ तब धीरे धीरे लोगों को यह बात पता चलने लगी कि राम ताले में बन्द है। राम जानकी रथयात्रा के समय अयोध्या में माँ सरयू का जल हाथ में लेकर हजारों लोगों ने प्रतिज्ञा की –

कोटि-कोटि हिन्दुजन का हम ज्वार उठाकर मानेंगे।
सौगन्ध राम की खाते हैं हम मन्दिर वहीं बनायेंगे।।

श्रीराम जन्मभूमि आन्दोलन के द्वारा हिन्दू समाज के जागरण के तीन बड़े अभियान चलाये गये।

1.गाँव-गाँव में श्रीराम शिला पूजन

2.श्रीराम ज्योति से दीपावली पर घर-घर में दीपों का प्रज्ज्वलन

3.श्रीराम पादुका पूजन

इन तीनों अभियानों के द्वारा गाँव-गाँव में श्रीराम जन्मभूमि पर गुलामी के प्रतीक बाबरी ढाँचे की वास्तविकता पता चलने पर हिन्दू समाज का जागरण होने लगा। जाति, वर्ग, भाषा, प्रान्त, पंथ से ऊपर उठकर हम हिन्दू है तथा श्रीराम जन्मभूमि पर मन्दिर को तोड़कर एक बाबरी ढाँचा खड़ा है यह अन्यायपूर्ण स्थिति हिन्दू समाज को चुभने वाली तथा पीड़ादायक थी।

यही श्रीराम जन्मभूमि आन्दोलन की सफलता और सार्थकता कही जायेगी जिसके द्वारा सुप्त और असंगठित हिन्दू समाज जागृत होकर उठ खड़ा हुआ और आज सभी क्षेत्रों में सफलता के झंडे गाड़ रहा है।

जब पहली कारसेवा का आह्वान 30 अक्टूबर, 1990 के लिये हुआ उस समय उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री मुलायम सिंह यादव थे। मुलायम सरकार ने यह तय किया कि कार सेवा नहीं होने देना है। इसलिये मुलायम सिंह ने बड़े अभिमान के साथ कहा कि मैं ऐसी चाक-चौबन्द व्यवस्था करुंगा कि परिन्दा भी पर नहीं मार सकता। इस घोषणा को हिन्दू समाज ने एक चुनौती के रूप में लिया और 30 अक्टूबर, 1990 को कार सेवा करते हुए बाबरी ढाँचे पर भगवा ध्वज फहरा दिया। हिन्दू समाज का सुप्त स्वाभिमान जागृत हो चुका था।

जाति, वर्ग, भाषा, प्रान्त, पंथ से ऊपर उठकर हम हिन्दू हैं तथा श्रीराम जन्मभूमि पर मन्दिर को तोड़कर एक बाबरी ढाँचा खड़ा है यह अन्यायपूर्ण स्थिति हिन्दू समाज को चुभने वाली तथा पीड़ादायक थी।

दूसरी कार सेवा करने का आह्वान जब 1992 में श्रीराम जन्मभूमि न्यास ने किया उस समय यह नारा लगाते हुए कि "बच्चा बच्चा राम का, जन्मभूमि के काम का" हिन्दू समाज फिर एक बार अयोध्या की ओर चल पड़ा। इस बार हिन्दू समाज के मन में इतना आक्रोश था कि गुलामी के प्रतीक बाबरी ढाँचे को कार सेवकों ने पाँच घंटों में ही धराशायी कर दिया। अब वहाँ केवल तिरपाल से बने अस्थायी राम मन्दिर में राम लला विराजित थे। मन को चुभने वाला, पीड़ा देने वाला गुलामी का चिन्ह बाबरी ढांचा हमेशा-हमेशा के लिये समाप्त हो गया था।

यह हिन्दू समाज के स्वाभिमान की आँधी ही थी जिसने असंभव कार्य को भी संभव बना दिया। अब केवल भव्य राममंदिर बनना ही शेष था जिसके लिये हिन्दू समाज ने प्रतिज्ञा की थी। यही श्रीराम जन्मभूमि आन्दोलन की सफलता और सार्थकता कही जायेगी जिसके द्वारा सुप्त और असंगठित हिन्दू समाज जागृत होकर उठ खड़ा हुआ और आज सभी क्षेत्रों में सफलता के झंडे गाड़ रहा है।

(लेखक संघ के अ.भा.बौद्धिक शिक्षण प्रमुख हैं)

श्री जे. नन्दकुमार से बातचीत.....

अयोध्या में रामलला प्राण प्रतिष्ठा भारत के विश्वगुरु बनने की शुरुआत

श्री रामजन्मभूमि मंदिर प्राण प्रतिष्ठा से दो दिन पूर्व वैचारिक-संगठन प्रज्ञा प्रवाह के अ.भा.संयोजक श्री जे.नन्दकुमार अपनी पुस्तक 'राष्ट्रीय स्वत्व के लिए संघर्ष' का जयपुर में विमोचन के अवसर पर पधारे थे। इस अवसर पर पाथेय कण संपादक रामस्वरूप अग्रवाल द्वारा उनसे की गई बातचीत के कुछ अंश

■ **आज जब श्री रामजन्मभूमि में भगवान श्री राम की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा होने जा रही है तब इस हेतु किये गए लंबे संघर्ष को वर्तमान में आप कैसे देखते हैं ?**

▶ देखिये, रामजन्मभूमि के लिए जो 496 वर्षों तक संघर्ष चला, वह अपने स्वत्व के लिए था। उसके जैसा संघर्ष पूरे विश्व में कहीं चला हो, यह मेरी जानकारी में नहीं है। 1947 में जो स्वाधीनता मिली वह राजनैतिक थी। उसके साथ ही सांस्कृतिक स्वतंत्रता भी मिलनी चाहिए थी। पूर्ण स्वातंत्र्य यानि अपने 'स्व' के आधार पर जब आपको अपने तंत्र को लागू करने का अवसर मिले। न केवल राजनीति में, बल्कि शिक्षा, संस्कृति सहित सभी क्षेत्रों में उसका प्रकटीकरण होना चाहिए।

यदि किसी विदेशी आक्रांता ने अपनी विजय का स्मारक यानि हमारी पराजय का स्मारक बना दिया तो उसे उखाड़ फेंकने की घटना विश्व के इतिहास में दिखाई देती हैं। प्रसिद्ध ब्रिटिश विचारक एवं इतिहासकार अर्नोल्ड टॉयन्बी ने एक व्याख्यानमाला में भाग लेते समय इस विषय पर ऐसा स्पष्ट रूप से कहा था। उन्होंने पोलैंड व रूस के बीच हुए संघर्ष का उदाहरण भी दिया। 19 वीं सदी में रूस ने पोलैंड पर जीत हासिल करने के बाद वहां बने पॉलिस-रोमन कैथोलिक चर्च को ध्वस्त कर उसी स्थान पर ऑर्थोडॉक्स चर्च बना दिया था। दोनों ही चर्च ईसा मसीह के लिए ही थे। परंतु यह केवल धार्मिक आक्रमण नहीं था, राजनैतिक आक्रमण था। वह रूस की जीत और पोलैंड की पराजय का प्रतीक था। इसलिए प्रथम विश्व युद्ध के बाद जब पोलैंड स्वतंत्र हो गया तब उसने रूस के बनाए चर्च को ध्वस्त कर फिर से वहां पोलिस चर्च बना दिया।

किसी भी देश में स्वतंत्रता मिलने के बाद पराजय के स्मारकों को पूरी तरह हटाकर वहां अपने स्मारक फिर से बनाने ही चाहिए। भारत में यह कार्य सोमनाथ मंदिर पुनर्निर्माण से प्रारंभ हुआ था। वहां राजेन्द्र प्रसाद, सरदार पटेल, केएम मुंशी जैसे दिग्गजों ने इसे सत्य करके दिखाया। यह अयोध्या, मथुरा, काशी सब जगह होना चाहिए था।

इसी व्याख्यानमाला में अर्नोल्ड टॉयन्बी ने भारतीयों पर व्यंग्य करते हुए कहा कि यहां आक्रांताओं ने तुर्क शैली में जो मस्जिद के रूप में विजय स्मारक बनाया उसे सहन करने वाले भारतीय किस प्रकार के लोग हैं?

अत: किसी भी देश में स्वतंत्रता मिलने के बाद पराजय के स्मारकों को पूरी तरह हटाकर वहां अपने स्मारक फिर से बनाने ही चाहिए। भारत में यह कार्य सोमनाथ मंदिर पुनर्निर्माण से प्रारंभ हुआ था। वहां राजेन्द्र प्रसाद, सरदार पटेल, के एम मुंशी जैसे दिग्गजों ने इसे सत्य करके दिखाया। यह अयोध्या, मथुरा, काशी सब जगह होना चाहिए था। लेकिन उन दिनों जिनके हाथ में राजनैतिक सत्ता थी, वे इससे सहमत नहीं थे।

रामजन्मभूमि में प्रकट हुई रामलला की मूर्ति को हटाने के लिए तत्कालीन कलेक्टर केके नायर को जवाहर लाल नेहरू और गोविंद वल्लभ पंत ने एक प्रकार से चेतावनी दे दी थी। लेकिन नायर साहब तैयार नहीं हुए। यह रामजन्मभूमि में मंदिर पुनर्निर्माण के लिए संघर्ष की शुरुआत थी। संघर्ष जारी रहा। इसमें बाधा डालने के लिए कांग्रेस सरकार ने हर कोशिश की। लेकिन हिंदुओं ने पहले संन्यासियों के नेतृत्व में और फिर, विश्व हिंदू परिषद के नेतृत्व में विश्व व्यापी संघर्ष किया। यह संघर्ष विश्व इतिहास में अद्वितीय था। यह हमारे लिए सामूहिक

अपमान को सामूहिक आनन्द में बदलने का अवसर है। मैं इसे इस प्रकार से देखता हूं कि इस अमृत काल में अयोध्या भारत को पुन: विश्व गुरु बनने का द्वार सिद्ध होगा।

■ **कहा जाता है कि 1947 में राजनैतिक स्वतंत्रता मिली थी अब सांस्कृतिक स्वतंत्रता मिल रही है। आपका क्या कहना है?**

▶ यह सही है कि अपने ऐसे स्थानों को मुक्त कराना सांस्कृतिक स्वतंत्रता ही है। इसमें कोई कट्टरवाद नहीं है। यह नेशनलिज्म (राष्ट्रीयता) है। अयोध्या में जो हो रहा है वह स्वत्व की स्थापना ही है।

■ **ये जो प्राण प्रतिष्ठा हो रही है, भविष्य में भारत के समाज और भारत राष्ट्र पर इसका क्या फर्क पड़ेगा?**

▶ अयोध्या में हो रही प्राण प्रतिष्ठा का असर हमें सब तरह से देखने को मिल रहा है। यह मंदिर राष्ट्र मंदिर है। इससे देश की अर्थव्यवस्था भी मजबूत होगी। काशी विश्वनाथ का कॉरिडोर बनने के बाद वहां की अर्थव्यवस्था में बहुत उछाल आया। यहां भी हमें यह तथ्य चकित करेगा कि पहले से ही 100 के लगभग फाइव स्टार होटल बनाने के लिए आवेदन आ चुके हैं। सरकार और प्राइवेट पर्यटन की तरफ से करोड़ों रुपयों का निवेश वहां आ रहा है। इससे हमारी अर्थव्यवस्था पर बड़ा प्रभाव पड़ने वाला है।

दूसरा, समाज जागरण और सामाजिक समरसता से संबंधित प्रभाव होगा। समाज में आत्मविश्वास जगाने का सबसे बड़ा अवसर हमारे सामने आया है। इसके साथ शिक्षा व अन्य सभी क्षेत्रों में तथा समाज में परिवर्तन का समय आया है। यह 'स्व' की स्थापना का समय है। यह भारत के विश्व गुरु पद पर आसीन होने की एक प्रकार से शुरुआत है। ■

अविस्मरणीय क्षण -जीवन सार्थक हो गया

लेखक उन लोगों में हैं जिन्होंने 22 जनवरी को प्राण-प्रतिष्ठा के अवसर पर अयोध्या पहुँचकर रामलला की मनमोहक छवि के प्रथम-दर्शन किए। पढ़िए उन्हीं के शब्दों में उस अलौकिक क्षण का अनुभव।

पौष शुक्ल द्वादशी (22 जनवरी, 2024) संवत् 2080 के शुभ दिन अयोध्या में रामलला प्राण प्रतिष्ठा समारोह के शुभ अवसर पर अचानक मौसम बड़ा सुहावना हो गया। जहाँ 22 जनवरी से पहले कोहरा, शीत लहर थी, किन्तु 22 जनवरी को शीत लहर बंद हो गई थी तथा विराट जनसमूह गुनगुनी धूप का आनंद ले रहा था। भारतीय समयानुसार दोपहर लगभग 12:45 बजे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने रामलला की आंखों से परदे के भीतर मंत्रोच्चार के साथ पट्टी हटाई और परदे को हटते ही रामलला के दर्शन एलइडी (टीवी) के सेट पर हुए तो संपूर्ण जनसमूह के नेत्रों में खुशी के आंसू छलक पड़े। कई संतों की आंखों से अविरल अश्रुपात होने लगा। उसी समय ढोल, नगाड़े, तुरही, शंख, बड़े जोर से बज उठे और आकाश में हेलीकॉप्टर द्वारा पुष्प वर्षा होने लगी, मानो आकाश से समस्त देवगण पुष्पवर्षा कर रहे हों।

जुगल किशोर अग्रवाल

शंखनाद के साथ सभी प्रतिनिधि झूम उठे तथा नृत्य करने लगे। 'जय श्रीराम' के नारों, उद्घोषों, जयकारों से सम्पूर्ण वायुमण्डल गुंजायमान हो गया। वातावरण राममय हो गया। प्रसन्नता, उल्लास का परिदृश्य देखते ही बनता था। सभी रामभक्त भावविभोर हो गए। उस समय के पल अवर्णनीय हैं।

500 वर्षों के पश्चात् श्रीराम अपनी अयोध्या में पधारे थे। उस समय एक भजन गाया गया- 'बजाओ ढोल स्वागत में, अपने घर राम आये हैं।'' वे क्षण अविस्मरणीय रहेंगे। हमारा जीवन सार्थक हो गया। जो अकल्पनीय था, वह साकार हो गया, ऐसी प्रसन्नता जीवन में पहले कभी नहीं हुई। मन भावों से भर गया। उस भक्ति के क्षणों में साध्वी ऋतम्भरा तथा उमा भारती का परस्पर आलिंगन करना तथा वाणी अवरुद्ध थी। नेत्रों से अश्रुपात हो रहा था। सभी संत तथा अन्य कलाकार, कथावाचक आदि भाव विह्वल हो गए, जैसे उन्हें कोई बहुमूल्य मणि मिल गई हो। 'न भूतो न भविष्यति'' ऐसा वायुमण्डल था।

नरेन्द्र भाई मोदी ने कहा- मुझे लग रहा है कि अपने आस-पास देवगण आ गए हैं और रामलला की स्तुति कर रहे हैं। इस पवित्र दिन से कालचक्र बदल रहा है। युग परिवर्तन की ओर भारत आगे बढ़ रहा है। अब विश्व के लिए भी सभी ओर ''सर्वे भवन्तु सुखिन:'' का समय आ गया है। परिवर्तन का यही समय है और सही समय है। मंत्र मुग्ध होकर भाव विह्वल था जनसमूह। परम पूजनीय सरसंघचालक जी ने कहा कि अब रामराज्य को साकार करने का समय आ गया है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम से प्रेरणा लेकर उनके सार्थक जीवन को सामने रखकर अपने जीवन में शुभ परिवर्तन लाएं। हमारा देश इस समय आगे बढ़ेगा।

(विश्व हिन्दू परिषद के पूर्व केन्द्रीय मंत्री, वर्तमान में प्रबंधक समिति सदस्य)

राम मंदिर: भारत के 'स्व' का पुनरुत्थान

डॉ.नारायण लाल गुप्ता

श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन केवल एक विदेशी आक्रांता द्वारा तोड़े गए मंदिर को पुनः भव्य स्वरूप में खड़ा करने तक ही सीमित नहीं है। यह राजनीतिक स्वतंत्रता से वास्तविक 'स्व-तंत्रता' की ओर बढ़ते पद चिन्हों का सूचक है। यह भारत के 'स्व' का उद्घोष करता है। राम मंदिर का निर्माण भारत के मूल विचार की ओर लौटने का मार्ग दिखाता है।

श्री राम जन्मभूमि के लिए जो लंबा संघर्ष भारतीय समाज ने किया वह इतिहास का एक अप्रतिम अध्याय है। समाज के द्वारा किया गया आंदोलन केवल एक विदेशी आक्रांता द्वारा तोड़े गए मंदिर को पुन: भव्य स्वरूप में खड़ा करने तक ही सीमित नहीं है बल्कि इसके दूरगामी सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक और आध्यात्मिक महत्व हैं । 1947 में हमें राजनीतिक स्वाधीनता मिली, पर वैचारिक और सांस्कृतिक स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए हमारा संघर्ष निरंतर जारी रहा। श्री राम जन्मभूमि की मुक्ति और उस पर भव्य मंदिर का निर्माण राजनीतिक स्वाधीनता से वास्तविक स्व-तंत्रता की ओर बढ़ते हुए दृढ़ पद-चिन्हों का सूचक है। यह बदलते भारत का प्रतीक है जो राम की, भारत के स्व की, सर्वव्यापकता और सार्वकालिकता का उद्घोष करता है।

भारत की सामूहिक चेतना का पुनर्जागरण

पिछले हजार बारह सौ साल से भारत विदेशी आक्रांताओं से संघर्षरत रहा। यूनान, मिस्र, रोम जैसी संस्कृतियां मजहबी आक्रमणों की आंधी में अपने स्वत्व को नहीं बचा पाई पर भारत बना रहा, खड़ा रहा, लड़ता रहा। आततायियों ने केवल आर्थिक और राजनीतिक लाभ के लिए आक्रमण नहीं किए वरन् भारत की मूल चेतना पर, सभ्यतागत विश्वासों पर और उसकी सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान पर निरंतर क्रूरतापूर्वक हमले किए, भारत के स्व को कुचलने और दबाने का हरसंभव प्रयास किया।

बाबर का राज्य बहुत बड़ा था, वह अपनी आस्था के अनुसार कहीं भी मस्जिद बना सकता था लेकिन श्रीरामजन्मभूमि मंदिर को तोड़ने का उद्देश्य भारत की सामूहिक चेतना को नष्ट-भ्रष्ट करने; भारतीय समाज के स्वाभिमान और विश्वास को कुचलने के लिए था। भारत की लोक चेतना से राम-तत्व को तिरोहित करने के संगठित प्रयास उसके बाद से निरंतर चलते रहे। औपनिवेशिक काल में और उसके बाद भी बौद्धिक रूप से भारत को राम से विमुख करने के षड्यंत्र होते रहे लेकिन भारत के मूल समाज के डीएनए से राम को अलग कर पाना इतना सरल कहां था ? मजहबी-औपनिवेशिक-वामपंथी षडयंत्रों के समांतर समाज में स्वाभिमान जागरण के प्रयास भी निरंतर चलते रहे। उसी के परिणामस्वरुप स्वतंत्रता आंदोलन का मूल मंत्र स्वधर्म, स्वभाषा और स्वदेशी बना। स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों के मन में एक ऐसे भारत का सात्विक सपना था जिसका समग्र तंत्र स्व-प्रेरित और स्व-आधारित होना था।

स्वाधीनता आंदोलन में जिस आदर्श का सबसे अधिक शब्द-प्रयोग हुआ, वह था राम-राज्य। दुर्भाग्य से स्वतंत्रता आंदोलन की प्रेरणा रहे, स्वतंत्रता सेनानियों का सपना रहे, राम राज्य के लक्ष्य को बाद के वर्षों में न केवल भुला दिया गया बल्कि राम को न्यायालय में शपथ पूर्वक काल्पनिक बताकर भारत की स्मृति और सामूहिक चेतना से मिटाने का प्रयास भी किया गया। भारत की राजनीतिक-सांस्कृतिक पहचान को स्वाधीनता के बाद विकृत करने का प्रयास किया गया; ऐसी विकृति जिसमें हिंदू या हिंदुत्व की बात करना एक सांप्रदायिक और रूढ़िवादी सोच का प्रतीक बना दिया गया। जिस स्वत्व के आधार पर भारत विश्व गुरु रहा, सोने की चिड़िया रहा, दुनिया को दिशा दिखाई उसे भुलाने या उस पर शर्म करने का वातावरण बनाया गया । पिछले 500 वर्षों से राम मंदिर निर्माण का संघर्ष केवल अयोध्या की पहचान या जमीन की लड़ाई भर ही नहीं थी, ना ही यह लड़ाई किसी सत्ता या वर्ग या मजहब से थी। भारत को अपनी आत्मा से साक्षात्कार करने की छटपटाहट थी, अपने स्व को पुनर्स्थापित करने की व्याकुलता थी। भारत क्या है; भारत की पहचान क्या है; हम कौन हैं; हमारी अस्मिता क्या है, इन सब प्रश्नों के उत्तर पाने की तड़प थी। राम मंदिर का विषय राजनीतिक और कानूनी दांव-पेंच का नहीं, बल्कि यह भारतीय सभ्यता की रक्षा, सांस्कृतिक विरासत के प्रतीक और भारत के वास्तविक पहचान से संबंधित था।

भारत की पहचान: सबके राम

महर्षि अरविंद ने स्वाधीनता प्राप्ति के समय राष्ट्र के नाम संदेश

संविधान के भाग-3 के आरंभ में दिया गया चित्र : श्रीराम, सीता और लक्ष्मण लंका विजय के पश्चात विमान से लौटते हुए।

में कहा था, ''भारत की स्वतंत्रता अधूरी है, अभी केवल राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त हुई है, सांस्कृतिक स्वतंत्रता के लिए एक और संघर्ष करना पड़ेगा। इस स्वतंत्रता आंदोलन का मंत्र 'वंदेमातरम' था, उस स्वतंत्रता आंदोलन का भी एक मंत्र होगा जो अभी हमें स्पष्ट सुनाई नहीं पड़ रहा है।'' अशोक सिंघल जी कहा करते थे, वह मंत्र 'जय श्रीराम' ही है ।

भारत की पहचान, उसका इतिहास, वर्तमान और भविष्य राम के बिना अधूरे हैं। राम किसी एक पंथ के नहीं हैं, वे भारतीय सभ्यता और संस्कृति के आधार हैं। भारत के लिए राम केवल भगवान नहीं बल्कि संपूर्ण रूप से भारतीय जीवन दर्शन, राष्ट्रीय मूल्यों, सामाजिक चिंतन और मर्यादा के प्रतीक है। भारत की सुबह 'जय राम जी' या 'राम-राम' से प्रारंभ होती है; वहीं जीवन का सूर्य जब अस्त होता है तो भी 'राम नाम सत्य है' का ही उच्चारण सुनाई देता है। राम हमारे राष्ट्रीय नायक हैं। चारों दिशाओं में राम के नाम का प्रताप है। देश के किसी भी हिस्से में चले जाएं, लोग राम के नाम से पहचाने जाते हैं-दक्षिण में रामनाथन, रामचंद्रन, रामप्पा, रामास्वामी से लेकर उत्तर में रामलाल, रामसिंह, रामप्रसाद, रामनाथ तक सब राम से जुड़े रहना चाहते हैं। राम कथा हिंदी और संस्कृत में ही नहीं बल्कि देश की हर बोली और भाषा में लिखी, छपी, सुनी और सुनाई जाती रही है । राम, नानक के दौर में भी चैतन्य होते हैं और रहीम के छंदों में भी। राम पूरे भारत को जोड़ते हैं, वे अयोध्या से लेकर धनुषकोडी(तमिलनाडु) तक भारत की चेतना पर छाए हुए हैं। भारत के लिये राम के बिना न स्वस्थ समाज की परिकल्पना संभव है ना ही लोक कल्याणकारी राज्य व्यवस्था की।

महर्षि अरविंद ने स्वाधीनता प्राप्ति के समय राष्ट्र के नाम संदेश में कहा था, ''भारत की स्वतंत्रता अधूरी है, अभी केवल राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त हुई है, सांस्कृतिक स्वतंत्रता के लिए एक और संघर्ष करना पड़ेगा। इस स्वतंत्रता आंदोलन का मंत्र 'वंदेमातरम' था, उस स्वतंत्रता आंदोलन का भी एक मंत्र होगा जो अभी हमें स्पष्ट सुनाई नहीं पड़ रहा है।'' अशोक सिंघल जी कहा करते थे, वह मंत्र 'जय श्री राम' ही है ।

राम राज्य का आदर्श

पिछले हजार वर्षों के संघर्ष में हमारी समाज व्यवस्था नकारात्मक रूप से प्रभावित हुई। भोगवादी प्रवृत्ति ने हमारी त्याग आधारित गौरवमयी राजनीति की उत्कृष्ट संकल्पना को भुलाया। वचन निभाने और पितृ आज्ञा के पालन के लिए राज्य छोड़ वन गमन करने वाले राम के उदाहरण कम हुए, वहीं सत्ता के भोग के लिए पिता को जेल में डालने और सगे भाई को मारने, अंग्रेजों द्वारा छल-बल से शासन करने जैसे उदाहरणों ने समाज के मानस को दूषित किया। वस्तुत: भारत की परम्परा के आदर्श रामराज्य की संकल्पना राजनीतिक सत्ता के विपरीत एक ऐसे विशिष्ट राज्य की है जहां सभी विधिसम्मत मर्यादा में रहकर धर्म का पालन करते हैं। शासन और राजनीति की विविध पद्धतियों में राम-राज्य सर्वोत्तम विकल्प प्रस्तुत करता है। दुनिया के लगभग हर लोकतंत्र का लक्ष्य वही है जिसे रामराज्य की वैचारिकी प्रस्तुत करती है। रामराज्य समता मूलक, धर्माधिष्ठित और लोक मंगलकारी शासन को प्रस्तुत करता है। रामराज्य का प्रमुख अपने को सेवक समझता है उसका राज्य रावण की तरह पूंजीवादी नहीं। उसकी अयोध्या उद्दात जीवन मूल्यों का केंद्र है, सोने की लंका की तरह तानाशाही और शोषण का प्रतीक नहीं ।

राम राज्य में अर्थव्यवस्था बहुत सुदृढ थी। वहां व्यक्ति के विकास के लिए धनोपार्जन पर जोर तो है पर अर्थ पुरुषार्थ धर्माधिष्ठित हो, इसकी शर्त भी है। वहाँ कहा गया है कि जो धन गरीबों दुखियों और लाचारों पर खर्च नहीं होता है वह धन नष्ट हो जाता है। इसलिए रामराज्य में प्रजा के कल्याण और विकास पर विशेष ध्यान है। राम राज्य में जो भी नियम सामाजिक, आर्थिक और राज्य की अन्य व्यवस्थाओं के लिए बनाए जाते थे उनका पूर्णत: पालन होता था। कानून बनाने वाले और पालन करवाने वाले सब नैतिक आधार पर नियमों का पालन करते थे। संविधान निर्माताओं ने भी भगवान राम का चित्र, संविधान के भाग तीन जिसमें हमारे मौलिक अधिकार पर चर्चा है, पर रखना इसीलिए उपयुक्त समझा क्योंकि राम राज्य में सबसे अंतिम व्यक्ति तक मूल अधिकारों की गारंटी थी। राम स्वयं भी अपने राजधर्म और मानव धर्म से प्रतिबद्ध थे, यह 'रूल ऑफ लॉ' की सैद्धांतिक संकल्पना का प्रत्यक्ष प्रमाण है ।

भारत के 'स्व' की पुनर्स्थापना की ओर बढ़ते कदम

राम मंदिर का पुनर्निर्माण भारत की सांस्कृतिक संप्रभुता की पुनर्स्थापना है । कोई भी राष्ट्र अपनी खंडित सांस्कृतिक चेतना के साथ स्वाभिमान पूर्वक जीवित नहीं रह सकता, आगे नहीं बढ़ सकता । राम मंदिर का विरोध राष्ट्रीय चेतना को खंडित करने का प्रशिक्षण पाए हुए चेहरों का था, जिन्होंने भारत की आत्मा को, उसके आत्म सम्मान को, उसके विश्वास को और उसकी पहचान को कमजोर और धूमिल करने का प्रयास किया था। गंगा-जमुनी तहजीब के नाम पर अपनी पहचान को भुलाने, अपने स्वाभिमान और जीवन दर्शन से समझौता करने को धर्मनिरपेक्षता के रूप में मस्तिष्क में आरोपित करने का काम योजनाबद्ध रूप से वर्षों तक किया गया। पर अंतत: भारतीय मानस ने इसे अस्वीकृत कर अपनी सामूहिक चेतना के पुनर्जागरण का शंखनाद किया है। सभ्यता और संस्कृति के जिन आयामों को स्वाधीनता के बाद भारतीय शासन ने उपेक्षित रखा या दमित किया, राम मंदिर की स्थापना उनके पुनर्जीवित और प्राणवान होकर मुख्य धारा में लौटने की गंगोत्री है। रामलला का अपने जन्म स्थान पर लौटना तुष्टिकरण की राजनीति का अंत होने और जाति वर्ग से परे सर्वसमावेशी समाज की नींव मजबूत होने का संकेत है।

राम मंदिर का निर्माण भारत के मूल विचार की ओर लौटने का मार्ग दिखाता है जहां उपासना और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता है। जहां आध्यात्मिक प्रतिद्वंद्विता या आस्थागत प्रतिस्पर्धा का कोई स्थान नहीं है। राम मंदिर की स्थापना राम के उस संकल्प की ओर बढ़ने की भी घोषणा है जहां सोने की लंका भी अपनी जन्मभूमि के सामने तुच्छ है। जहां भूमि को माता रूप में माना जाता है और इसलिए उसे प्रणाम करने में, उसका जयघोष लगाने में, वंदेमातरम कहने में कोई संकोच नहीं होता ।

राम राज्य रामराज के आदर्शों के अनुरूप सुरक्षित, संपन्न, संप्रभु, कल्याणकारी और मूल्याधारित राज्य की संकल्पना है। विभिन्न राम कथाओं से हमें प्रजा के प्रति श्रीराम के जिन भावों और आचरण का दर्शन होता है वह हमारे आज के संवैधानिक मूल्यों के बहुत निकट है। रामराज्य की ओर बढ़ने का अर्थ भगवान राम के आदर्शों और संविधान की भावना के अनुरूप समाज की प्रत्येक संस्था की मर्यादाओं को स्थापित करते हुए युगानुकूल समाज जीवन की रचना करना है, इसके आधार पर ही भारत राष्ट्र मंदिर बनेगा। अमृत काल में राम मंदिर से राष्ट्र मंदिर तक जाने का मार्ग श्री राम के गुणों की प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में स्थापना है उसके अनुसार व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक जीवन की रचना है। सबको साथ लेकर चलता हुआ भारत राम राज्य की नई कथा लिखने की दिशा में बढ़ चला है।

(लेखक अ.भा.राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के राष्ट्रीय अतिरिक्त महामंत्री हैं)

संपादकीय शेष ...

आकाशवाणी से प्रसारित नहीं करने को कहा।

बहुत लोग मानते हैं कि नेहरू जी के कारण ही रामलला की प्राण प्रतिष्ठा में इतना समय लगा। 22 दिसम्बर, 1949 की रात अयोध्या के विवादित ढांचे के बीच वाले गुबंद में रामलला की मूर्ति प्राकट्य होने की सूचना पर गुस्साए जवाहर लाल नेहरू ने मूर्ति को तुरंत गुबंद से हटाने के निर्देश उत्तर प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री गोविन्द बल्लभ पंत को दिए थे। परन्तु फैजाबाद-अयोध्या के जिलाधिकारी केके नायर द्वारा ऐसा करने से इंकार कर देने पर नेहरू ने 14 मार्च, 1950 को नायर को पद मुक्त कराकर रिटायर करा दिया।

अनुभवी गांधीवादी दार्शनिक केजी मशरूवाला ने 1949 में साप्ताहिक पत्र 'हरिजन' में तब की स्थिति का वर्णन करते हुए बाबरी ढांचा ढहाए जाने की आशंका प्रकट की थी। एक अनुमान के अनुसार यदि नेहरू जी हस्तक्षेप न करते तो कोई 46-50 वर्ष पूर्व ही विवादित ढांचा ढह चुका होता। परंतु ऐसा न हो सका। अधिकांश राजनीतिक दलों ने बिखरे-असंगठित हिंदू समाज के प्रति उपेक्षा का भाव बनाए रखा। धीरे-धीरे हिंदू की बात करना सांप्रदायिकता तथा मुसलमान (या अल्पसंख्यक) हित की बात करना धर्म निरपेक्षता तथा डेमोक्रेटिक माना जाने लगा। जिस 'स्व' की स्थापना करने के लिए स्वतंत्रता सेनानियों ने संघर्ष किया वह 'स्व' का भाव धुंधलाने लगा। मंदिर की बात करने वाले दकियानूसी माने गए।

ऐसी परिस्थिति में हिंदू समाज में जागृति लाने की आवश्यकता थी। उसके मन में सुप्त या कहें कि राख आच्छादित अंगारे जैसी देश भक्ति को जगाने की आवश्यकता थी। समाज को संगठित कर संघर्ष करने की आवश्यकता थी। इस कार्य में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की गति बढ़ती गई।

संत-महात्माओं के नेतृत्व में श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति का कार्य विश्व हिन्दू परिषद ने अपने हाथ में लिया। संघ की लाखों स्वयंसेवकों की शक्ति इसके साथ लगी। सर्व हिंदू समाज उठ खड़ा हुआ और जो कार्य असंभव दिख रहा था, वह न्यायपूर्ण तरीके से पूरा हुआ। रामलला 500 वर्षों के पश्चात् अपने नव निर्मित भव्य भवन (मंदिर) में पधारे। देश ही नहीं विश्व भर के हिंदुओं के लिए यह क्षण विजयी भाव जगाने वाला था। अब रूकना नहीं है। रामराज्य की कल्पना साकार होती दिखाई दे रही है। सरसंघचालक डॉ. भागवत के शब्दों में कहें तो रामलला के लौटने के साथ ही भारत का 'स्व' लौटकर आया है। अब शीघ्र ही सम्पूर्ण विश्व को त्रासदी से राहत देने वाला एक नया भारत खड़ा होकर रहेगा।

-रामस्वरूप अग्रवाल

जोधपुर में लिखी गई भागीदारी की पटकथा

महेंद्र सिंहल

सरसंघचालक बाला साहब देवरस जी ने कहा था-

''इस अभियान को हाथ में लिया तो लौटने के रास्ते नहीं है, फिर सफलता मिलनी ही चाहिए।''

वैसे तो अयोध्या में राम जन्मभूमि को लेकर 1528 ई. से ही सतत संघर्ष चल रहा है। इतिहास की पुस्तकों में 1984 से पूर्व तक 76 लड़ाइयों का वर्णन है। 1984 से राम जन्मभूमि मुक्ति आंदोलन की लड़ाई संतों के नेतृत्व में विश्व हिंदू परिषद द्वारा लड़ी गई। हालांकि इस संबंध में अशोक जी सिंहल का कहना था कि विश्व हिंदू परिषद अकेले कुछ नहीं है, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शक्ति ही विश्व हिंदू परिषद की शक्ति है। अगर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को निकाल दिया जाए तो शरीर में से प्राण निकल जाने पर जो होता है, वैसी अवस्था हमारी हो जाएगी। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का कार्य तो हिंदू संगठन का कार्य है, व्यक्ति निर्माण का कार्य है। संघ के स्वयंसेवक समाज जीवन में ही कार्य करते हैं और श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन में स्वयंसेवकों की यही भूमिका, यही आहुति रही है।

दाऊदयाल खन्ना का प्रस्ताव

राम जन्मभूमि मुक्ति आंदोलन में विश्व हिंदू परिषद की सहभागिता की पटकथा 1983 में लिखी गई। 23 मार्च, 1983 को उत्तर प्रदेश के मुजफ्फर नगर में एक हिंदू सम्मेलन हुआ था। वह संघ के स्वयंसेवकों ने आयोजित किया था। मंच पर संघ के तत्कालीन सह सरकार्यवाह माननीय रज्जू भैया के साथ कुछ समय तक देश के प्रधानमंत्री का पद संभाल चुके श्री गुलजारीलाल नंदा और उत्तर प्रदेश की कांग्रेस सरकार में मंत्री रह चुके श्री दाऊदयाल खन्ना मौजूद थे। सामने

अयोध्या में कारसेवा के लिए एकत्र हुए रामभक्त

मुजफ्फर जिले का समाज भारी संख्या में एकत्रित था। अभी तक विश्व हिंदू परिषद का कार्य कुछ प्रौढ़ों का ही कार्य था। मुजफ्फर नगर में उस समय अगर कोई एक कार्य था तो वह था राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का।

सम्मेलन में दाऊदयाल जी ने यह विचार प्रकट किया कि अयोध्या मथुरा और काशी के स्थानों को वापस लो। अब यह काम तो संघ का नहीं था लेकिन जो जन समुदाय वहां था वह तो स्वयंसेवकों का था या स्वयंसेवकों के द्वारा लाया गया हिंदू समाज था। दाऊदयाल जी ने जो प्रस्ताव रखा उससे उपस्थित समुदाय में उत्साह की लहर दौड़ गई। इसके पश्चात् अशोक जी सिंहल, दाऊदयाल जी से मिलने गए। उनकी बात सुनी और समझी। संघ के स्वयंसेवकों का इस अभियान को आगे बढ़ाने में यह पहला योगदान है।

संघर्ष का बीजारोपण

विधिवत रूप से संतों के नेतृत्व में यह लड़ाई लड़ी जाए इसके लिए 1984 में विश्व हिंदू परिषद द्वारा दिल्ली के विज्ञान भवन में प्रथम धर्म संसद आयोजित की गई जिसमें तीनों स्थान अयोध्या, मथुरा, काशी को मुक्ति दिलाने का प्रस्ताव पारित किया गया। यह निर्णय हिंदू समाज एवं संतों के द्वारा लड़ी जाने वाली 77वीं लड़ाई का बीजारोपण था जो कि सफल सिद्ध हुआ।

संघ की प्रत्यक्ष भागीदारी की पटकथा जोधपुर में लिखी गई

वैसे तो संघ के स्वयंसेवक प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से विश्व हिंदू परिषद के सभी अभियानों में भाग ले ही रहे थे। लेकिन

कार्य तो जागृत समाज ही करेगा

संघ की भूमिका भवन के खम्बे में लोहे के पंजर जैसी

डॉ.मनमोहन वैद्य
-सह सरकार्यवाह, रा.स्वं.संघ

श्रीराम जन्मभूमि की मुक्ति तथा श्रीरामलला मंदिर पुनर्निर्माण के लिए संत-महात्माओं के नेतृत्व में विश्व हिन्दू परिषद ने आंदोलन चलाया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने साथ दिया। देशभर में एक अभूतपूर्व जनजागरण हुआ। भारत के लाखों स्थानों पर कार्यक्रम हुए। करोड़ों लोगों की सहभागिता रही। सारा देश राममय होता दिखा।

यह सारा भारत की जनता ने, राम के भक्तों ने किया। इसमें संघ साथ था। संघ नहीं होता तो यह इतना व्यापक, सुचारू जन संपर्क और जनजागरण शायद नहीं होता।

किसी भवन को खड़ा करते समय उसका सारा लोड (भार) वहन करने के लिए मजबूत पिलर्स (खम्बों) का आधार रहता है। इस पिलर को खड़ा होने में उसके अंदर एक लोहे की सरिया का पंजर (स्केलेटन) सहायक होता है। इस पंजर के पास भवन का भार वहन करने की क्षमता नहीं होती है। परंतु उस पिलर में भार वहन करने की क्षमता उस लोहे के पंजर से आती है, जो बाहर से दिखता नहीं है। संघ संपूर्ण समाज का संगठन कर ऐसी रचना समाज में निर्माण करना चाहता है कि समाज के हित में चलने वाले प्रत्येक कार्य में यह पंजर शक्ति प्रदान करेगा। कार्य तो जागृत समाज ही करेगा।

(जैसा उन्होंने पाथेय कण संपादक को बताया)

बाला साहब जी देवरस

माना जाता है कि संगठन के नाते से संघ की सीधी भागीदारी की पटकथा राजस्थान के जोधपुर में लिखी गई। 1988 में संघ की प्रांत प्रचारक बैठक जोधपुर के लाल सागर में थी जिसमें सभी प्रान्तों के प्रमुख प्रचारक गण एवं अखिल भारतीय अधिकारी बैठे थे। राम जन्मभूमि की चर्चा चल रही थी। सब अपनी-अपनी बात रख रहे थे। कार्यकर्ताओं का मानना था कि संघ को राम जन्मभूमि आंदोलन में प्रत्यक्ष भाग लेना चाहिए। तत्कालीन सरसंघचालक बाला साहब देवरस ने सब की बातें सुनकर कहा था ''अच्छी तरह से सोच लो, अगर इस अभियान को हाथ में लिया तो वापस लौटने के रास्ते नहीं हैं। फिर सफलता प्राप्त होनी ही चाहिए, हिंदू समाज का सम्मान ऊंचा उठाना ही चाहिए।'' और सोच विचार कर सारे देश के कार्यकर्ताओं ने सामूहिक सहमति व्यक्त की। श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन में संघ के स्वयंसेवक की प्रत्यक्ष सहभागिता की पटकथा जोधपुर में उस बैठक में रखी गई, ऐसा माना जाता है।

अभियान की शुरुआत

इस बैठक के पश्चात् सबसे पहला अभियान 1989 में अभियान की शुरुआत में शिला पूजन का आया। शिला पूजन अभियान में यह विचार आया कि हर हिंदू से सवा रुपया लेंगे। हर गांव से, शहर के हर मुहल्ले से एक शिला लेंगे। इस अभियान के तहत स्वयंसेवकों ने 2,75,000 गांवों में शिला पूजन के कार्यक्रम संपन्न करवाए। इस अभियान के तहत लगभग 6 करोड़ लोगों से संपर्क हुआ। 6 करोड़ लोगों ने सवा-सवा रुपए भेंट किया। यह 6 करोड़ लोग और 2,75,000 गांव तक पहुंचाने की स्थिति संघ के बिना तो संभव ही नहीं थी। यह कार्य मात्र 15 दिन में संपन्न हो गया। इसके पश्चात जितने भी अभियान हुए उसमें संघ की प्रत्यक्ष भूमिका रही है।

(लेखक पाथेय कण संस्थान के सचिव हैं)

'मेरे घर राम आए हैं...' पोस्टर में श्रीराम के पैर चूमती दादी माँ

पूरे-देश ने दीपावली की तरह मनाया
श्रीराम के आगमन का उत्सव

प्राण प्रतिष्ठा समारोह में देशभर के 5 लाख गांव और 60 करोड़ से ज्यादा श्रद्धालु जुड़े। 10 करोड़ परिवारों में अक्षत वितरण हुआ। मीडिया का पूरा सहयोग रहा। अयोध्या की रामलीला 40 करोड़ लोगों ने देखी। हैदराबाद में बनी सोने-चांदी की चरण पादुका सहित देशभर से श्रद्धालुओं ने कई तरह की सामग्री भेजी। मथुरा से लड्डू और आगरा से पेठे भेजे गए। लेक सिटी उदयपुर और इंदौर सहित स्थान-स्थान पर विशेष कार्यक्रम हुए। ऐसे ही अनेक पक्षों पर प्रकाश डालता है यह लेख।

डॉ. कमलेश शर्मा

अयोध्या में निर्मित श्री राम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा का समारोह संपूर्ण भारतवर्ष में ठीक उसी तरह आयोजित किया गया जैसा कि त्रेता युग में भगवान श्रीराम के वनवास से लौटने के बाद अयोध्या में दीपावली त्यौहार का आयोजन किया गया था । इस मौके पर सिर्फ अयोध्यावासी ही नहीं अपितु संपूर्ण देशवासियों ने दीपावली पर्व की तरह इसे मनाया।

देश के 5 लाख गांवों तक पहुंची प्राण प्रतिष्ठा समारोह की गूंज

प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से देशभर में 5 लाख गांवों तथा लगभग 60 करोड़ श्रद्धालुओं को इस आयोजन से जोड़ा गया। इन कार्यक्रमों से आम जन के जुड़ाव को बनाने के लिए देश के 10 करोड़ से अधिक परिवारों में अक्षत वितरण के माध्यम से आमंत्रण दिया गया था।

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का पूरा सहयोग रहा

समारोह के लिए की गई व्यवस्थाओं के तहत न केवल अयोध्या में होने वाले विविध आयोजनों अपितु देश के सभी बड़े मंदिरों में होने वाली पूजा-अर्चना, दीपोत्सव, यज्ञ-अनुष्ठानों को सभी मीडिया प्लेटफार्म पर लाइव दिखाया गया।

पीआईबी ने प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम को दूरदर्शन के माध्यम से देशभर में जन-जन तक पहुंचाने की व्यवस्था की। इसके लिए दूरदर्शन ने अयोध्या में

बांसवाड़ा जिले के बड़ोदिया कस्बे में 11 हजार दीपों के माध्यम से उकेरी गई श्रीराम मंदिर की छवि

राम मंदिर और आसपास तीन दर्जन से अधिक कैमरे लगाए और पूरे कार्यक्रम का सीधा प्रसारण किया गया। देश के तमाम न्यूज चैनल्स ने इस कार्यक्रम के सीधे प्रसारण की व्यवस्था की ।

40 करोड़ से ज्यादा रामभक्तों ने देखी अयोध्या की रामलीला

अयोध्या में श्रीराम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम के दौरान विश्व की सबसे बड़ी रामलीला के ऐतिहासिक मंचन और इसके 118 देशों में

अयोध्या में आयोजित प्राण प्रतिष्ठा वाले दिन 22 जनवरी को राजस्थान के सभी शहर, गांव-कस्बों में रामोत्सव मनाया गया।

प्रसारण की व्यवस्था की गई। कई देशों में इसका लाइव प्रसारण हुआ तो कई में इसकी फुटेज दी गई । फिल्मी कलाकारों की इस रामलीला का मंचन धर्मपथ पर बने सतरंगी पुल के समीप प्रतिदिन शाम 4 बजे से रात्रि 8 बजे तक हुआ। इसका प्रसारण भारतीय चैनल्स के साथ ही 100 के करीब विदेशी चैनल्स ने भी किया । प्रमुख रूप से अमेरिका, लंदन, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, जर्मनी, इटली, पाकिस्तान, इंडोनेशिया और बांग्लादेश के टीवी चैनल्स को फुटेज उपलब्ध कराए गए। रामलीला मंचन स्थल पर डिजिटल मंच बनाया गया। अयोध्या की रामलीला 36 घंटे लगातार चली है और 40 करोड़ से ज्यादा राम भक्तों ने अयोध्या की रामलीला को देखा । रामलीला में सांसद मनोज तिवारी परशुराम की भूमिका में, राहुल भुचर राम की भूमिका में, बिंदु दारा सिंह शंकर की भूमिका में, राकेश बेदी नारद मुनि की भूमिका में, मनीष शर्मा रावण की भूमिका में, रजा मुराद राजा दशरथ की भूमिका में, मालिनी अवस्थी मां शबरी की भूमिका में नजर आए ।

सोने-चांदी की चरण पादुकाएं

करीब एक किलो सोने और सात किलो चांदी से हैदराबाद के श्री चल्ला श्रीनिवास शास्त्री द्वारा तैयार की गई। श्रीराम की चरण पादुकाएं रामेश्वर धाम से अहमदाबाद और पश्चात् सोमनाथ ज्योतिर्लिंग धाम, द्वारकाधीश नगरी व बद्रीनाथ के साथ देशभर में घुमाई गई। चित्रकूट लाई गईं चरण पादुकाएं पांच हजार साल बाद भरतकूप में महास्नान के बाद उसी रास्ते अयोध्या के लिए निकलीं, जिस रास्ते से भरत इन्हें लेकर गए थे।

देशभर से श्रद्धालुओं ने भेजी भोग सामग्री

अयोध्या स्थित रामसेवक पुरम के केंद्रीय भंडार गृह में देश भर से श्रद्धालुओं द्वारा भांति-भांति की सामग्री भेजी गई। श्रद्धालुओं द्वारा इतनी बड़ी तादाद में राशन सामग्री और सोने-चांदी की भेंट भिजवाई गई है कि वहां इनको रखने के लिए जगह की भी कमी हो गई है ।

उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर स्थित देवराहा बाबा आश्रम द्वारा प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम में अपनी सहभागिता निभाते हुए विशिष्ट लोगों को भेंट करने के लिए खास तौर पर 20 हजार से अधिक रामनामी ओढ़नी तैयार की गई । इस रामनामी में भगवान श्रीराम की छवि और राम मंदिर अंकित था । इसके साथ ही संत देवराहा हंस बाबा की परावाणी अंकित थी । प्राण प्रतिष्ठा के दौरान 1111 मण का प्रसाद चढ़ाने के उद्देश्य से 13 लाख देसी घी के लड्डू भी तैयार किए गए, वहीं इन आश्रमों की ओर से चांदी के 5 विशेष पात्र तैयार करवा कर भेजे गए।

असम राज्य से चाय पत्ती, दालचीनी, काली मिर्च, तेजपत्ता और अदरक तो हरियाणा से 400 क्विंटल चावल पहुंचाए गए। समारोह के पूर्व विभिन्न राज्यों के लोग लगातार जल, मिट्टी, सोना, चांदी, मणियां, कपड़े, आभूषण, विशाल घंटे, ढोल, सुगंध इत्यादि के साथ आ रहे थे । उनमें से सबसे उल्लेखनीय हैं माँ जानकी के मायके द्वारा भेजे गए भार (एक बेटी के घर स्थापना के समय भेजे जाने वाले उपहार) जो जनकपुर (नेपाल) और सीतामढ़ी (बिहार) के ननिहाल से अयोध्या लाए गए । रायपुर, दंडकारण्य क्षेत्र स्थित प्रभु के ननिहाल से भी विभिन्न प्रकार के आभूषण आदि के उपहार भेजे गए हैं।

मथुरा के लड्डू और आगरा के पेठे भी भेजे गए

प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम के तहत मथुरा में श्रीकृष्ण जन्मस्थान सेवा संस्थान द्वारा यज्ञ और भोग के लिए विशेष तौर पर लड्डू तैयार किए गए। आगरा के प्रसिद्ध पंछी पेठे की ओर से छप्पन अलग-अलग स्वाद में श्री रामलला के भोग के लिए 56 किस्म का 560 किलो पेठा पहुंचाया गया है ।

सड़क पर 10 किलोमीटर की पेंटिंग

प्राण प्रतिष्ठा समारोह के लिए जहां अयोध्या के सभी प्रवेश द्वारों, चौराहों,

सड़कों, दीवारों और भवनों को सजाया गया वहीं इस समारोह में पहुंचने वाले मेहमानों के स्वागत के लिए अयोध्या की मुख्य सड़क पर बनाई जाने वाली 10 किलोमीटर बड़ी पेंटिंग विशेष आकर्षण का केन्द्र रही। इस आकर्षक पेंटिंग के माध्यम से समारोह को भव्यता प्रदान की गई।

आवास, भोजन, चिकित्सा व्यवस्थाएं

नवस्थापित तीर्थक्षेत्रपुरम (बाग बिजैसी) में टीन का नगर बसाया गया है जिसमे छः नलकूप, छः रसोई घर और दस बिस्तरों वाला एक अस्पताल स्थापित किया गया । देशभर के लगभग डेढ़ सौ चिकित्सकों ने इसमें क्रमिक सेवा दी । प्रदेश में बढ़ती ठंड को देखते हुए लोगों को गर्म रहने में मदद करने के लिए पूरे अयोध्या में नगर निगम ने हीटर लगाए। अयोध्या में कई स्थानों पर इन्फ्रारेड आउटडोर हीटर लगाए गए ।

राजस्थान में अपूर्व उत्साह, रोम-रोम राममय

देश - दुनिया की भांति राजस्थान में भी हर छोटे-बड़े गांव-कस्बे, शहर में इस उत्सव के प्रति अपूर्व उत्साह दिखाई दिया। हर गली-कूंचा राम के रंगों में रंगा हुआ नजर आ रहा था। प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव से सप्ताह भर पहले से गांव-कस्बों व शहरों में भगवा रंगों से आकर्षक सजावट की गई थी वहीं प्रभात-फेरियों,

श्री रामलला प्राण प्रतिष्ठा के दिन एसएमएस मेडिकल कॉलेज जयपुर की छात्राओं द्वारा बनाई गई रंगोली। 800 से ज्यादा मेडिकल विद्यार्थियों की सहभागिता रही।

भजन-कीर्तन और पूजा-पाठ के आयोजनों में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं की मौजूदगी देखी गई। सभी प्रमुख मंदिरों को रात में भी रोशन किया गया वहीं अलग-अलग दिनों में दीप यज्ञ व महाआरती भी की गई। बांसवाड़ा जिले के बड़ोदिया कस्बे में 11 हजार दीपों के माध्यम से श्रीराम मंदिर की छवि को उकेरा गया। लोगों ने प्राण प्रतिष्ठा के दिन अपने-अपने घर आंगन को रंगोलियों से सजाया और रात्रि में दीप प्रज्ज्वलित व आतिशबाजी कर दीपावली मनाई । प्राण प्रतिष्ठा के दिन अलग-अलग संस्थाओं व नगर निकायों की तरफ से बड़ी स्क्रीन पर अयोध्या समारोह के लाइव प्रसारण की व्यवस्थाएं की गई थी जिससे श्रद्धालुओं ने सामूहिक रूप से प्रतिष्ठा समारोह को लाइव देखा । प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम पश्चात् हजारों श्रद्धालुओं की मौजूदगी में भव्य शोभायात्राओं और सामूहिक महाआरती व आतिशबाजी के आयोजन हुए।

लेकसिटी के कलाकारों का अनूठा आयोजन

लेकसिटी उदयपुर के कलाकारों ने प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव के दौरान यहां पर अर्बन स्केचर्स व शेड्स ऑफ उदयपुर ग्रुप ने श्रीराम मंदिर के सामूहिक स्केच बनाए।

इस कार्य में देशी-विदेशी पर्यटकों ने भी हिस्सा लिया। तैयार किए गए एक जैसे स्केचेस को 'आओ मंदिर चले अभियान हनुमान भक्त टोली' के माध्यम से शहर भर में वितरित करते हुए लोगों तक पहुंचाया, जहां लोगों ने इनके साथ सेल्फी ली। इसके साथ ही रामायण की अनसुनी कहानियों व कारसेवा के अनुभवों से युक्त विशेष सत्र के साथ फतेहसागर के किनारे नंगे पैर 'राम रन' का आयोजन हुआ।

यहां के बाजारों व सार्वजनिक स्थानों पर लगी राम मंदिर की प्रतिकृतियां

देशभर में अपनी स्वच्छता के लिए प्रसिद्ध इंदौर शहर द्वारा 15 से 22 जनवरी तक शहर के सभी शॉपिंग मॉल, व्यावसायिक प्रतिष्ठान, बड़े बाजार और सार्वजनिक स्थलों पर राम मंदिर की प्रतिकृति लगाई गई। इसके साथ ही

संस्थानों, बाजारों और सार्वजनिक स्थानों पर विशेष रोशनी की गई और केसरिया बंदनवार व पताकाएं सजाई गई। बाजारों में 'आ गए प्रभु श्रीराम' लिखे बैनर लगाए गए। दुकानों में डिस्प्ले में केसरिया वस्त्र रखे वहीं दुकानों के पुतले भी वन से लौटते राम लक्ष्मण की तरह सजाए गए।

दिल्ली में राम भक्त हनुमान जी की भव्य प्रतिमा का अनावरण

देश की राजधानी दिल्ली में इस अवसर को यादगार बनाने के लिए तैयारियां की गई थी। यहां की गीता कॉलोनी मंदिर में रामभक्त हनुमानजी की 51 फीट की भव्य प्रतिमा तैयार की गई थी । इस प्रतिमा का अनावरण 22 जनवरी को ही पूरे हर्षोल्लास के साथ किया ।

जयपुर में सवा लाख दीपकों से राममंदिर की प्रतिकृति

जयपुर के अल्बर्ट हॉल पर बनाई गई राममंदिर की प्रतिकृति

जयपुर में शाम को अल्बर्ट हॉल के सामने संगीतमय भजन संध्या का आयोजन हुआ। राम मंदिर की 35 फीट ऊँची प्रतिकृति बनाई गई थी। 51 पंडितों द्वारा वैदिक मंत्रोच्चार के साथ 11 हजार दीपों से महाआरती की गई। 300 ड्रोन के माध्यम से श्रीराम मंदिर, दीपोत्सव और भगवा झंडे का चित्र उकेरा गया। 20 हजार लोगों ने कार्यक्रम में भाग लिया।

(लेखक कला-संस्कृति शोधार्थी हैं)

रामलला प्राण प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में करौली की किन्नर गद्दीपति हिनाबाई के नेतृत्व में 30 हजार से अधिक लोगों को भोजन कराया तथा 7 हजार गर्म शॉल वितरित किये गए।

प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर
राममय हुआ सम्पूर्ण विश्व

रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर अमेरिका के न्यूयॉर्क शहर में टाइम्स स्क्वायर पर जहां लाइव स्ट्रीमिंग की गई वहीं लॉस एंजेलिस में कार रैली हुई। अमेरिका व कनाड़ा के 1000 मंदिरों में पदयात्राएं निकलने वाली हैं। मॉरीशस में तो सरकार ने प्राण प्रतिष्ठा का समारोह देखने के लिए दो घंटे की छुट्टी की। मेक्सिको, आस्ट्रेलिया और दक्षिणी पूर्वी एशियाई देशों सहित विश्व के लगभग सभी देशों में प्राण प्रतिष्ठा की धूम रही। प्रस्तुत है इस संबंधी एक रिपोर्ट

राममय अमेरिकी टाइम्स स्क्वायर

प्रो. भगवती प्रकाश शर्मा

राम जन्मभूमि पर रामलला के भव्य मन्दिर में प्राण प्रतिष्ठा के साथ ध्रुव प्रदेशों को छोड़ दें तो सम्पूर्ण विश्व के सभी महाद्वीप राममय हो गये। भारतीय तत्व दर्शन की दृष्टि से सम्पूर्ण विश्व श्रीराम की आल्हादिनी शक्ति के स्पन्दनों का घनीभूत रूप है। लौकिक दृष्टि से भी त्रेतायुग में श्रीराम अवतार के समय से ही सुदूर पूर्व में इण्डोनेशिया से अमेरिका पर्यन्त सम्पूर्ण भूमण्डल ही श्रीराम की लीलाओं से स्पन्दित रहा है। इण्डोनेशिया के जावा सुमात्रा तक सुग्रीव द्वारा सीतामाता की खोज में दूतों को भेजने के सन्दर्भ वाल्मिकी रामायण में मिल जाते हैं। वहीं अहिरावण के राज्य क्षेत्र रहे होण्डुरास व ग्वाटेमाला में आज भी 20-20 फीट ऊंचाई की हनुमान जी व मकरध्वज की गदायुक्त मूर्तियां विद्यमान हैं।

राममय हुआ सम्पूर्ण उत्तरी अमेरिका

अमेरिकी महाद्वीप के तीनों ही उत्तरी अमेरिकी देश कनाडा, संयुक्त राज्य अमेरिका और मेक्सिको राम मन्दिर प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर राममय हो गए। न्यूयॉर्क के टाइम्स स्क्वायर पर तो अयोध्या में राम मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम की लाइव स्ट्रीमिंग देखने के लिए भारी संख्या में भारतीय समुदाय के हजारों नागरिक उमड़ पड़े थे। इस दौरान टाइम्स स्क्वायर तो श्रीराम और राम मंदिर की 3डी तस्वीरों से सराबोर हो गया। भारत के सभी भागों के प्रवासी भारतीयों को यहां अपनी-अपनी पारंपरिक पोशाक में भजन गाते और नाचते देखा जा सकता था। वॉशिंगटन डीसी के वर्जीनिया की फेयरफैक्स काउंटी में एसवी लोटस मंदिर पर अत्यन्त मनमोहक कार्यक्रमों के आयोजन हुए। इस कार्यक्रम में सिख, मुस्लिम और पाकिस्तानी मूल के अमेरिकी नागरिकों सहित 2500 से अधिक लोग शामिल हुए। मुस्लिम भी श्री राम को ही अपना पूर्वज मान उत्साह से सम्मिलित हुए।

इस अवसर पर लॉस एंजेलिस में कार रैली का भी आयोजन किया गया था। लगभग 250 काफिले की इस रैली में 1000 लोगों ने भाग लिया था। अयोध्या में राम मंदिर के उद्घाटन के बाद वर्ल्ड हिंदू काउंसिल ऑफ अमेरिका (वीएचपीए) और कनाडा के विश्व हिंदू परिषद ने अमेरिका और कनाडा के 1000 से अधिक मंदिरों की पदयात्रा शुरू करने का संकल्प व्यक्त किया। यह पदयात्रा मैसाचुसेट्स के ओम हिंदू सेंटर से 25 मार्च से शुरू होगी। इस दौरान एक सुसज्जित वैन में श्रीराम, सीता, लक्ष्मण और हनुमान की मूर्तियां ले जाई जाएगी। यह पदयात्रा 45 दिनों की होगी। अमेरिका में रामभक्तों ने टेस्ला म्यूजिक लाइट शो आयोजित किया। इसमें उन्होंने 200 टेस्ला कारों को साथ में खड़ा करके राम नाम बनाया। साथ ही म्यूजिकल शो किया। अमेरिका में विश्व हिंदू परिषद ने अयोध्या में राम मंदिर 'प्राण प्रतिष्ठा' समारोह से पहले गोल्डन गेट ब्रिज पर एक कार रैली का आयोजन किया। इसमें काफी लोगों ने अपने वाहन के साथ में हिस्सा लिया और श्रीराम के जयकारे लगाए। न्यूयॉर्क टाइम्स स्क्वायर से बोस्टन तक पूरे रास्ते राम मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा समारोह मनाया गया। वाशिंगटन, डीसी, एलए और सैन फ्रांसिस्को में बड़े-बड़े कार्यक्रम हुये हैं।

मैक्सिको से त्रिनिदाद एवं टोबैगो तक रामभक्ति में डूबे लोग

कैरिबियाई सागर के त्रिनिदाद और टोबैगो गणराज्य में बड़ी

संख्या में भारतीय मूल के लोगों ने एक कार्यक्रम आयोजित किया। त्रिनिदाद में हुए कार्यक्रम के दौरान 5000 से अधिक लोग इसमें सम्मिलित हुए। अयोध्या में राम मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा की पूर्व संध्या पर मेक्सिको को भी अपना पहला राम मंदिर मिला। मेक्सिको के क्वेरेटारो शहर में पहला राम मंदिर बनकर तैयार हो गया। इससे पहले यहां एक हनुमान मंदिर भी है, जहां इस अवसर पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

मॉरीशस में दो घंटे की छुट्टी

रामायण व हिन्दी की लोकप्रियता वाले देश मॉरीशस में तो मॉरिशस सरकार के सभी सरकारी कर्मचारियों के लिए दो घंटे की विशेष छुट्टी की घोषणा कर दी थी। इस दौरान भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मॉरीशस के प्रधानमंत्री प्रविंद कुमार ने कहा कि यह खुशी का मौका है कि श्रीराम अयोध्या आए हैं। भगवान करें उनका आशीर्वाद शांति और समृद्धि लाएं। जय हिंद, जय मॉरीशस।

फिजी में पांच दिवसीय समारोह

फिजी में तो 18 से 22 जनवरी तक पूरे पांच दिन राम लीलाओं, रामचरित मानस पाठ और नानाविध रामलला उत्सव के कार्यक्रम आयोजित किये गये। फिजी की राजधानी सुवा में इंडियन काउंसिल फॉर कल्चरल रिलेशंस ने इस कार्यक्रम का आयोजन किया। फिजी में लगभग 2000 रामायण मण्डलियाँ हैं। सभी अपने अपने ढंग से अत्यन्त अभूतपूर्व रीति से अपने अपने स्तर पर उत्सव सहित सैंकड़ों कार्यक्रम मनाये।

ऑस्ट्रेलिया में कार रैली

ऑस्ट्रेलिया के सैकड़ों मंदिरों में कार्यक्रम आयोजित किए गए। प्राण प्रतिष्ठा से एक दिन पहले सिडनी में भारतीय प्रवासियों ने एक कार रैली का आयोजन किया। इस रैली में 100 से ज्यादा कारों ने भाग लिया और लोगों ने अपने घरों के बाहर आतिशबाजी की और दीप प्रज्ज्वलित किये। सिडनी की सड़कों पर जय श्री राम संकीर्तन करते दिखे लोग।

यूनाइटेड किंगडम

इंग्लैंड के मध्य में हिन्दू मन्दिरों में अयोध्या जैसा ही भारी उत्साह दिखाई दिया। प्राण प्रतिष्ठा से पहले ब्रह्मर्षि मिशन आश्रम में प्रार्थना, समारोह का आयोजन किया गया है।

सीता माता के मायके नेपाल के जनकपुर में कार्यक्रम

नेपाल का जनकपुर सीतामाता का मायका है और वहां के मुख्य महंत और छोटे महंत को अयोध्या समारोह में पहले से ही आमंत्रित कर लिया गया था और वे पहले ही अयोध्या के लिए रवाना हो चुके थे। इससे पहले जनकपुर ने अनुष्ठान के

मेक्सिकों में राम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा

एक भाग के रूप में अयोध्या में प्रसाद भेजा था जिसे वहां ''भार'' कहा जाता है। इसमें आभूषण, व्यंजन, कपड़े और अन्य दैनिक आवश्यक वस्तुएं शामिल थीं। अयोध्या के साथ-साथ नेपाल में जनकपुरधाम, देवी सीता के मायके में अथाह खुशी और उत्साह से भर गया है, वहाँ तो इस अवसर का इंतजार बड़ी धूमधाम और उल्लास के साथ किया जा रहा है।

ताइवान में भी उल्लास पूर्ण समारोह

अयोध्या में राम मंदिर के बहुप्रतीक्षित प्राण प्रतिष्ठा समारोह के अवसर पर एवं उसके पूर्व भी ताइवान में भारतीय समुदाय के लोग एक दूसरे से गले लगकर मिलते दिखे।

ताइवान में मुख्य रूप से दो कार्यक्रमों के आयोजन की जानकारी मिली है। एक कार्यक्रम भारतीय समुदाय द्वारा और दूसरा कार्यक्रम इस्कॉन ताइवान के प्रयास से आयोजित हुआ। चीन के स्थान पर ताइवान ही 1971 तक संयुक्त राष्ट्र संघ का सदस्य रहा है।

श्रीलंका से दक्षिण पूर्व एशिया तक उत्सवों की श्रृंखला

हिंदू बहुल उत्तरी श्रीलंका के कई मंदिरों में 'राम लला' की प्राण प्रतिष्ठा का उत्सव मनाया गया। प्रतिष्ठित नल्लूर कोविल मंदिर सहित विभिन्न मंदिरों में सोमवार को अनुष्ठान किए गए। इस कार्यक्रम में भारतीय वाणिज्य दूतावास के अधिकारी भी शामिल हुए। उत्तरी प्रांत के जाफना जिले में स्थित नल्लूर कंडास्वामी कोविल या नल्लूर मुरूगन कोविल सबसे महत्वपूर्ण हिंदू मंदिरों में से एक है।

भक्तों ने सुबह के समय मूर्तियों की साफ सफाई की, वहीं बाद में मंदिरों में प्रार्थनाएं की गई और भगवान राम के भजन गाए गए। वर्ष 2011 की जनगणना के मुताबिक श्रीलंका की 2.10 करोड़ की आबादी में 12 फीसदी से ज्यादा हिंदू आबादी है। वहीं जाफना की आबादी साढ़े छह लाख है। इसमें 80 फीसदी से ज्यादा हिंदू है।

रामलीलाओं के केन्द्र दक्षिण पूर्वी एशिया में प्रतिष्ठा की धूम

दक्षिण पूर्वी एशिया के देशों में इण्डोनेशिया, म्यांमार, थाइलैण्ड, कम्बोडिया, मलेशिया आदि सभी देशों की अपनी

जनकपुर, नेपाल

अपनी रामायण के संस्करण हैं। थाईलैण्ड में प्राचीन राजधानी अयुथ्या कहलाती रही है और राजा-राम। थाईलैण्ड की अयुथ्या में भी भव्य कार्यक्रम हुए हैं। इण्डोनेशिया में 87 प्रतिशत मुस्लिम जनसंख्या होते हुए भी हर जिले की रामलीला है। इण्डोनेशिया के जावा का यवद्वीप और सुमात्रा का सुवर्ण द्वीप के नाम से वाल्मिकी रामायण में सन्दर्भ मिलते हैं। इण्डोनेशिया व थाईलैण्ड सहित कई दक्षिण पूर्वी एशियाई देशों, केन्या व दक्षिण अफ्रीका में इस अवसर पर कार्यक्रम हुए हैं। जहां-जहां भी प्रवासी भारतीय रहते हैं, हिन्दू स्वयंसेवक संघ के कार्य हैं, उन सभी स्थानों पर छोटे बड़े अनेक कार्यक्रम सम्पन्न हुए हैं। इस प्रकार राम जन्मभूमि पर प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर पूरा विश्व ही राममय हो गया।

(लेखक यूनेस्को संचालित महात्मा गांधी व स्थायी विकास संस्थान के अध्यक्ष हैं तथा स्वावलम्बी भारत अभियान के राष्ट्रीय समन्वयक हैं)

E-mail : bssjpr@rediffmail.com

ॐ

दूरभाष : 0141-2652509

विद्या भारती संस्थान जयपुर

सेवाधाम, जवाहर नगर, सेक्टर-4, जयपुर-302004

❊ प्रान्त में विद्या भारती से संबद्ध विद्यालयों की संख्या ❊

महाविद्यालय - 03	उच्च माध्यमिक - 65	माध्यमिक - 114	उच्च प्राथमिक - 107	प्राथमिक - 117
शिशुवाटिका - 26	योग - 432	छात्र संख्या - 103381	आचार्य संख्या - 4350	

❊ सामाजिक सरोकार के अर्न्तगत नि:शुल्क या न्यूनतम शुल्क में सेवा व व्रज क्षेत्र में चलने वाले विद्यालय ❊

संस्कार केन्द्र - 164	संस्कार केन्द्र छात्र संख्या - 3888	आचार्य संख्या - 164	सेवानिधि संवाह सत्र 2022-23
एकल विद्यालय - 45	एकल विद्यालय छात्र संख्या - 1035	आचार्य संख्या - 45	1,02,60,630 रुपये

❊ वर्ष 2022-23 में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड का परीक्षा परिणाम ❊

दशमी	कुल प्रविष्ट - 6511	प्रथम श्रेणी - 4379	द्वितीय श्रेणी - 1674	तृतीय श्रेणी - 315	प्रतिशत - 97.87
द्वादशी	कुल प्रविष्ट - 2053	प्रथम श्रेणी - 1529	द्वितीय श्रेणी - 460	तृतीय श्रेणी - 33	प्रतिशत - 98.97

वर्ष 2022-23 में विद्या भारती राजस्थान की वरीयता सूची में उच्च माध्यमिक में 4 एवं माध्यमिक में 31 भैया / बहिनों ने स्थान प्राप्त किया।

संस्कृति ज्ञान परीक्षा में सहभागिता - विद्यालय-2681 भैया/बहिन-116694 आचार्य/आचार्या-1391

हमारे विद्यालयों में — प्रभावी शिशुवाटिका (ECCE) Play Group ❊ अटल टिंकरिंग लैब (ATL) ❊ विद्यालय की गुणवत्ता का मूल्यांकन (SESQ) ❊ प्रभावी अभिभावक सम्पर्क ❊ संस्कारक्षम वन्दना सभा ❊ अंग्रेजी संभाषण (Spoken English) ❊ Information commnication technology द्वारा शिक्षा ❊ School Games federation of India द्वारा राज्य की मान्यता ❊ राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 का प्रभावी क्रियान्वयन (Effective Implementation of NEP-2020)

(डॉ. विजय गोयल)
अध्यक्ष

(शैलेन्द्र कुमार)
मंत्री

रज से लेकर तिलक तक राम मंदिर में राजस्थान की महक व चमक

हेमलता चतुर्वेदी

राष्ट्र भक्ति में राजस्थान का इतिहास शौर्य गाथाओं से भरा है तो वर्तमान कर्मगाथाओं से। बात जब राम मंदिर के लिए संघर्ष की आई तो राजस्थान पीछे नहीं हटा और जब मंदिर निर्माण की बारी आई तो राजस्थान की धरा ने मंदिर की नींव में अपनी रज से लेकर कंगूरे की कारीगरी तक भागीदारी निभाई। बंसी पहाड़पुर के पत्थर हों या स्तम्भों की नक्काशी, अयोध्या के मंदिर में राजस्थान की झलक, माटी की महक, घी की सुगंध और चांदी की चमक की निराली आभा दिखेगी।

तुलसी के मोती लगा हुआ गोल्ड नेकलेस भेंट करते जयपुर के हेरंब ब्रह्मचारी

अयोध्या में नवनिर्मित रामलला के भव्य-दिव्य मंदिर में राजस्थान का सहयोग नींव से लेकर रामलला के तिलक तक दिखाई देगा।

राम मंदिर के लिए बनी नींव में देश भर के तीर्थ स्थलों व मंदिरों से मिट्टी भेजी गई थी। जयपुर से मोती डूंगरी गणेश जी मंदिर, गोविंद देव जी, गलता पीठ, घाट के बालाजी, शिलामाता, झूलेलाल मंदिर, अमरापुर, ताड़केश्वर महादेव मंदिर, त्रिवेणी धाम व सांभर से शाकंभरी माता मंदिर, जोबनेर के ज्वाला माता मंदिर, सामोद के वीर हनुमान मंदिर, विराटनगर के पंचखंड पीठ, सीकर जिले से खाटूश्याम जी, रेवासा पीठ,जीणमाता मंदिर, चूरू जिले से सालासर बालाजी, दरेवा धाम राजगढ़, झुंझनूं के राणी सती मंदिर, लोहार्गल के सूर्य मंदिर, उदयपुरवाटी के शाकंभरी माता मंदिर, अलवर के भर्तृहरि धाम, पांडुपोल, करौली जिले के मदनमोहन जी मंदिर और कैलादेवी मंदिर से अयोध्या राम मंदिर की नींव के लिए माटी एकत्रित कर भेजी गई।

गुलाबी रंग में भरतपुर का योगदान

विभिन्न राज्यों से मंगवाई गई निर्माण सामग्री में भरतपुर के बलुआ पत्थर भी भेजे गए । इन पत्थरों का मंदिर को गुलाबी रंग देने में खास योगदान है। श्रीराम जन्मभूमि मंदिर के निर्माण में लगने वाला पत्थर राजस्थान के बंसी पहाड़पुर का है, जबकि मुख्यद्वार मकराना के संगमरमर का। भरतपुर के रुदावल क्षेत्र में बसा गांव बंसी पहाड़पुर अपने लाल पत्थर के लिए देशभर में मशहूर है। सैकड़ों कामगार यहां लाल पत्थरों पर नक्काशी का काम करने में दिन रात जुटे रहे। पिछले ढाई साल से यह गुलाबी पत्थर खम्बों, छत, दर और दीवारों के रूप में तैयार होकर अयोध्या भेजा जा रहा है। बंसी पहाड़पुर से निकला पत्थर दौसा के सिकंदरा भी तराशने के लिए पहुंचा । कारखाना मालिक रामावतार गुर्जर ने बताया कि यहां के नक्काशी का काम करवाया गया है। यहां से तराशे गए पत्थर को 600 किलोमीटर दूर सिरोही के पिंडवाड़ा में ले जाया जाता है। पिंडवाड़ा नाम ही मंदिर निर्माण के लिए जाना जाता है । यहीं के सोमपुरा गोत्र के करीब 250 परिवार मंदिर नक्काशी के लिए पूरे भारत में जाने जाते हैं। अयोध्या में भी इसी गोत्र के कारीगर काम कर रहे हैं। मंदिर के लिए करीब 13.50 लाख घन फीट पत्थर की जरूरत है। अब तक करीब 8 लाख घन फीट पत्थर लग चुका है। प्रवेश द्वार से निकासी द्वार तक करीब 4 लाख घन फीट और शेष अन्य स्थानों पर लग चुका है। राम मंदिर के मुख्य द्वार में मकराना का सफेद संगमरमर लगाया गया है। मकराना राजस्थान के नागौर जिले की सबसे बड़ी तहसील है और यहां का सफेद संगमरमर विश्व विख्यात है। मकराना में विभिन्न स्थानों पर संगमरमर का खनन किया जाता है।

सर्वाधिक दानदाता राज्य राजस्थान

विश्व हिंदू परिषद (वीएचपी) ने दावा किया है कि राजस्थान राम मंदिर निर्माण में योगदान देने वाला नंबर एक राज्य बनकर उभरा है। विहिप उपाध्यक्ष चंपत राय ने बताया कि राजस्थानवासियों ने अयोध्या में राम मंदिर निर्माण के लिए राजस्थान के 36 हजार गांवों और शहरों से 557 करोड़ रुपए से अधिक का

स्तंभों पर की गई नक्काशी

योगदान दिया है। इसमें 221 करोड़ रुपए अकेले जोधपुर शहर के हैं, जबकि पूरे देश से कुल 2500 करोड़ रुपए एकत्र किए गए।

घी और तेल के साथ रोटी की मशीन

हवन और दीपक के लिए जोधपुर से गाय का घी और रसोई के लिए जयपुर से तेल के 2100 पीपे भेजे जाने के बाद अजमेर से चपाती बनाने वाली 8 मशीनें भी अयोध्या भेजी गई। यह मशीनें समारोह में हिस्सा लेने वाले राम भक्तों के लिए रोटियां बनाएगी। एक बार में 1200 रोटियां सेंकने वाली ये मशीन सीता माता रसोई में लगाई गई हैं ।

मकराना (नागौर) में तैयार आसन

भगवान की प्रतिमा जिस भव्य आसन पर प्रतिष्ठित की गई है, उसके लिए संगमरमर का आसन मकराना नागौर में तैयार किया गया है। मकराना के हुकमाराम चौधरी और धर्माराम चौधरी ने बताया कि हमें श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट की ओर से इस आसन की शिलाएं बनाने के लिए कहा गया था। हमने उनकी ओर से दी गई ड्राइंग के अनुसार सफेद संगमरमर (व्हाइट मार्बल) का आसन तैयार किया है। मंदिर के खंभे भी मकराना मार्बल से बनाए गए हैं । हुकमाराम ने बताया कि मंदिर के गर्भगृह के निर्माण में 13300 घन फीट नक्काशी पर संगमरमर का उपयोग हुआ है। वहीं 95300 वर्ग फीट मार्बल फर्श और क्लेंडिंग के लिए काम में लिया गया है। फर्श के लिए सफेद मार्बल और उस पर इनले वर्क का काम हुकमाराम और धर्माराम चौधरी ने किया है। फर्श की मजबूती के लिए सफेद मार्बल की शिलाएं 35 एमएम मोटाई की लगाई गई हैं।

भोग का थाल जयपुर से

रामलला को भोग लगाने के लिए 7.5 किलो चांदी से तैयार किया गया थाल जयपुर से भेजा गया है। इस थाल में चांदी की शिला को हनुमान जी हाथों पर उठाए हुए है। थाल को जयपुर के राजीव पाबूवाल और लक्ष्य पाबूवाल ने तैयार किया। रामायण और रामचरितमानस के अध्ययन के बाद थाल बनाया गया। इस थाल में भगवान राम के 4 अश्व (कर्म, धर्म, अर्थ, मोक्ष) को उकेरा गया। साथ ही 9 नवरस (नौ भावनाएं), नवधा भक्ति (नौ भक्ति के रूप), नवग्रह (नौ ग्रह) और नवदुर्गा (मां दुर्गा के नौ रूप) को प्रदर्शित करते हुए नौ शुभ चिन्ह भी उकेरे गए हैं। थाल में सुंदरकांड के 35वें सर्ग के 15 श्लोक भी उकेरे गए हैं । पचास लोगों की टीम ने दो माह में यह थाल तैयार किया। हर कटोरी पर 21 कमल की पंखुड़ियां हैं। चारों कटोरियों में कुल 84 पंखुडियां हैं।

राम के तिलक का राजस्थान से नाता

रामलला की प्रतिमा में माथे पर सूर्य तिलक के लिए तैयार की गई ऑप्टिकल डिजाइन राजस्थानी मूल के व्यक्ति की बेंगलूरु स्थित कम्पनी ने नि:शुल्क तैयार की है। पाली जिले के मूल निवासी और कंपनी के निदेशक राजेंद्र कोटरिया ने बताया कि भगवान राम के सूर्यवंशी होने के मद्देनजर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इच्छा जताई थी कि मंदिर की प्रतिष्ठा के बाद हर

संगमरमर की चमक पर बनी आकृतियाँ

जयपुर से भेजा गया चांदी का भोग थाल

वर्ष रामनवमी पर राम के माथे पर सूर्य का तिलक हो। इसीलिए ऐसी तकनीकी व्यवस्था की गई है कि हर साल रामनवमी के दिन अभिजीत मुहूर्त में तीन-से चार मिनट के लिए सूर्य की किरणें रामलला के माथे को सुशोभित करेंगी। कोटरिया ने बताया कि यह अनूठा सिस्टम सूर्य के प्रकाश, दर्पण और लैंस का उपयोग करके तैयार किया गया है इसकी मदद से तीन मंजिला मंदिर के गर्भगृह में विराजने वाली रामलला की मूर्ति के माथे पर सूर्य की किरणों का अभिषेक होगा। इसे मेंटेनेंस फ्री बनाने के लिए पीतल व कांसे से तैयार किया गया है ।

तुलसी मोती वाला सोने का हार

जयपुर के त्रिपुराम्बा मानव हितकारी आश्रम के महंत स्वामी हेरंब ब्रह्मचारी ने रामलला के लिए तुलसी के मोती लगा हुआ एक गोल्ड नेकलेस बनवाया है। स्वामी ने बताया इस नेकलेस में त्रिपुरांबा पीठ के बने श्री यंत्र और लक्ष्मी यंत्र का पेंडेंट है। सन् 1974 में उनके गुरु स्वामी राधेश्याम परमहंस जी को कुछ चांदी की मोहरें, गोवर्धन मठ के 144वें शंकराचार्य स्वामी निरंजन देव तीर्थ जी ने दी थी। ये चांदी की मोहरें सिंधी समाज के संत लीला शाह की स्मृति में बनी थी । उन्हीं मोहरों को गलवा कर चांदी से तुलसी की पत्ती और तार से ये नेकलेस बना है। इसमें उड़ीसा की खास किस्म के तुलसी की लकड़ी के मोती हैं। इनके ऊपर सोने का पानी चढ़ा है ।

(लेखिका पाथेय कण के संपादकीय विभाग से जुड़ी हुई हैं)

बंसी पहाड़पुर के लाल रंग का बलुआ पत्थर: पवित्रता और दृढ़ता का प्रतीक

दिनकर शर्मा

लेखक बता रहे हैं कि राजस्थान के भरतपुर में स्थित बंसी पहाड़पुर के लाल बलुआ पत्थरों में ऐसी क्या खास बात है कि श्रीराम जन्मभूमि के मंदिर निर्माण में इनका उपयोग किया गया। प्रस्तुत लेख में इसकी रासायनिक व भौगोलिक विशेषताओं पर प्रकाश डाला गया है।

नब्बे के दशक में प्रारम्भ हुए रामजन्मभूमि आंदोलन के दौरान ही न केवल विशेषज्ञों द्वारा राजस्थान के बंसी पहाड़पुर के लाल बलुआ पत्थर का चयन कर लिया गया वरन् सवा लाख घनफुट पत्थर को तराशकर मंदिर के प्रथम तल निर्माण की तैयारी भी कर ली गई थी।

रामसेवकपुरम एवं रामघाट स्थित कार्यशाला सहित रामजन्मभूमि परिसर में यह पत्थर सहेज कर रखा गया था। रामशिला पूजन के लिये श्रीराम लिखी गई ईंटों का निर्माण भी भरतपुर के इसी स्थान पर किया गया था।

आइये जानें लाल बलुआ पत्थर की रासायनिक एवं भौगोलिक विशेषताऐं-

लाल बलुआ पत्थर की रासायनिक संरचना भौगोलिक रूप से इसके स्रोत पर निर्भर है। यह पत्थर सामान्यतया क्वार्ट्ज, फेल्सपार एवं अन्य खनिजों से निर्मित है। यह एक प्रकार की अवसादी चट्टान है। क्वार्ट्ज ($SI0_2$)लाल बलुआ पत्थर का सर्वाधिक भाग निर्मित करता है। क्वार्ट्ज पत्थर में कठोरता एवं सुदृढ़ता प्रदान करता है। फेल्सपार, लाल बलुआ पत्थर में पोटेशियम एवं प्लेजियोक्लाज फेल्सपार के रूप में उपस्थित होता है।

इस पत्थर को लाल रंग प्रदान करता है आयरन ऑक्साइड (Fe_2O_3)। आयरन के हेमेटाइट अयस्क की प्रतिशत मात्रा की भिन्नता के कारण, विभिन्न स्थानों के पत्थरों में लाल रंग के अलग-अलग शेड दिखाई देते हैं। इसके अलावा लाल बलुआ पत्थर में केल्साइट एवं क्ले मिनरल भी विभिन्न प्रतिशतता में उपस्थित होते हैं।

उक्त रसायनों की उपस्थिति लाल बलुआ पत्थर को अद्वितीय गुणों से युक्त बनाती है, जिनके कारण ही इसका उपयोग भव्य इमारतों एवं सजावटी वस्तुएं बनाने में किया जाता है। अवसादी चट्टान (सेडीमेण्टरी रॉक) होने के कारण लाल बलुआ पत्थर अपक्षय (वीदरिंग) से बचा रहता है तथा इसका रंग लम्बे समय

तक तीक्ष्ण बना रहता है। साथ ही वातावरणीय परिवर्तनों का भी सामना करने में सक्षम रहता है। आज के जलवायु परिवर्तन के दौर में इस पत्थर का प्रयोग राम मंदिर की भव्यता को हजारों वर्षों तक बचाये रखेगा, ऐसा विशेषज्ञों का मानना है।

अपने विशेष खनिज गुणों के कारण इस पत्थर में दृढ़ता तो है ही परन्तु स्थापत्य कार्य में इस पत्थर पर कटिंग एवं कार्विंग कार्य आसानी से किया जा सकता है। ये विशेष गुण भक्तगण, दर्शन के दौरान राम मंदिर में मेहराबों, गुम्बद एवं खम्बों में कार्य की गयी मूर्तियों एवं पुष्प अलंकरणों में देख सकेंगे। इस पत्थर का टेक्सचर इसको एक चिकनी एवं निरंतर सतह प्रदान करता है, इस गुण के दर्शन मंदिर की दीवारों में किये जा सकते हैं।

एक विशेष गुण यह भी है कि लाल बलुआ पत्थर ऊष्मीय रूप से कुचालक है, इसकी छिद्रित प्रकृति पत्थर के तापमान को नियंत्रित करने में सहायता करती है जिससे इस पर तापमान परिवर्तन का प्रभाव नगण्य हो जाता है। भौतिक एवं रासायनिक गुणों के अतिरिक्त लाल रंग स्वयं भारतीय सनातन परम्परा में पवित्रता, दृढ़ता, शौर्य एवं स्थायित्व का प्रतीक है।

(लेखक राजस्थान शिक्षा सेवा में कार्यरत हैं तथा विज्ञान व प्रौद्योगिकी विषयों के जानकार हैं)

'सप्तपुरी' अयोध्या का विकास 'आर्थिक मोक्ष' का नया आयाम

सन्तु अर्थशास्त्री

लेखक ने धार्मिक, सामाजिक तथा आर्थिक मोक्ष की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए बताया है कि सन् 2020 में हुए शिलान्यास के बाद अयोध्या को सजाने-संवारने, आधारभूत संरचनाओं के निर्माण, निवेश तथा आने वाले लाखों श्रद्धालुओं आदि से चारों ओर क्षेत्र का विकास आर्थिक मोक्ष का मार्ग प्रशस्त करेगा।

पौराणिक काल से ही तीर्थ नगरी अयोध्या की गणना उन 'सप्त' – पुरियों में की जाती है जो मोक्ष-नगरियों के नाम से जानी जाती हैं यथा- ''अयोध्या मथुरा माया काशी कांची अवंतिका। पुरी द्वारावती चैव सप्तैता मोक्षदायिका:।।'' ये मोक्ष प्रदान करने वाली ऐसी सप्तपुरियां हैं, जहां निवास-प्रवास करने से मनुष्य को कर्म-बंधन से मुक्ति मिल जाती है।

ईश्वर का नगर

इनमें से 'प्रथम' मोक्षपुरी का गौरव 'अयोध्या' को दिया गया है जहां भगवान विष्णु के सातवें अवतार 'श्रीराम' का जन्म हुआ। त्रेतायुग से लेकर कलियुग तक मोक्षनगरी के रूप में पहचान रखने वाले अयोध्या नगर को अथर्ववेद में 'ईश्वर का नगर' बताया गया है। इस पवित्र नगरी के पास सरयू नदी बहती है जहां श्रीराम ने अपना मानव-रूप त्याग कर 'वैकुण्ठ लोक' की ओर प्रस्थान किया था।

30 हजार 500 करोड़ से ज्यादा खर्च

गत सात वर्षों में अयोध्या धाम को इसका प्राचीन सांस्कृतिक-धार्मिक वैभव लौटाने के सरकारी प्रयासों में काफी तेजी आई है। विशेषकर 5 अगस्त, 2020 को श्री रामलला के नए मंदिर के शिलान्यास के उपरान्त इस तीर्थनगरी का कायाकल्प करने के लिए केन्द्र और उत्तर प्रदेश की सरकारों द्वारा विभिन्न विकास परियोजनाओं, जिनमें आधुनिक सुविधाओं से सम्पन्न देश का आदर्श रेल्वे स्टेशन और अन्तरराष्ट्रीय एयरपोर्ट सम्मिलित हैं, पर लगभग 30 हजार 500 करोड़ रुपए की धनराशि खर्च की जा चुकी है।

क्या तीर्थ केन्द्रों पर खर्च अनुत्पादक है?

गौरतलब है कि देश के प्रमुख तीर्थ क्षेत्रों को सांस्कृतिक पर्यटन केन्द्रों के रूप में विकसित किये जाने की वर्तमान सरकार की अर्थनीति की आलोचना अनेक विपक्षी दलों की ओर से यह कहकर की जाती है कि यह संविधान के 'सेक्यूलर' स्वरूप के विरुद्ध है और यह भी कि यह करदाताओं से प्राप्त धनराशि का ''अनुत्पादक'' उपयोग है।

रोजगार के साथ ही निवासियों की सकल आय में बढ़ोतरी

किन्तु सच्चाई इसके विपरीत है। प्रथमत: सरकार सड़क, रेल, एयरपोर्ट आदि के रूप में जिस आर्थिक-आधार-संरचना के विकास और विस्तार पर सार्वजनिक व्यय करती है, उसके सार्वजनिक उपयोग से सभी वर्गों के लोगों को एक समान लाभ

महर्षि वाल्मीकि अंतरराष्ट्रीय हवाईअड्डा अयोध्याधाम

नव विकसित लता मंगेशकर चौराहा

प्राप्त होते हैं, अत: यह पूर्णरूप से 'सेक्यूलर' है। द्वितीयत: जहां तक 'अनुत्पादक' होने की बात है, विश्वभर के अर्थशास्त्रियों की सर्वसम्मत राय है कि विकास की आधार संरचना तैयार होनी है, वरन संबंधित क्षेत्र-वासियों की सकल आय में कई गुना वृद्धि होती है। अर्थशास्त्र की भाषा में इसे सार्वजनिक निवेश का गुणक प्रभाव कहा जाता है। 'राष्ट्रीय लोक वित्त एवं नीति संस्थान' की ओर से किये गए शोध में यह पाया गया है कि सरकार की ओर से किसी विकास परियोजना पर मात्र 'एक' रुपया खर्च करने से उस क्षेत्र विशेष की जनता की आमदनी में औसतन 4.48 रुपये अर्थात् लगभग 'पाँच' रुपये की बढ़ोतरी हो जाती है।

धार्मिक, सामाजिक व आर्थिक मोक्ष की अवधारणा

भारतीय दर्शन परम्परा में 'मोक्ष' शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख महर्षि कणाद के 'वैशेषिक' दर्शन में मिलता है जहां इसे व्यक्ति के ''सर्वोच्च कल्याण'' के रूप में परिभाषित किया गया है। 'आध्यात्मिक' दृष्टि से विचार करने पर, मोक्ष का अर्थ है- 'समस्त प्रकार के कर्म-बंधनों के भार से उन्मोचित हो जाना।' सामाजिक दृष्टि से विचार करने पर मोक्ष का अर्थ है-''समस्त प्रकार के सामाजिक दायित्वों के भार से उन्मोचित हो जाना।'' हमारे देश का प्रत्येक गृहस्थ इसी 'सामाजिक मोक्ष' की कामना करता है और इसमें सफल रहने पर अपने जीवन को धन्य समझता है। 'आर्थिक' दृष्टि से विचार करने पर मोक्ष का अर्थ है-'समस्त प्रकार के आर्थिक दायित्वों के भार से उन्मोचित हो जाना' अर्थात् अपनी (मूलभूत) आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पर्याप्त धनराशि जुटाने की स्थिति में आ जाना। विश्व का हर व्यक्ति इस आर्थिक मोक्ष की न केवल कामना करना है बल्कि पर्याप्त धनोपार्जन के लिए सतत प्रयत्नशील रहता है।

'आर्थिक' दृष्टि से विचार करने पर मोक्ष का अर्थ है-'समस्त प्रकार के आर्थिक दायित्वों के भार से उन्मोचित हो जाना' अर्थात् अपनी (मूलभूत) आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पर्याप्त धनराशि जुटाने की स्थिति में आ जाना। विश्व का हर व्यक्ति इस आर्थिक मोक्ष की न केवल कामना करता है बल्कि पर्याप्त धनोपार्जन के लिए सतत प्रयत्नशील रहता है।

आर्थिक मोक्ष के चार प्रवाह

आइये, अब हम समझे कि 'विकसित अयोध्या धाम' अयोध्या वासियों, उत्तर प्रदेश वासियों और समस्त देशवासियों के 'आर्थिक मोक्ष' (अर्थात आर्थिक समृद्धि) का मार्ग किस प्रकार प्रशस्त करेगा। इस आर्थिक मोक्ष में योगदान करने वाले जिन चार अर्थ-प्रवाहों की हम पृथक-पृथक विवेचना करेंगे, वे हैं :-

(1) विकास परियोजनाओं पर सरकारी व्यय

(2) श्रीराम मंदिर निर्माण पर तीर्थ विकास ट्रस्ट की ओर से व्यय

(3) व्यवसायियों/उद्योगपतियों द्वारा तीर्थ क्षेत्र में निजी निवेश व्यय और

(4) देशी-विदेशी पर्यटकों द्वारा तीर्थक्षेत्र में वस्तुओं और सेवाओं की खरीद पर किया गया व्यय।

परियोजनाओं से क्षेत्र का विकास

उत्तरप्रदेश सरकार के वित्त विभाग के अनुसार अयोध्या तीर्थ क्षेत्र में 180 से अधिक विकास परियोजना पर 31 दिसम्बर, 2023 तक केन्द्र व राज्य की सरकारों द्वारा 30 हजार 500 करोड़ रुपये की धनराशि व्यय की गयी है जिसके गुणक-प्रभाव से आगामी 3-4 वर्षों में क्षेत्र की सकल आय में लगभग 1 लाख 51 हजार 500 करोड़ रुपये अर्थात् 1.5 'ट्रिलियन' रुपये की बढ़ोतरी होने का अनुमान है।

मंदिर निर्माण से लोगों की आय में अपार वृद्धि

इसके साथ ही, श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र न्यास के अनुसार 31 मार्च, 2023 तक मंदिर निर्माण पर 900 करोड़ रुपये व्यय

नव विकसित अयोध्या धाम रेलवे स्टेशन

किये गये थे और 31 मार्च, 2025 तक 3000 करोड़ रुपये और खर्च किये जायेंगे। इस प्रकार अकेले मंदिर निर्माण से क्षेत्रवासियों की आय में 20 हजार करोड़ रुपये की अतिरिक्त वृद्धि होने की संभावना है।

इसी प्रकार, अयोध्या धाम और निकटवर्ती क्षेत्रों में नये होटल, नये रेस्टोरेन्ट, नयी ट्रेवल एजेन्सी, नये रिटेल और होलसेल व्यवसायों में निजी निवेश की राशि लगभग 15 हजार करोड़ रुपये आंकी गयी है, जिसके गुणक प्रभाव से 75 हजार करोड़ रुपये की अतिरिक्त वृद्धि क्षेत्र और राज्य की सकल आय से परिलक्षित होगी।

श्रद्धालुओं की संख्या बढ़ने से स्वरोजगार बढ़ा

रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के बाद एक सप्ताह में 19 लाख से ज्यादा श्रद्धालु दर्शन करने को पहुँचे, यानी प्रतिदिन 2 लाख 70 हजार से ज्यादा श्रद्धालु अयोध्या पहुंच रहे हैं। अयोध्या विश्व का सबसे बड़ा धार्मिक केन्द्र बनने जा रहा है। एक अनुमान के अनुसार प्रतिवर्ष 10 करोड़ तीर्थयात्री अयोध्या पहुँचेंगे।

अब यदि प्रतिदिन प्रति दर्शनार्थी (परिवहन-भोजन-प्रसाद-भेंट-उपहार) व्यय की राशि न्यूनतम 1000 रुपये आंकी जाये, तब भी औसतन 27 करोड़ से 30 करोड़ की अतिरिक्त आमदनी अयोध्या के पुष्प-प्रसाद-गिफ्ट का सामान बेचने वाले छोटे व्यापारियों से लेकर ऑटो, ई-रिक्शा, कार चालकों, जलपान-भोजनालय मालिकों और होटल व्यवसायियों के हाथों में पहुंचकर स्वरोजगार के अवसरों का सृजन करेगी। संक्षेप में विकसित अयोध्या धाम न केवल, देशी-विदेशी दर्शनार्थियों को 'आध्यात्मिक' मोक्ष का अवसर प्रदान करेगा अपितु क्षेत्रवासियों, प्रदेशवासियों और देशवासियों के लिए 'आर्थिक मोक्ष' के नये आयाम का विस्तार भी करेगा।

(लेखक अर्थशास्त्री हैं तथा राजस्थान उच्च शिक्षा के संयुक्त निदेशक पद से सेवानिवृत हुए हैं)

श्रीरामलला प्राण प्रतिष्ठा और मुस्लिम समुदाय

कट्टरता पर उदारता की जीत का प्रतीक बना राम मंदिर

रामस्वरूप अग्रवाल

देश का आम मुसलमान राम मंदिर निर्माण से प्रसन्न है। बहुत से मुसलमान बंधु ऐसे भी हैं जो आंदोलन में सहयोगी रहे। जहाँ आम मुसलमान राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा को लेकर तटस्थ दिखाई दिये वहीं कट्टरपंथी नेतृत्व द्वारा उन्हें डराने धमकाने की कोशिश भी की गई। इन्हीं सब पक्षों की पड़ताल करता यह लेख

प्राण प्रतिष्ठा समारोह में स्वामी अवधेशानन्द जी (आगे बाएं) के पीछे बैठे डॉ. इमाम उमेर अहमद इलियासी

श्रीरामजन्मभूमि प्राण प्रतिष्ठा समारोह के दौरान विशिष्ट अतिथियों के मध्य बैठे एक मौलाना सबके आकर्षण का केन्द्र बने हुए थे। ये थे भारतीय इमाम संगठन के मुख्य इमाम डॉ. इमाम उमेर अहमद इलियासी। डॉ. इलियासी भारत के 5 लाख इमामों तथा भारतीय मुसलमानों के धार्मिक एवं आध्यात्मिक मार्गदर्शक माने जाते हैं। **उन्होंने इस अवसर पर कहा, ''यह बदलते भारत की तस्वीर है। आज का भारत नवीन और उत्तम है। हम सब भारतीय हैं। हमें चाहिए कि अपने देश को मजबूत करें। हमारे लिए राष्ट्र सर्वोपरि है। बहुत दुश्मनी हो गई, बहुत लोग मारे गए, बहुत राजनीति हुई। अब हम सब को मिलकर एक होकर भारत और भारतीयता को मजबूत करना है।''**

प्राण प्रतिष्ठा में आमंत्रित

श्रीरामजन्मभूमि से संबंधित न्यायालय में चले मुकदमे के एक पक्षकार इकबाल अंसारी, मध्यप्रदेश के मुस्लिम भजन गायक एवं कवि अकबर ताज तथा जाफराबाद जिले के मोहम्मद हबीब तथा जैसलमेर (राजस्थान) के मांगणियार गायक पद्मश्री अनवर खान को भी निमंत्रण मिला। हबीब राममंदिर आंदोलन में शामिल थे तथा 1992 में 50 कारसेवकों के साथ अयोध्या गए थे।

वाराणसी के नजदीक दीनदयाल नगर जिले की रहने वाली विधि की छात्रा इकरा खान प्राण प्रतिष्ठा समारोह का न्यौता मिलने पर खुश दिखाई दे रही थी।

मोहम्मद हबीब

इकबाल अंसारी

इकरा ने राममंदिर के लिए समर्पण निधि संग्रह के दौरान 22 अन्य मुस्लिम परिवारों के साथ अपनी ओर से 11 हजार रुपए समर्पित किए थे। अपने हाथ पर 'राम' लिखवा लिया था। उस समय इकरा ने कहा था कि राममंदिर निर्माण को हिन्दू-मुस्लिम में नहीं देखा जाना चाहिए बल्कि रामराज्य के तौर पर देखा जाना चाहिए जिसकी परिकल्पना हमारे बुजुर्ग करते आ रहे हैं।

जैसलमेर का मुस्लिम मिरासी समाज

जैसलमेर के मुस्लिम मिरासी समाज के कलाकारों ने गीत-संगीत के माध्यम से श्रीराम का स्वागत किया। लोक कलाकार जखब खान का कहना था कि प्राण-प्रतिष्ठा को लेकर उनके समाज के लोगों ने गीत व भजन तैयार किए हैं। मुस्लिम राष्ट्रीय मंच की तरफ से राष्ट्रीय संयोजक सैय्यद रजा हुसैन रिजवी तथा गो-सेवा और पर्यावरण प्रकोष्ठ के राष्ट्रीय संयोजक मोहम्मद फैज खान उपस्थित रहे।

जयपुर के गुलमोहम्मद थे कारसेवा में

जयपुर के गुल मोहम्मद मंसूरी 1992 में अयोध्या कार सेवा करने गए थे। राममंदिर आंदोलन से जुड़ने के कारण उनके खिलाफ फतवा जारी कर इस्लाम से निष्कासित कर दिया गया था। गुल मुहम्मद जनसंघ के नेता रहे तथा जनसंघ के जनता पार्टी में विलय हो जाने पर जयपुर के जौहरी बाजार सीट से विधायक भी रहे। अब उम्र के 80वें बरस में चल रहे गुल मुहम्मद उन दिनों को याद कर भावुक हो जाते हैं।

कट्टरपंथी नेतृत्व ने डराया-धमकाया

जहां तक भारत के आम मुसलमानों का प्रश्न है, अधिकांशत: राममंदिर प्राण प्रतिष्ठा को लेकर तटस्थ दिखाई दिए। परंतु कट्टरपंथी मुस्लिम नेतृत्व इस अवसर पर मुसलमानों को डराने-भड़काने से बाज नहीं आया।

श्रीरामलला की प्राण प्रतिष्ठा के बाद एआईएमआईएम प्रमुख सांसद असदुद्दीन ओवैसी ने कहा, ''अफसोस यह है कि कोई 6 दिसम्बर की बात नहीं करता।'' उन्होंने कहा कि व्यवस्थित ढंग से साजिश के अंतर्गत बाबरी मस्जिद हमसे छीन ली गई। वो मेरी मस्जिद थी.. है और रहेगी।

एआईयूडीएफ नेता बदरुद्दीन अजमल ने असम की एक राजनीतिक रैली में मुसलमानों को 20 से 25 जनवरी के बीच ट्रेनों से यात्रा करने पर बचने को कहा था ताकि उन दिनों किसी अप्रिय घटना से बचा जा सके। मुस्लिम नेता के ऐसे वक्तव्य से देश-विदेश में गलत संदेश जाता है। श्रीराम जन्मभूमि के लिए हुए आंदोलनों यथा रामशिला पूजन, राम ज्योति रथयात्रा, कारसेवा आदि में लाखों हिन्दुओं की सहभागिता रही, परंतु ऐसे किसी भी अवसर पर एक भी मुस्लिम को परेशान किया गया हो या हाथ भी लगाया गया हो, इसका कोई उदाहरण नहीं है। तब इस प्रकार के वक्तव्य क्यों

दिए जाते हैं?

अयोध्या में किसी छुटभैये नेता ने मंदिर प्राण प्रतिष्ठा को लेकर भय का माहौल बनाने की कोशिश की बताई,

> रामममंदिर निर्माण को हिन्दू-मुस्लिम में नहीं देखा जाना चाहिए बल्कि रामराज्य के तौर पर देखा जाना चाहिए जिसकी परिकल्पना हमारे बुजुर्ग करते आ रहे हैं।
>
> *- **इकरा खान**, एलएलबी की विद्यार्थी, वाराणसी*

गुल मोहम्मद मंसूरी

परंतु अयोध्या की शिया वक्फ कमेटी के अध्यक्ष हामिद जाफर मीसम का कहना था कि जब सुप्रीम कोर्ट का फैसला आ गया तो उस पर किसी भी तरह का कोई विवाद नहीं है। मंदिर बन रहा है, इस पर मुसलमानों को कहीं भी आपत्ति नहीं है।

बाबरी समर्थक नारे व पथराव

कुछ कट्टरपंथी तत्व इस बार भी अपनी हरकतों से बाज नहीं आए। गाजियाबाद में वहाब ने अपने कुत्ते को रामनामी पहनाकर पूरे मोहल्ले में घुमाया तो दिल्ली की जामिया इस्लामिया में बाबरी के नारे लगाए गए। राजस्थान के बाड़मेर में भगवा झंडे को फाड़ा गया तो बिहार के दरभंगा में शोभायात्रा पर पथराव हुआ। गुजरात के वड़ोदरा में भी शोभायात्रा को निशाना बनाया गया।

इन सबके बावजूद देश के कई क्षेत्रों में मुसलमानों ने राममंदिर प्राण प्रतिष्ठा का स्वागत किया। बहुत से मुसलमान रामजन्मभूमि आंदोलन से भी जुड़े रहे।

राजस्थान के जोधपुर के निकट सांगासनी के यहां मोयलों की ढाणी है। यहां मुस्लिम कारीगरों ने 22 जनवरी के आयोजन के लिए दीपक बनाएं थे। ढाणी के करीब सभी मुस्लिम परिवार उत्साहित नजर आए। उत्तरप्रदेश के आगरा शहर में अल्पसंख्यक आयोग ने 5 हजार मुस्लिम परिवारों में दीपक वितरित किए। भाजपा का अल्पसंख्यक मोर्चा कई दरगाहों और मस्जिदों में दीपक जलाने के अभियान में लगा था। राष्ट्रवादी मुस्लिम मंच के सदस्यों ने इसे राष्ट्र का आयोजन बनाने के लिए मुस्लिम बस्तियों में सम्पर्क किया था।

मुस्लिम सद्भावना यात्रा पहुँची अयोध्या

मुस्लिम राष्ट्रीय मंच की ओर से 25 जनवरी से एक सद्भावना यात्रा लखनऊ से रवाना होकर 29 जनवरी को अयोध्या पहुँची। इन सभी मुस्लिम बंधुओं ने 30 जनवरी को श्री रामलला के दर्शन किए। इन लोगों ने अपने को सनातनी मुसलमान बताते हुए कहा कि श्रीराम तथा रामायण राष्ट्रीय एकता के प्रतीक हैं। लखनऊ से आए इन लोगों ने लखनऊ का नाम

जामिया इस्लामिया में नारे लगाते हुए

लक्ष्मणपुरी किए जाने तथा वहां लक्ष्मण जी की प्रतिमा लगाए जाने की मांग भी रखी।

राम गीत गाया

उरी बारामुला, जम्मू-कश्मीर की रहने वाली बतूल जहरा ने पहाड़ी भाषा में 'राम आएंगे' भजन गाया जो खूब वायरल हुआ। वायरल होने के बाद बतूल जहरा ने एक और वीडियो जारी किया जिसमें उन्होंने बताया कि वह चाहती है कि जम्मू-कश्मीर के लोगों का भी राम मंदिर में योगदान हो।

उन्हीं दिनों रतलाम की एक जेल का वीडियो भी आया जिसमें मुबारक खान अन्य कैदियो के साथ 'सजा दो घर को गुलशन सा' भजन गाते और रामभक्ति में झूमते नजर आए।

एक और वीडियो में लखीमपुर की छात्रा इमान अंसारी ने 'मेरी झोपड़ी के भाग आज खुल जाएंगे राम आएंगे' यह भजन गाया, जो वायरल हो रहा है।

राम मंदिर निर्माण के लिए मकराना के व्यवसायी मोहम्मद रमजान ने मार्बल की आपूर्ति की। उन्होंने बताया कि वह खुद को इस बात के लिए सौभाग्यशाली समझते हैं। इन्हीं की कंपनी के मुख्य शिल्पकार कई वर्षों से राम मंदिर में नक्काशी के काम में जुड़े हैं और उन्हें इस बात की खुशी है।

पीलीभीत (उ.प्र.) की मुस्लिम महिला हिना परवीन ने

भगवान राम के लिए 21.6 फीट लंबी बांसुरी बनाई जिसे विश्व हिन्दू परिषद के कार्यकर्ता अयोध्या लेकर गए। परवीन का दावा है कि यह विश्व की सबसे लंबी बांसुरी है। प्राण प्रतिष्ठा समारोह के बाद अयोध्या आने वाले श्रद्धालुओं के लिए भण्डारे हेतु भोजन तैयार करने की व्यवस्था जिस भूमि पर की गई वह अयोध्या के काजियाना मोहल्ला निवासी नूर आलम की है।

कोई चार वर्ष पूर्व जब अयोध्या के कारसेवकपुरम में रखे पत्थरों की सफाई का कार्य आरंभ हुआ था तो अयोध्या में रहने वाले अनीश खान और मोहम्मद अफजल जैसे कुछ मुस्लिमों ने भी अन्य लोगों के साथ वहां पहुँच कर सहयोग किया था। इस कार्यक्रम में उपस्थित विश्व हिंदू परिषद के एक पदाधिकारी ने कहा था- देश के मुसलमानों को सोचना चाहिए कि यदि अयोध्या के मुस्लिम चाहते हैं कि भव्य राम मंदिर बने तो शेष भारत के मुस्लिमों को भी उनका सहयोग करना चाहिए।

श्रीराम जन्मभूमि के लिए हुए आंदोलनों यथा रामशिला पूजन, राज ज्योति रथयात्रा, कारसेवा आदि में लाखों हिन्दुओं की सहभागिता रही, परंतु ऐसे किसी भी अवसर पर एक भी मुस्लिम को परेशान किया गया हो या हाथ भी लगाया गया हो, इसका कोई उदाहरण नहीं है।

लखनऊ शहर के रहने वाले आजम ने बताया कि वे मंदिर निर्माण के लिए शिला लेकर कई वाहनों के साथ अयोध्या गए थे। इस बार उन्होंने प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर लखनऊ की टेढ़ी पुलिया चौराहे पर मिठाइयां बांटी हैं।

वाराणसी जिले के मुस्लिम महिला फाउंडेशन को चलाने वाली सामाजिक कार्यकर्ता **डॉ.नाजनीन अंसारी ने प्राण प्रतिष्ठा पर कहा कि भगवान राम तो कण-कण में बसे हैं। वे हमारे पूर्वज हैं। हम अपना धर्म बदल सकते हैं लेकिन अपने पूर्वज नहीं बदल सकते।** नाजनीन 70 मुस्लिम महिलाओं के साथ संकट मोचन मंदिर गई तथा हनुमान चालीसा का पाठ किया।

वाराणसी में मुस्लिम छात्राओं ने हिंदू छात्राओं के साथ मिलकर 5 फीट का दीया बनाया जिसमें 2क्विंटल घी आ सकता है। हिमाचल प्रदेश की मंडी में हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई बंधुओं ने मिलकर एक आयोजन किया। यही समरसता देशभर में देखी गई। राममंदिर के लिए पादुकाएं बनाने में मुस्लिम कारीगर का योगदान, एक मुसलमान लड़की का अयोध्या में आयोजन के लिए पैदल रवाना होना, राजस्थान के गंगापुर सिटी में मौलवी का अक्षत आमंत्रण पर हर्षित होना कुछ अलग ही संकेत दे रहे थे। इससे लगा कि यह हिंदू-मुस्लिम मुद्दा नहीं है। कहा जा सकता है कि राम मंदिर कट्टरता पर उदारता की जीत बनता जा रहा है।

(लेखक राजकीय विधि महाविद्यालय के प्राचार्य रहे हैं। वर्तमान में पाथेय कण के संपादक हैं)

राम मंदिर एवं न्यायपालिका

डॉ. सुरेन्द्र जाखड़

श्रीराम जन्मभूमि के संबंध में न्यायालय में 1885 में प्रस्तुत पहले मुकदमे से लेकर सर्वोच्च न्यायालय द्वारा 9 नवम्बर, 2019 को दिए अंतिम निर्णायक निर्णय तक की न्यायिक यात्रा की सारगर्भित प्रस्तुति ।

अयोध्या में रामजन्मस्थली पर बाबरी मस्जिद का निर्माण मीर बांकी द्वारा 1529 में किया गया था। तब से लेकर 9 नवम्बर, 2019 उच्चतम न्यायालय के निर्णय आने तक यह स्थान हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच विवाद का केन्द्र बना रहा।

1856 – 57 में साम्प्रदायिक दंगे हुए। इसके बाद मस्जिद और राम चबूतरे के बीच ईंट की दीवार बनाई गयी, ताकि मस्जिद मुसलमानों के लिए और राम चबूतरा हिन्दुओं के लिए पूजा का स्थान बना रहे।

मंदिर बनाने के लिए 1885 में वाद

जनवरी 1885 में राम चबूतरे के मुख्य पुजारी महंत रघुबर दास ने एक दावा दायर कर मस्जिद के बाहरी प्रांगण में एक मंदिर बनाने की अनुमति मांगी। दावा बाद में खारिज कर दिया गया। जिला न्यायाधीश और न्यायिक आयुक्त ने कहा कि उनके पास यह दिखाने के लिए कोई दस्तावेज नहीं है कि वादी भूमि का मालिक था।

मस्जिद को हुए नुकसान की भरपाई हिंदुओं से

27 मार्च, 1934 को रामजन्मस्थली एवं बाबरी मस्जिद को लेकर साम्प्रदायिक दंगे फिर से भड़क उठे। जिसमें मस्जिद को हुए नुकसान को वसूलने के लिए ब्रिटिश सरकार ने वैष्णव हिन्दू पुजारियों एवं हिन्दू समुदाय पर जुर्माना लगाया।

मूर्तियां, विवादित स्थल कुर्क

22 दिसम्बर, 1949 की रात को बाबरी मस्जिद में भगवान राम की मूर्तियाँ देखी गई। मुस्लिम पक्ष ने स्थानीय संत बाबा अभिराम दास पर आरोप लगाया कि ये मूर्तियाँ उन्होंने रखी हैं। 23 दिसम्बर, 1949 को फैजाबाद और अयोध्या के सिटी मजिस्ट्रेट ने स्थिति को भांपते हुए दण्ड प्रक्रिया संहिता की धारा 144 लागू कर दी। इसके बाद अतिरिक्त सिटी मजिस्ट्रेट ने धारा 145 के तहत विवादित स्थल को कुर्क करने का आदेश दिया। भगवान राम को नगर निगम बोर्ड के अध्यक्ष प्रिया दत्त की रिसिवरशिप में रखा गया। मस्जिद के दरवाजों पर ताले लगा दिए गए।

पूजा जारी रखने के आदेश

फैजाबाद अदालत में इस संबंध में दो मुकदमे दायर किए गए-पहला गोपाल सिंह विशारद और दूसरा परमहंस रामचंद्रदास द्वारा। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकारी अधिकारी उन्हें पूजा के लिए विवादित स्थल के आन्तरिक प्रांगण में प्रवेश करने से रोक रहे है। उसी दिन यथास्थिति बनाए रखने और सेवा पूजा जारी रखने के लिए गोपाल सिंह विशारद के मामले में एक अंतरिम निषेधाज्ञा पारित की गई। 19 जनवरी, 1950 को विवादित स्थल से मूर्तियाँ हटाने से रोकने और पूजा में हस्तक्षेप करने से रोकने के लिए निषेधाज्ञा में संशोधन किया गया। मार्च 1951 में ट्रायल कोर्ट द्वारा इस निषेधाज्ञा की पुष्टि की गई। 26 मई,

1955 को इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने इस आदेश के खिलाफ अपील खारिज कर दी।

निर्मोही अखाड़े एवं सुन्नी बोर्ड का वाद

17 दिसम्बर, 1959 को हिन्दू सम्प्रदाय के निर्मोही अखाड़े द्वारा फैजाबाद सिविल न्यायालय में तीसरा वाद दायर किया गया, जिसमें दावा किया कि अखाड़े को जन्म स्थान का प्रबंध करने का पूर्ण अधिकार है।

18 दिसम्बर, 1961 को सुन्नी सेंट्रल बोर्ड व अयोध्या के 9 मुस्लिम निवासियों ने फैजाबाद के सिविल न्यायालय में वाद दायर किया, जिसमें उन्होंने कहा कि बाबरी मस्जिद का सम्पूर्ण विवादित स्थल सिर्फ एक मस्जिद थी, इसलिए उन्हें विवादित भूमि का कब्जा दिलाया जाए तथा मस्जिद से मूर्तियों को हटाने का निर्देश दिया जाए।

ढांचे के दरवाजे खोलने की दी गई अनुमति

1984 में विश्व हिन्दू परिषद ने रामजन्मभूमि आन्दोलन प्रारंभ करने के लिए एक समूह का गठन किया, जिनका लक्ष्य था विवादित स्थल पर राम मंदिर का निर्माण करना। 25 जनवरी, 1986 को अधिवक्ता उमेश चंद्र पाण्डेय ने फैजाबाद सत्र न्यायालय के समक्ष विवादित स्थल के दरवाजे खोलने की अपील की। उसी समय तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गाँधी ने तथाकथित मस्जिद को खोलने की अनुमति दी। 1 फरवरी को जिला न्यायाधीश ने हिन्दुओं को पूजा और दर्शन की अनुमति दी। 3 फरवरी को एक अंतरिम आदेश पारित किया गया, जिसमें अगले आदेश तक इस सम्पत्ति की प्रकृति में बदलाव न करने का निर्देश दिया गया।

विवाद उच्च न्यायालय में स्थानान्तरित

विरोध में मुसलमानों ने बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी का गठन किया। 1989 में भगवान श्रीरामलला और उनके जन्मस्थान श्रीरामजन्मभूमि की ओर से एक और वाद दायर किया गया, जिसमें दावा किया गया कि मूर्तियाँ और जन्मस्थान दोनों को न्यायिक इकाई के रूप में मान्यता दी जाए। 10 जुलाई, 1989 को सभी दावे इलाहाबाद उच्च न्यायालय को स्थानान्तरित कर दिए गए। इनकी सुनवाई के लिए 21 जुलाई, 1989 को 3 न्यायाधीशों की बेंच का गठन किया गया। उत्तर प्रदेश सरकार के अनुरोध के बाद उच्च न्यायालय में 14 अगस्त,1989 को विवादित स्थल पर यथास्थिति बनाए रखने का अंतरिम आदेश जारी किया गया।

उच्च न्यायालय ने 23 अक्टूबर, 2002 को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण को वैज्ञानिक जांच करने और ग्राउंड पेनेट्रेटिंग टेक्नोलॉजी या जियो-रेडियोलॉजी के साथ विवादित स्थल के सर्वेक्षण का आदेश दिया। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने 2003 में विवादित स्थल की खुदाई आरंभ की, जिसमें 10वीं सदी के हिन्दू मंदिर के अवशेष मिले।

लिब्रहान आयोग

25 सितंबर, 1990 को श्री लालकृष्ण आडवाणी ने मंदिर आंदोलन के लिए सोमनाथ (गुजरात) से अयोध्या तक रथ यात्रा प्रारंभ की। 6 दिसम्बर, 1992 बाबरी मस्जिद के विवादित ढांचे को कारसेवकों ने ढहा दिया। 16 दिसम्बर, 1992 को नरसिम्हा राव सरकार ने बाबरी मस्जिद विवादित ढांचे के विध्वंस तथा देश भर में हुए साम्प्रदायिक दंगों की जांच के लिए उच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त न्यायाधीश एम एस लिब्रहान के नेतृत्व में एक आयोग का गठन किया। आयोग ने अपनी रिपोर्ट 30 जून, 2009 को प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह को सौंपी।

विवादित स्थल से सटी हुई जमीन का अधिग्रहण

7 जनवरी, 1993 को सरकार ने अयोध्या में विवादित स्थल से सटी हुई जमीन का अधिग्रहण करने का अध्यादेश जारी किया। इसको उच्चतम न्यायालय में चुनौती दी गई। उच्चतम न्यायालय ने 1994 में **इस्माइल फारुकी बनाम भारत संघ** के अपने निर्णय में उक्त अधिग्रहण को संवैधानिक माना। न्यायालय ने यह भी माना कि किसी मस्जिद में नमाज पढ़ना इस्लाम का अभिन्न अंग नहीं है जब तक कि उस मस्जिद का इस्लाम में कोई विशेष महत्व न हो। 24 जुलाई, 1996 को इलाहाबाद उच्च न्यायालय की लखनऊ पीठ ने अयोध्या स्वामित्व विवाद में मौखिक साक्ष्य दर्ज करना आरंभ किया।

पुरातत्व सर्वेक्षण के आदेश

उच्च न्यायालय ने 23 अक्टूबर, 2002 को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण को वैज्ञानिक जांच करने और ग्राउंड पेनेट्रेटिंग टेक्नोलॉजी या जियो-रेडियोलॉजी के साथ विवादित स्थल के सर्वेक्षण का आदेश दिया। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने 2003 में विवादित स्थल की खुदाई आरंभ की। जिसमें 10वीं सदी के हिन्दू मंदिर के अवशेष मिले।

उच्च न्यायालय का निर्णय

30 सितंबर, 2010 को इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने अपने निर्णय में कहा कि हिन्दू और मुस्लिम पक्ष विवादित स्थल के संयुक्त धारक होने के कारण विवादित संपत्ति का एक-एक तिहाई हिस्सा भगवान श्रीरामलला विराजमान, सुन्नी वक्फबोर्ड और निर्मोही अखाड़े को आवंटित किया जाए।

उच्चतम न्यायालय में वाद एवं मध्यस्थता के प्रयास

9 मई, 2011 को उच्चतम न्यायालय

ने इलाहाबाद उच्च न्यायालय के फैसले पर रोक लगा दी। 21 मार्च, 2017 को अदालत के बाहर समाधान का सुझाव दिया। 11 अगस्त, 2017 को उच्चतम न्यायालय के तीन जजों की बेंच ने मामले की सुनवाई की। 14 मार्च, 2018 को न्यायालय ने कहा कि इस्माइल फारूकी के निर्णय पर पुनर्विचार की आवश्यकता है। 27 सितंबर, 2018 को इस्माइल फारुकी मामले पर पुनर्विचार से इन्कार कर दिया। 8 जनवरी, 2019 को मुख्य न्यायाधीश रंजन गोगोई ने मामले को 5 न्यायाधीशों की संविधान पीठ द्वारा सुने जाने की व्यवस्था दी। 26फरवरी, 2019 को उच्चतम न्यायालय ने पक्षों को मध्यस्थता के लिए भेजा। जिसमें पूर्व न्यायाधीश फकीर मोहम्मद इब्राहिम, श्री श्री रविशंकर और वरिष्ठ अधिवक्ता श्री राम पंचू शामिल थे। मध्यस्थता के प्रयास विफल रहने पर 6 अगस्त, 2019 को उच्चतम न्यायालय ने फिर से सुनवाई आरंभ की।

न्यायालय द्वारा रामलला के पक्ष में निर्णय

9 नवम्बर, 2019 को उच्चतम न्यायालय ने **एम.सिद्दकी बनाम महन्त सुरेश दास** के ऐतिहासिक निर्णय में कहा कि भगवान श्रीराम लला विराजमान को उक्त स्थल तथा मस्जिद निर्माण के लिए अयोध्या में और सुन्नी वक्फ बोर्ड को 5 एकड़ जमीन दी जाए।

(लेखक युवान विधि संस्थान, जयपुर के निदेशक हैं)

स्वयं रामलला ने लड़ा था मुकदमा

श्रीराम जन्मभूमि पर अपने मालिकाना हक को प्राप्त करने के लिए स्वयं रामलला ने न्यायालय में वाद (मुकदमा) प्रस्तुत किया था, जिसे सर्वोच्च न्यायालय ने मान्य किया।

विधिक व्यक्ति

कानून में दो प्रकार के व्यक्ति माने गए हैं। प्रथम-प्राकृतिक व्यक्ति जैसे कि मनुष्य, और दूसरा-विधिक व्यक्ति जैसे कि कोई कम्पनी, संस्था या देवता की मूर्ति। जो कानूनी अधिकार प्राकृतिक व्यक्ति को हैं, वे ही अधिकार विधिक व्यक्ति को प्राप्त हैं। इनमें अपने नाम से संपत्ति, जमीन आदि खरीदना-बेचना, संपत्ति धारणा करना, न्यायालय में वाद प्रस्तुत करना आदि शामिल हैं।

गुरु ग्रंथ साहिब बने विधिक व्यक्ति

29 मार्च, 2000 को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक समिति बनाम श्री सोमनाथ दास पर दिए गए ऐतिहासिक फैसले में, सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि गुरु ग्रंथ साहिब एक न्यायिक व्यक्ति हैं, इसलिए वह भक्तों द्वारा दान की गई संपत्ति को अपने पास रख सकते हैं और उसका उपयोग कर सकते हैं।

रामलला के सखा

देवता की मूर्ति को नाबालिग मानकर उसके संरक्षक या सखा (मित्र) के रूप में किसी व्यक्ति द्वारा मूर्ति का प्रतिनिधित्व किया जाता है। श्रीराम जन्मभूमि के मुकदमे में श्रीरामलला ने यह वाद सर्वप्रथम 01 जुलाई, 1989 को अपने प्रतिनिधि या सखा उच्च न्यायालय के सेवानिवृत न्यायाधीश श्री देवकीनन्दन अग्रवाल के माध्यम से प्रस्तुत किया था। 8 अप्रैल, 2002 को उनकी मृत्यु होने पर इतिहास के प्रोफेसर श्री टीपी वर्मा रामलला के मित्र नियुक्त हुए। श्री वर्मा के बाद श्री त्रिलोकनाथ पांडे ने यह दायित्व निभाया। सुप्रीम कोर्ट ने अपनी सुनवाई के दौरान श्री रामलला विराजमान के वकील के पारासन से पूछा था कि क्या जन्मस्थान को देवता माना जा सकता है? के. पारासन ने कहा कि हिंदू धर्म में किसी स्थान को पवित्र मानने और पूजा करने के लिए मूर्तियों की आवश्यकता नहीं है। नदियों और सूर्य की भी पूजा की जाती है।

शांतनु जुगतावत

सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय

सर्वोच्च न्यायालय में चल रहे मुकदमे में दो और पक्षकार थे- निर्मोही अखाड़ा तथा शिया वक्फ बोर्ड। न्यायालय ने निर्मोही अखाड़ा के दावे को खारिज कर दिया। कोर्ट ने कहा कि सुन्नी वक्फ बोर्ड को कहीं अन्य स्थान पर 5 एकड़ जमीन दी जाए।

(लेखक सर्वोच्च न्यायालय में अधिवक्ता हैं)

श्री देवकीनन्दन अग्रवाल

प्रोफेसर टीपी वर्मा

श्री त्रिलोकनाथ पांडे

श्रीराम जन्मभूमि के लिए संघर्ष

सन् 1528 से 1947 तक

पाथेय डेस्क

मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभु श्रीराम की स्मृति में उनके पुत्र कुश ने श्रीराम के जन्म स्थान पर एक भव्य मंदिर बनवाया। इस विशाल मंदिर में कसौटी (काले पत्थर) के 84 खंभे लगवाये गये थे। हजारों वर्षों तक हिन्दू समाज इसमें पूजा-अर्चना करता रहा। युगाब्द 2952 में (ईसा से 150 वर्ष पूर्व) ग्रीक हमलावर मिलिन्द (मिनाण्डर) ने अयोध्या पर अधिकार कर यह मंदिर ध्वस्त कर दिया। शुंग वंश के राजा घुमत्सेन ने तीन माह पश्चात् ही मिलिन्द पर आक्रमण कर उसे युद्ध में मार गिराया। किन्तु कुषाणों से लगातार युद्ध करते रहने के कारण वे मंदिर का जीर्णोद्धार नहीं करवा सके। लगभग पचास वर्ष बाद उज्जैन के महाराज विक्रमादित्य ने श्रीराम जन्मभूमि पर उन्हीं कसौटी के खम्भों पर पुन: भव्य मंदिर का निर्माण कराया।

मस्जिद पूरी नहीं बन सकी

युगाब्द 4629 (सन् 1528) में बाबर के सेनापति मीर बाकी ने अयोध्या पर आक्रमण किया। भीटी नरेश महताब सिंह से उसका भीषण युद्ध हुआ। प्रसिद्ध इतिहासवेत्ता कनिंघम के अनुसार, ''एक लाख तिहत्तर हजार हिन्दुओं की लाशें गिर जाने के बाद ही मीर बाकी तोपों से मंदिर गिराने में सफल हो सका।''

(लखनऊ गजेटियर - पृष्ठ 3)

मंदिर ध्वस्त करने के बाद उसी सामग्री से मीर बाकी ने राम जन्मभूमि पर एक मस्जिद बनानी शुरू की। उसी समय हंसवर के राजगुरु पंडित देवीदीन पाण्डे तथा उनके बाद हंसवर के ही राजा रणविजय सिंह ने मीर बाकी पर आक्रमण किये। राजा रणविजय सिंह की मृत्यु के पश्चात् रानी जयराज कुंवरि ने हमला बोला। बार-बार के युद्धों से मीर बाकी मस्जिद को पूरी नहीं बनवा सका और उसे भागना पड़ा। लेकिन अयोध्या मुगलों के अधिकार में ही रही।

हुमायूं के समय हिन्दू वीरों ने दस बार श्रीराम जन्मभूमि को मुक्त कराने के लिए अयोध्या पर धावा बोला। 29 दिसम्बर, 1530 को महारानी जयराम कुंवरि और संन्यासी महेश्वरानंद जी की सेना ने भीषण आक्रमण कर जन्मभूमि को मुक्त भी करा लिया किन्तु मुगलों ने फिर से हमला बोल कर अयोध्या पर अधिकार कर लिया।

युद्ध पर युद्ध

अकबर के समय भी भारतीय वीरों ने जन्मभूमि को मुक्त कराने के लिए बीस आक्रमण किये। इन हमलों का नेतृत्व मुक्ति संघर्ष में बलिदान हुए स्वामी महेश्वरानंद के शिष्य स्वामी बलरामाचार्य ने किया। परेशान होकर अकबर ने अधबनी मस्जिद के पास एक चबूतरा बनवाकर उस पर पूजा-अर्चना करने की छूट दे दी। औरंगजेब को वह चबूतरा भी सहन नहीं हुआ और उसको नष्ट कर देने के लिए उसने एक बड़ी सेना भेजी। उधर समर्थ गुरुरामदास के शिष्य बाबा विष्णुदास भी जन्मभूमि को पूरी तरह से मुक्त कराने के लिए साधुओं की फौज लेकर आगे बढ़े। औरंगजेब की सेना से साधु-सेना की तीस टक्करें हुईं।

विवादित ढांचा (फाइल चित्र)

आखिरी युद्ध में दशम गुरु गोविन्द सिंह भी सेना लेकर बाबा विष्णुदास की सहायता के लिए आ गये। कुंवर गोपाल सिंह व जगदम्बा सिंह भी आये। इस सम्मिलित सेना ने मुगलों की ऐसी दुर्गति की कि चार वर्षों तक औरंगजेब को अयोध्या की ओर देखने की भी हिम्मत नहीं हुई।

युगाब्द 4766 (सन् 1664) में मुगल सेना ने अचानक अयोध्या पर हमला किया। औरंगजेब पर लिखी पुस्तक 'आलमगीर' के अनुसार, ''इस अचानक हमले में दस हजार हिंदू मारे गये। चबूतरा और मंदिर जमींदोज कर दिया गया'' (पृष्ठ 630)।

जन्मभूमि पर फिर मुगलों का अधिकार हो गया। जन्मभूमि को मुक्त कराने के लिए लड़ा गया यह 64वां युद्ध था।

छत्रपति शिवाजी के उत्तराधिकारियों ने श्रीराम जन्मभूमि की मुक्ति के लिए काफी कोशिश की लेकिन कोई न कोई बाधा आती रही। अवध के नवाब सआदत अली के समय भारतीय सेनाओं ने अयोध्या पर पांच आक्रमण किये। नवाब नसीरुद्दीन हैदर के समय जन्मभूमि की मुक्ति के लिए तीन युद्ध हुए। नवाब वाजिद

अली के समय अयोध्या पर अधिकार के लिए दो युद्ध हुए।

युगाब्द 4959 (सन् 1857) में अवध के सभी रजवाड़ों ने इकट्ठे होकर नवाब पर हमला बोला। इस युद्ध में नवाबी सेना बुरी तरह हारी तथा जन्मभूमि पर पुन: हिंदुओं का अधिकार हो गया। तुरंत ही नष्ट किया गया चबूतरा तथा उस पर एक छोटा सा मंदिर बनवा दिया। अधूरे बने बाबरी ढाँचे को उस समय नहीं हटाया जा सका। तब तक ईस्ट इंडिया कम्पनी की काली छाया भारत पर पड़ चुकी थी। अंग्रेजों के खिलाफ स्वतंत्रता की पहली लड़ाई में हिंदू और मुसलमान कन्धे से कन्धा मिलाकर लड़े। उस समय मुस्लिम समाज ने श्री रामजन्मभूमि सहर्ष हिन्दुओं को सौंपने की सोची। देश का दुर्भाग्य कि 1857 का स्वतंत्रता संग्राम असफल हो गया। धूर्त अंग्रेजों ने राम जन्मभूमि पर समझौता करने वाले बाबा रामचरण दास तथा अमीर अली को 18 मार्च, 1858 का फाँसी पर चढ़ा दिया। इस तरह इस बार भी जन्मभूमि हिन्दुओं के हाथ से निकल गई।

युगाब्द 5014 (सन् 1912) में हिन्दू समाज ने फिर जन्मभूमि को छुड़ाने के लिये असफल धावा बोला। 23 साल बाद अयोध्या के साधु-समाज ने जोरदार आक्रमण कर जन्मभूमि को छुड़ा लिया तथा अखण्ड रामायण-पाठ शुरू कर दिया। लेकिन अंग्रेजी सेना ने साधुओं को वहां से हटा दिया। इस प्रकार सौ सालों में श्री राम जन्मभूमि की मुक्ति के लिये 76 बार युद्ध हुए तथा लाखों हिन्दुओं ने अपना बलिदान दिया।

अंग्रेजों की कुटिलता

1857 में ब्रिटिश राज के विरुद्ध छिड़ा प्रथम स्वतंत्रता आंदोलन वह पहला मौका था जब हिंदू मुसलमान मिलकर अंग्रेजों से लड़े। दोनों ने एकता की शक्ति को समझा और यह भी कि बाबरी दोनों के बीच विवाद की जड़ है। तब मुस्लिम नेता मौलाना अमीर अली ने मुसलमान से आह्वान किया था, फर्जे इलाही हमें मजबूर करता है कि हिंदुओं के खुदा रामचंद्र जी की पैदाइशी जगह पर जो बाबरी 'मस्जिद' बनी है, वह हम हिंदुओं को बाखुशी सुपुर्द कर दें, क्योंकि हिंदू-मुस्लिम नाइत्तेफाकी की सबसे बड़ी जड़ यही है। अंग्रेज यह बात भांप गए कि हिंदू- मुस्लिम एकता और इस देश के दिलों को जोड़ने वाली राम की शक्ति उनके लिए कितनी खतरनाक हो सकती है। सो, जन्म भूमि विवाद को समाप्त करने के लिए आवाज उठाने वाले मौलाना अमीर अली तथा हनुमान गढ़ी के महंत बाबा रामचरण दास को अंग्रेजों ने 18 मार्च, 1858 को अयोध्या में हजारों हिंदुओं और मुसलमानों के सामने कुबेर टीले पर फांसी दे दी।

श्रीराम जन्मभूमि के लिए संघर्ष

सन् 1947 के पश्चात्

पाथेय डेस्क

श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति संघर्ष में 23 दिसम्बर, 1949 (युगाब्द 5051) को एक नाटकीय मोड़ आया। उस रात को लगभग दो बजे बाबरी ढाँचे बीच वाले गुम्बद के नीचे श्रीराम लला की मूर्ति प्रकट हो गई। उस रात पहरेदारी कर रहे हवलदार अल्लाबक्श का कहना था कि रात को दो बजे उसे एक तेज रोशनी दिखाई दी तथा उसमें चार-पाँच साल का एक अत्यन्त सुन्दर बालक खेलता हुआ दिखलाई दिया। जिलाधीश श्री के.के. नायर को उसने बताया कि उस गैबी (जादुई) रोशनी में वह बेहोश हो गया तथा उसे जब होश आया तो सदर दरवाजे का ताला टूटा हुआ था और बेशुमार हिन्दू अन्दर घुसे भजन गा रहे थे।

श्रीराम लला के प्रकट होने का समाचार द्रुतगति से चारों और फैल गया। भारी संख्या में रामभक्त जन्मभूमि पर एकत्रित हो गये। इससे मुसलमान भी चौकन्ने हो गये। जिस ढाँचे में वर्षों से नमाज नहीं पढ़ी जा रही थी वहाँ से हिन्दुओं को हटाकर नमाज पढ़ने का मुस्लिम नेतृत्व ने फैसला किया। पुलिस में रपट हुई तथा नगर दण्डनायक ने पूरे परिसर को कुर्क कर गुम्बद के भीतर लोहे का दरवाजा लगा कर उस पर ताला लगा दिया। रामभक्तों को ताले में बन्द श्रीराम-लला की पूजा अर्चना की छूट दे दी गई। एक पुजारी को ताला खोलकर सेवा-पूजा की अनुमति दी गई। इसके खिलाफ मुसलमानों की ओर से न्यायालय में मुकदमा किया गया। हिन्दुओं की ओर से भी गोपाल सिंह विशारद तथा स्वामी रामचन्द्र परमहंस ने राम जन्मभूमि हिन्दुओं को सौंपने का 'वाद' दायर किया।

एक और महत्वपूर्ण मोड़ 22 दिसम्बर, 1982 को आया। इस दिन काशीपुर (उ.प्र.) में हिंदू जागरण मंच की एक विशाल जन-सभा में कई वर्षों तक उ.प्र. सरकार में मंत्री रहे स्वतंत्रता सेनानी श्री दाऊदयाल खन्ना ने अयोध्या, मथुरा और काशी के धर्मस्थल हिन्दुओं को सौंपने की माँग की। 6 मार्च, 1983 को मुजफ्फर नगर में हिन्दू जागरण मंच की ओर से आयोजित विराट हिन्दू सम्मेलन में तीनों जन्मस्थल मुक्त कराने का प्रस्ताव

पारित हुआ। सभा में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तब के सह सरकार्यवाह प्रो. राजेन्द्र सिंह जी (रज्जू भैया) तथा भारत के कार्यकारी प्रधानमंत्री रहे मंत्री गुलजारी लाल नन्दा भी मौजूद थे। इसके बाद श्री दाऊदयाल खन्ना ने तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी को एक पत्र लिखकर तीनों धर्मस्थल हिंदू समाज को सौंप देने का अनुरोध किया।

16 मई, 1983 को तत्कालीन सरसंघचालक बाला साहब देवरस ने विश्व हिन्दू परिषद के प्रमुख कार्यकर्ताओं को श्री राम जन्मभूमि की मुक्ति के लिये अभियान चलाने की जरूरत बताई। उसके बाद निर्णय हुआ कि तीनों धर्मस्थलों की मुक्ति के पहले चरण में अयोध्या के लिये जन-आन्दोलन की शुरुआत की जाय।

विश्व हिन्दू परिषद ने संभाला मोर्चा

नवम्बर, 1983 में निकली एकात्मता यात्राओं को मिले जन-समर्थन के बाद विश्व हिंदू परिषद ने विधिवत् रूप से श्रीराम जन्मभूमि की मुक्ति के लिये आन्दोलन चलाने का फैसला किया तथा श्री दाऊदयाल खन्ना से इसके नेतृत्व का अनुरोध किया। 7 व 8 अप्रैल को दिल्ली में आयोजित प्रथम धर्म संसद ने इस पर अपनी मुहर लगा दी।

18 जून, 1984 को अयोध्या में प्रमुख संत महात्माओं की बैठक में संतों ने श्री दाऊदयाल खन्ना को 'श्रीराम जन्मभूमि-मुक्ति यज्ञ समिति' का संयोजक तय किया। 21 जुलाई की बैठक में गोरक्ष-पीठाधीश्वर महन्त अवैद्यनाथ जी को 'मुक्ति यज्ञ समिति' का अध्यक्ष चुना गया।

आंदोलन के महत्वपूर्ण चरण

श्रीराम जानकी रथ यात्रा

श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति हेतु जन जागृति करने के लिए 23 अक्टूबर, 1985 से श्रीराम-जानकी रथ यात्राएँ निकाली गईं। 01फरवरी, 1986 को श्रीराम लला का ताला खुलने के न्यायालय आदेश तक उत्तर प्रदेश के 3 हजार 500 स्थानों पर इसके कार्यक्रम हुए।

सामूहिक संकल्प

श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति यज्ञ समिति तथा विश्व हिन्दू परिषद ने 5 अप्रैल, 1987 को अयोध्या पहुँच कर जन्मभूमि को मुक्त कराने के लिए सामूहिक संकल्प लेने का आह्वान किया।

हजारों लोगों इस दिन के लिए अयोध्या पहुँचे। विशाल जनसभा हुई। आंदोलन से जुड़े सभी बड़े संत-महात्मा मंच पर विराजमान थे। उपस्थित लोगों ने सरयू नदी की ओर दोनों हाथ उठाकर पवित्र सरयू को साक्षी मानकर संकल्प लिया।

रामशिला पूजन

1989 के प्रयाग महाकुंभ के अवसर पर धर्म संसद के तीसरे अधिवेशन में 01 फरवरी को एक लाख संत एवं भक्तों की जनसभा में सर्व सम्मति से निर्णय हुआ कि श्रीराम जन्मभूमि अयोध्या पर भव्य मंदिर निर्माण की नींव देवोत्थान एकादशी तद्नुसार 9 नवम्बर, 1989 को रखी जायेगी। यह भी निर्णय हुआ कि सम्पूर्ण देश में प्रत्येक दो हजार की जनसंख्या की शहरी बस्ती और गांवों से एक-एक श्रीराम शिला पूजी जाकर प्रत्येक हिन्दू से इसके निर्माण हेतु कम से कम सवा रुपया की राशि एकत्रित की जावे। इसके लिए कूपन जारी किए गए। यह कार्यक्रम 30 सितंबर, 1989 से 9 नवम्बर, 1989 तक हुआ। इसके लिए राजस्थान के 8 स्थानों पर विराट हिंदू सम्मेलन भी

आयोजित किए गए। देश के 2 लाख 75 हजार स्थानों पर रामशिला पूजन के सम्पन्न कार्यक्रमों में 6 करोड़ से अधिक लोगों की सहभागिता रही।

श्रीराम महायज्ञ

गांव-गांव में पूजित श्रीराम शिलाओं को प्रखंड स्तर पर एकत्र किया गया । वहां उनके स्वागत समारोह के साथ-साथ श्रीराम महायज्ञों के आयोजित किए गए। देशभर में कुल 4 हजार 251 यज्ञ हुए जिनमें 3 करोड़, 24 लाख, 13 हजार 745 लोगों ने भाग लिया। योजनानुसार अधिकांश स्थानों से श्रीराम शिलाएं 6 नवंबर, 1989 को अयोध्या पहुँची जहां संतों द्वारा उनका स्वागत किया गया।

शिलान्यास

प्रयागराज महाकुंभ के दौरान आयोजित धर्म संसद में 9 नवम्बर,1989 को प्रमुख संतों की उपस्थिति में भूमि की खुदाई हुई। 10 नवम्बर, 1989 को ठीक 12:30 बजे शिलान्यास

कार्यक्रम शुरू हुआ। पहली शिला बिहार के एक अनुसूचित जाति के बंधु श्री कामेश्वर चौपाल ने रखी।

श्रीराम ज्योति यात्रा

अरणी मंथन से उत्पन्न अग्नि से आरती के दीयों को प्रज्ज्वलित कर सबसे पहले रामजन्मभूमि अयोध्या स्थित श्रीरामलला की आरती उतारी गई। यह राम ज्योति काशी, मथुरा सहित देश के लगभग 250 धार्मिक तीर्थों को स्पर्श करते हुए इसे सात हजार प्रखण्डों तक पहुँचाया गया। इसके लिए निकाली गई विजय यात्राओं का नेतृत्व देश के प्रधान संत आचार्यों ने किया। इन यात्राओं में श्रीराम ज्योति के साथ प्रस्तावित श्रीराम जन्मभूमि मंदिर का चित्र भी रखा गया। श्रीराम ज्योति से मशालें प्रज्ज्वलित कर उसे गांव के मंदिर ले जाकर प्रतिष्ठित किया गया। 18 अक्टूबर, 1990 की दीपावली पर हर घर के दीए इसी ज्योति से जलाए गए।

1990 की कारसेवा- कारसेवकों का प्राणोत्सर्ग

1990 में मंदिर निर्माण के लिए पत्थर तराशने का कार्य शुरू हुआ। 23-24 जून को हरिद्वार के भारत माता मंदिर में मार्गदर्शन मंडल की बैठक में देवोत्थान एकादशी 30 अक्टूबर, 1990 से मंदिर निर्माण के लिए कार-सेवा की घोषणा की गई। कार सेवा रोकने के लिए उत्तर प्रदेश सरकार ने कड़ी सुरक्षा व्यवस्था की। प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री मुलायम सिंह ने अहंकारपूर्वक घोषणा की, कि अयोध्या में परिंदा भी पर नहीं मार सकता।

30 अक्टूबर को स्वामी वामदेव, श्री अशोक सिंहल एवं श्रीशचन्द दीक्षित के नेतृत्व में कारसेवक सारी बाधाएँ पार करते हुए जन्मभूमि के पास पहुँच गए और कार सेवा प्रारम्भ हो गई। कुछ उत्साहित कार सेवक ढांचे पर चढ़ गए और उस पर भगवा ध्वज फहरा दिया। हताश प्रशासन के आदेश से पुलिस द्वारा अंधाधुंध फायरिंग की गई। अनेक कार सेवक गोलीबारी में घायल हुए, कइयों ने राम काज के लिए अपना प्राणोत्सर्ग किया। इसके बाद 2 नवम्बर को पुलिस दल पुन: सक्रिय हुआ और कारसेवकों को घरों से निकाल कर गोली मारी गई। इस नरसंहार में बड़ी संख्या में कारसेवक बलिदान हुए।

श्रीराम चरण पादुका पूजन तथा कारसेवकों की भर्ती

1992 में देशभर में श्रीराम चरण पादुका पूजन के कार्यक्रम रखे गए। 26 सितंबर, 1992 को नन्दीग्राम में पादुका पूजन करने के साथ ही इसका शुभारंभ हुआ। 6 अक्टूबर, 1992 विजयादशमी तक पादुका पूजन के देशव्यापी कार्यक्रम हुए।

इस कार्यक्रम के माध्यम से 3 लाख कारसेवकों की भर्ती करने की योजना थी, परंतु देशभर में 10 लाख कारसेवक तैयार हो गए। यह श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन को बड़ी सफलता थी।

पुन: कारसेवा तथा ध्वस्त हुआ ढांचा

30 अक्टूबर,1992 की धर्म संसद में 6 दिसम्बर से कार सेवा पुन: शुरू करने की घोषणा हुई। लाखों की संख्या में कार सेवक अयोध्या पहुँचे। जन्मभूमि के पास सभा चल रही थी। अचानक कुछ लोग रेलिंग (बाड़) पार कर ढांचे में पहुँचे। ढांचा ढहा दिया गया और वहां रामलला का अस्थाई मंदिर बना। भारत के ललाट पर विदेशी आततायी तथा गुलामी का एक प्रतीक मिटा दिया गया।

निधि समर्पण अभियान

देशभर में राममंदिर हेतु निधि समर्पण अभियान 15 जनवरी, 2021 (मकर संक्रांति) से 27 फरवरी, 2021(माघ पूर्णिमा) तक चला। 5.5 लाख से अधिक नगर-ग्रामों के 12 करोड़ से अधिक रामभक्त परिवारों तक सम्पर्क कर राम मंदिर का संदेश पहुंचाया गया। राजस्थान में 38 हजार से अधिक स्थानों के एक करोड़ 8 लाख से ज्यादा परिवारों से सम्पर्क हुआ तथा राजस्थान क्षेत्र से 521 करोड़ रुपयों की समर्पण निधि प्राप्त हुई। ■

कार्यालय नगर निगम, अलवर

घनश्याम गुर्जर
महापौर, अलवर

नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

भजन लाल शर्मा
मुख्यमंत्री

संजय शर्मा
वन मंत्री, अलवर

झाबर सिंह खर्रा
शहरी विकास और स्वशासन विभाग मंत्री

'स्वच्छ भारत मिशन' के तहत आमजन से अपील

- शहर के नागरिकों से अनुरोध है अपने आस-पास सफाई बनाए रखें, सफाई के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाएं, और ज्यादा से ज्यादा पेड़-पौधे लगाएं, वातावरण स्वच्छ बनाएं।
- कचरे को सड़क एवं सार्वजनिक स्थानों पर ना फेंकें।
- सिंगल यूज प्लास्टिक एवं कैरी बैग का उपयोग करें।
- शहर को स्वच्छ एवं सुन्दर बनाने का संकल्प लें।

मेरा शहर मेरी पहचान

TANTIA GROUP
Transforming Lives

श्रीरामचंद्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारूणं ।
नवकलं लोचन, कंजमुख कर, कंज पद कंजारूणं ।।

सदियों की प्रतीक्षा के उपरांत
श्री अयोध्या जी में रामलला की
नयनाभिराम प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा की
समस्त भारतवासियों को
हार्दिक शुभकामनाएँ !

Tantia Group

Nestled in the heart of sriganganagar, the Tantia Group, is an umbrella organization comprising various institutions United under a common vision. Engaged in diverse fields such as healthcare, medicine, and social welfare, the group is dedicated to making a positive impact on society. The growth and expansion of Tantia Group are attributed to the visionary leadership to Dr. Mohit Tantia, guiding us towards continued success and service to the community.

JRT HOSPITAL

Sriganganagar (Rajasthan, India)

www.tantiauniversity.com | gmoffice@drsstantiamch.org | Toll Free : 1800 123 1981, 1800 123 10 10 20

FOR CORPORATE ENQUIRIES : 93747-93047

श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति महायज्ञ के लोकप्रिय गीत व नारे

डॉ. श्रीकांत

कविताएं, गीत, उद्घोष आंदोलनकारियों को प्रेरित भी करते हैं और उनमें जोश- उत्साह का संचार भी करते हैं। प्रस्तुत हैं श्रीराम जन्मभूमि संघर्ष के दौरान लिखे-गाये गए गीत-कविताएँ व उद्घोषों की एक बानगी

आन्दोलनों व अभियानों की पृष्ठभूमि में साहित्य काव्य-कविता-गीत, नारे व गजल आदि की विशिष्ट भूमिका रही है। तत्कालीन युगीन कवि, लेखक साहित्यकार आन्दोलनों के पक्ष में इस प्रकार की रचना करते रहे हैं। जैसे दिनकर जी ने स्वाधीनता आंदोलन के समय अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध लिखा-

'' सदियों से ठण्डी- बुझी राख सुगबुगा उठी,
मिट्टी सोने का ताज पहन इठलाती है।
दो राह समय के रथ पर घर्घर नार सुनो,
सिंहासन खाली करो कि जनता आती है।।''

इसी प्रकार जब अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति यज्ञ प्रारम्भ हुआ तो अयोध्या में आयोजित हिन्दू सम्मेलन में एक गीत गाया गया, सभी ने मुक्त कण्ठों से उसे दुहराया और कार्यक्रम में समा बंध गया। यह गीत उ.प्र. के शाहजहांपुर जिले के जलालाबाद (पं.रामप्रसाद बिस्मिल की जन्मभूमि) के कवि एवं कार्यकर्ता श्री विष्णु गुप्त जी 'विजिगीषु' ने लिखा था। आज भी यह गीत रामभक्तों की जिह्वा पर विराजमान है।

कोटि-कोटि हिन्दू जन का, हम ज्वार उठाकर मानेंगे।
सौगन्ध राम की खाते हैं, हम मंदिर भव्य बनायेंगे।।
हम मन्दिर वहीं बनायेंगे।। ध्रु।।
जन-जन के मन में राम रमे, हर प्राण-प्राण में सीता है।
कंकर-कंकर शंकर इसका, हर श्वाँस-श्वाँस में गीता है।।
जीवन की धड़कन रामायण, पग-पग बनी पुनीता है।
यदि राम नहीं है श्वाँसों में, तो प्राणों का घट रीता है।।
नर-नाहर श्री पुरुषोत्तम का, शुभ मन्दिर भव्य बनायेंगे।
सौगन्ध राम की खाते हैं... ।1।।
जो नीति अपावन शासन की, वह नीति तोड़कर मानेंगे।
जो सत्तामद में भरा हुआ, विष-कुम्भ फोड़कर मानेंगे।।
जो फैल रही है आँगन में, विष-बेल कुचलकर मानेंगे।
जो स्वप्न देखते बाबर के, अरमान कुचलकर मानेंगे।।
कितना पशुबल है दानव में, हम उसे तोलकर मानेंगे।।
सौगन्ध राम की खाते हैं....।।2।।

उस समय हाथरस (उ.प्र.) के एक प्रसिद्ध कवि श्री निर्भय हाथरसी जी ने अनेक कविता व गीत गाये। यथा-

तम्बू भी तनेगा तो तनेगा धूम धाम से।
ढाँचा भी ढहेगा तो ढहेगा धूम धाम से।।
मन्दिर भी बनेगा तो बनेगा धूम धाम से।
राम जी का मन्दिर बनेगा धूम धाम से।।
चल मेरे बप्पा, चल मेरी मय्या
चल मेरी बहना, चल मेरे भय्या
हमें अयोध्या जाना है मन्दिर वहीं बनाना है।।

रामशिला पूजन के समय रामायण धारावाहिक के संगीतकार स्व.श्री रवीन्द्र जैन ने एक गीत गाया-

'सवा रुपय्या दे दे भय्या, राम शिला के नाम को।
राम के मन्दिर में लगि जायगो, पत्थर तेरे नाम को।।

रामायण धारावाहिक में श्री रवीन्द्र जैन द्वारा गाया गया एक प्रस्थान गीत भी उस समय खूब प्रसिद्ध हुआ-

''पापियों के नाश को, धर्म के प्रकाश को,
राम जी की सेना चली।
हर-हर महादेव... हर-हर महादेव... हर-हर महादेव
जय भवानी, जय भवानी, जय भवानी
पाप अनाचार में, घोर अंधकार में, एक नयी ज्योति चली।
श्री राम जी की सेना चली...
निशिचर हीन करेंगे धरती, यह प्रण है श्रीराम का।
जब तक काम न पूरण होगा, नाम नहीं विश्राम का।
उसे मिटाने चले कि जिसका, मंत्र वयं रक्षाम का।
समय आ चला निकट राम और रावण के संग्राम का।।
तीन लोक धन्य हैं, देवता प्रसन्न हैं,
आज मनोकामना फली।।1।।
श्री राम जी की सेना चली...
रामचन्द्र जी के संग लक्ष्मण, कर में लेकर बाण चले।
लिये विजय विश्वास हृदय में, संग वीर हनुमान चले।।

एक बार जो निकले तो पीछे मुड़कर नहीं देखा...

सेना संग सुग्रीव नील-नल, अंगद छाती तान चले।
उसे बचाये कौन कि जिसका, वध करने भगवान चले।।
आगे रघुनाथ है, वीर साथ-साथ है,
एक से एक बली।। 2।।
श्री राम जी की सेना चली।।...
प्रभु लंका पर डेरा डालें, कब महासागर पार हो।
कब हो सफल अभियान हमारा, कब सपना साकार हो।
पाप अनीति मिटै धरती से, धर्म की जय-जयकार हो।
कब हों विजयी राम हमारे, कब रावण की हार हो।
राम जी से आस है, राम में विश्वास है,
राम जी करेंगे भली।। 3।।
श्री राम जी की सेना चली।।...

संघ में होने वाले एकल गीतों में श्री राम जन्मभूमि की बात साथ-साथ चलती रही-

'स्वाधीन देश तो हुआ मगर, रावी की शपथ न पूरी है।
जग में हिन्दू का मान कहाँ, आजादी अभी अधूरी है।
ये राम-कृष्ण के जन्म-स्थल,अपमानित हैं अब मुक्त नहीं।।
अपमानित काशी-विश्वनाथ फिर भी क्यों हैं हम सुप्त अभी।
आलस को छोड़ उठो जागो, सरयू की धार बुलाती है।।
गंगा की धार बुलाती है, यमुना की धार बुलाती है।
स्वाधीन देश के तरुण उठो, भारत माँ तुम्हें बुलाती है।
तन पर गहरे हैं घाव लगे, पीड़ा से पड़ी कराहती है।।''

कवि हरिओम पंवार जी ने उस समय की राजनीति व सरकारों पर प्रहार करते हुए गाया कि-

राम जन्मभूमि का मसला सिर्फ तुम्हारी कमजोरी है।
प्रश्न बाबरी मस्जिद का क्या चोरी सीना जोरी है।।
आज शहाबुद्दीन बुखारी जिन्ना के भी बाप हो गये।
देश के नेता बने शिखण्डी सबके सब अभिशाप हो गये।।
सावधान मेरे देश के लोगों, नेताओं से काम न होगा।
यदि भारत में राम न होगा, हरगिज हिन्दुस्थान न होगा।।
राजनीति के दावानल ने सारा भारत जला दिया है।
जो अंग्रेज नहीं कर पाये, तुमने करके दिखा दिया है।।

उस समय एक सीडी (तब की कैसेट) में बजा गीत भी बहुत प्रसिद्ध हुआ-

आया समय जवानो जागो, अवधपुरी अभियान करो।
शपथ तुम्हें है रामचन्द्र की, मन्दिर का निर्माण करो।।
शंखनाद हो रहा जवानों! रामादल तैयार खड़ा।
पांचजन्य फूंका ऋषियों ने, गाण्डीव टंकार रहा।।
दुर्भि सन्धि दुष्टों से करते, उनके सपने तोड़ दो।
राजनीति के पासे पलटो, कुटिल नीति को तोड़ दो।।
राजनीति के समरांगन में, बढ़कर प्रबल प्रहार करो।।1।।
शपथ तुम्हें है...
राम की तुलना अन्यायी से अपमानों की सीमा है।
जन्मभूमि को ढेर बताते पागलपन की सीमा है।।
रचो स्वांग मत न्यायालय का, न्याय का अभिनय बंद करो।
रघुकुल भूषण रामचन्द्र की, जन्म-भूमि स्वच्छन्द करो।।
बातों से यदि नहीं मानते तो सीधी तलवार करो।। 2।।
शपथ तुम्हें है...
गरज उठो सौमित्र आज फिर, भारत वीर विहीन नहीं।
जन्मभूमि पर झण्डा गाढ़ो, अंगद हो हनुमान तुम्हीं।।
अरि का वक्ष विदार विदेशी, निष्ठा के सौ-खण्ड करो।
तन हो जाये खण्ड-खण्ड,मन्दिर की नींव अखण्ड करो।।
उनकी पावन जन्मभूमि पर मंदिर का निर्माण करो।। 3।।
शपथ तुम्हें है...

गोलीकाण्ड के पश्चात् कुछ गजलें भी प्रकाश में आयी थीं। इनके स्टीकर्स भी लगाये गये थे।

- अब हवाएँ ही करेंगी, रोशनी का फैसला।
  जिस दिये में तेल होगा, वह दिया रह जायेगा।।
- दमन से कुचली अयोध्या, तू उदास न हो।
  हम अपने कफन ले, फिर वहीं से गुजरेंगे।।

इन सब बातों का सुपरिणाम 22 जनवरी, 2024 को अयोध्या में प्राण-प्रतिष्ठा के रूप में साकार हो गया। करोड़ों देशवासियों के नेत्र प्रसन्नता से सजल हो उठे। हृदय भर आये। वायुमण्डल ने भी सराहना के गीत गाये कि आज प्रभु राम अपने घर आये।

नारों ने दिया आंदोलन को नया स्वरूप

इस आन्दोलन में जहाँ इन गीतों ने धूम मचायी, वहीं अनेक नारे भी ऐसे थे जिसने देश की उठती जवानी में जोश व उन्माद भरा जिसके कारण इस आन्दोलन को एक क्रांति जैसा स्वरूप मिल गया। संघर्ष के लिए नयी पीढ़ी क्या आबाल-वृद्ध-नर-

राजस्थान में उन दिनों प्रचलित कुछ अन्य नारे

- *कसो लंगोटो, ले लो सोटो*
- *अब अयोध्या जाणो है, मंदिर वहीं बनानो है।*
- *यह देश राम का है, परिवेश राम का है।*
  जन्मभूमि पर मंदिर बने, आदेश राम का है।।
- *राम लला की पूजा में सर हथेली पर होगा।*
- *अमर शहीदो शपथ तुम्हारी मंदिर वहीं बनेगा।।*
- *तेल लगाओ डाबर का, वंश मिटाओ बाबर का।*

नारी सभी को तन-मन-धन पूर्वक नहीं, तो मानसिक रूप से सबल बना दिया-

- राम लला हम आयेंगे, मन्दिर वहीं बनायेंगे।।
- जहाँ राम ने जन्म लिया था, मन्दिर वहीं बनायेंगे।।
- राम लला के वास्ते, खाली कर दो रास्ते।।
- जिस हिन्दू का खून न खौला,खून नहीं वह पानी है।
  जन्मभूमि के काम न आये, वह बेकार जवानी है।।
- जो न चुकाये कर्ज देश का, भारत माँ का, धरती का।
  भारत माँ का पूत न होगा, होगा किसी कपूती का।।
- संकल्प अभी अधूरा है। मन्दिर को करना पूरा है।।
- याचना नहीं अब रण होगा। संघर्ष बड़ा भीषण होगा।।
- जो हिन्दूहित की बात करेगा। वही देश पर राज करेगा।।
- लाठी गोली खायेंगे, मन्दिर वहीं बनायेंगे।।
- रक्त देंगे-प्राण देंगे। मन्दिर का निर्माण करेंगे।।
- तीन नहीं तो तीन हजार। मन्दिर का होगा उद्धार।।
- गाँव-गाँव जायेंगे। मन्दिर की अलख जगायेंगे।।
- राम शिला की पूजा कर लो, पूजा है भगवान की।
  जय बोलो श्रीराम की, जय बोलो हनुमान की।।
- अयोध्या तो झाँकी है। मथुरा काशी बाकी है।।
- बच्चा-बच्चा राम का। जन्मभूमि के काम का।।
- कारसेवा आज करो, वक्त की आवाज सुनो।
  देश है पुकारता, पुकारती माँ भारती।।
- खून से तिलक करो, गोलियों से आरती।।

(कारसेवकों पर गोली चलने के उपरान्त)

(लेखक संघ के राजस्थान क्षेत्र बौद्धिक शिक्षण प्रमुख हैं)

तुमको सौ बार बधाई है

श्री बलवीर सिंह करुण की जिस कविता के एक अंश को साध्वी ऋतंभरा जी अपने प्रवचन में उपयोग करती रही हैं, उस पूरी रचना को यहां प्रस्तुत किया जा रहा है

■ ***बलवीर सिंह करुण***

लो नमस्कार भूगोलों के, अभिनंदन लो इतिहासों के
लो सात सागरों के प्रणाम,पद वंदन लो आकाशों के,
तुमने ही पूरी अयोध्या की खोई गरिमा लौटाई है।
ओ समर बाँकुरों राघव के, तुमको सौ बार बधाई है।।

जो कील अवध के सीने में सदियों से गड़ी कसकती थी
लज्जित थी पीढ़ी पर पीढ़ी, जीवन को शाप समझती थी
तुमने झटके से खींच उसे फेंका सरयू के पानी में
फिर जग ने देखा एक बार घहराता ज्वार जवानी में
जो तेवर नहीं जानते थे, निर्भीक प्रबल भूचालों के
था जिनका परिचय नहीं हुआ, इन महाकाल के कालों से
हम केवल नहीं भजनिये हैं, यह बात उन्हें समझाई है।
ओ समर बाँकुरो राघव के, तुमको सौ बार बधाई है ॥

जिनके लोहू में गर्मी हो,पौरुष भी जिनका जिन्दा हो
निज धर्म प्राण से प्यारा हो, क्यों कौम वह शर्मिंदा हो
लज्जित हों जिनको पुरखों के गौरव का तनिक खयाल न हो
लज्जित हों वे कायर जिनके शोणित में उठा उबाल न हो
वह कुंभ पाप का हमने ही, हाँ-हाँ हमने ही फोड़ा है
वह अशुभ बाबरी का ढाँचा, हाँ-हाँ हमने ही तोड़ा है
जो शपथ उठाई थी हमने, पूरी करके दिखलाई है।
ओ समर बाँकुरो राघव के, तुमको सौ बार बधाई है।

जिसके हित राम पराये हों, जिसको बाबर ही प्यारा हो
जो वन्दे मातरम् का दुश्मन, गौमाता का हत्यारा हो
उसकी तो पूरी पीढ़ी से, अब दो-दो हाथ करेंगे हम
गद्दारों से अब गोली की भाषा में बात करेंगे हम
निर्णायक घड़ी आन पहुँची,तय करो कि किसके काम के हो
तय करो कि किसके बेटे हो, बाबर के हो कि राम के हो
मथुरा काशी अब भी बाकी,यह तो पहली अंगड़ाई है।
ओ समर बाँकुरो राघव के,तुमको सौ बार बधाई है ॥

- 67, केशव नगर, अलवर (राज.)

मेरी स्मृतियों में श्रीराम जन्मभूमि संघर्ष

डॉ. संदीप रांकावत

श्रीराम जन्मभूमि के संघर्ष दौरान रामशिला यात्रा के समय स्वयं लेखक एक बाल स्वयंसेवक थे। पिताजी संघ के दायित्ववान कार्यकर्ता होने के नाते लेखक का भी संपूर्ण आन्दोलन के साथ निकट का संबंध रहा। इस आंदोलन के बारे में किशोरावस्था की ओर बढ़ते उस बाल स्वयंसेवक के मनोभावों को एक कहानी के रूप में लेखक ने बहुत ही खूबसूरती के साथ संजोया है

बापूजी की बैंक में नौकरी होने के कारण पूरे देश भर में घूमने के लिए सपरिवार यात्रा टिकट मिला करते थे, तो हमें बापूजी देश के किसी क्षेत्र विशेष के भ्रमण के लिए ग्रीष्मावकाश में हर चार वर्ष में लगभग दो माह की अवधि के लिए लेकर जाते थे। राष्ट्रीय और धार्मिक विचारों का परिवार होने के कारण हमारा यह यात्रा कार्यक्रम पर्यटन कम और तीर्थाटन ज्यादा होता था, ऐसा कह सकते हैं। यह वर्ष 1989 के ग्रीष्म अवकाश की बात है, जिस वर्ष हम उत्तर प्रदेश और वर्तमान उत्तराखंड आदि की यात्रा पर थे। तब मेरी आयु साढ़े सात, पौने आठ वर्ष हो चुकी थी तो कुछ-कुछ पक्की यादें बनना प्रारंभ हो गई थीं । उस वर्ष सभी पड़ावों में एक विशेष पड़ाव था श्री अयोध्या जी का। अच्छे से याद है कि अयोध्या की उस यात्रा में सूखी हुई काई लगे हुए तीन काले गुंबद जो दूर से किसी बिना रखरखाव के परिसर का होने का संकेत दे रहे थे, जिसमें सफेद चूने से पुते हुए खंबों के बीच होकर गुंबद के नीचे के बड़े हॉल में, रेलिंग के पास खड़े होकर जीवन में पहली बार राम जन्मभूमि पर रामलला के दर्शन का सौभाग्य मिला था। आजकल जैसा मंदिरों में दिखावा और साज सज्जा का जोर रहता है ऐसा कुछ भी वहां नहीं था। उस परिसर में एक अलग ही खामोशी थी और इस खामोशी में सभी भक्त दर्शन करते हुए एक लकड़ी के मंदिर के मॉडल को भी हाथ जोड़ रहे थे। मंदिर के मॉडल को इतनी आस्था से हाथ जोड़ते देख कर वहां मेरे बाल मन में पहला प्रश्न उठा कि मंदिर में तो खड़े हैं पर यहां पर हाथ क्यों जोड़ रहे हैं, जिसमें कोई भगवान नहीं है? यह प्रश्न हमने अपने बापूजी को पूछ लिया क्योंकि हमारे लिए तो जन्म से वही गूगल रुपी ज्ञान स्रोत रहे हैं। तब उन्होंने बताया कि जहां हम खड़े हैं इसे बाबरी ढांचा कहते हैं और यह जो लकड़ी के मंदिर का मॉडल है, यह एक संकल्प है जिसे इस ढांचे के स्थान पर बनाना था। इस ढांचे को मुस्लिम शासक बाबर ने राम मंदिर तोड़कर बनाया है और आज यह हम सभी हिंदुओं पर कलंक है। ऐसे ही कुछ पक्की स्मृतियां बनाते हुए हम घर आ गए।

आने के थोड़े ही समय बाद जोधपुर में श्री रामज्योति तथा श्री रामशिला पूजन के कार्यक्रम होने लगे। मां और बापूजी दोनों ही उन कार्यक्रमों में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेते थे। हमें घर पर अकेला ना छोड़े, इस हेतु से मैं 8 वर्ष का और बड़ी बहन जो उस समय 10 वर्ष की थी को भी अधिकतम समय ऐसे कार्यक्रमों में अपने साथ रखते थे। कार्यक्रमों को गति और ऊर्जा देने के लिए देशभर से संत महात्माओं के प्रवास जोधपुर में भी होते रहते थे। इसी क्रम में आचार्य धर्मेंद्र जी और साध्वी ऋतंभरा जी को भी उस अल्प आयु में प्रत्यक्ष रूप से सुनने का कई बार सुअवसर मिला था।

श्री राम-ज्योति के समय कभी मेहरानगढ़ से, तो कभी किसी अन्य मंदिर से कार्यक्रम की जब शुरुआत होती तो भोंपू लगी टैक्सी के पीछे-पीछे राम नाम के नारे लगाने का और सभी को प्रसाद बांटने का एक अलग ही आनंद हुआ करता था। श्री रामशिला पूजन की सजी-धजी हाथठेला वाहिनी और उसमें लगे भोंपू पर ऐसे ही भाषण और भजन लगा कर चलती हुई टोलियां हुआ करती थी। हम भी ऐसी ही टोलियों का हिस्सा हुआ करते थे। रामशिला के उस रथ को हाथों से ठेलते हुए ले जाकर हम बड़े उत्साहित होते थे। माइक पर बोलकर नारे लगाकर जो आनंद मिलता था उसके आगे तो सारे आनंद फीके थे । हरिओम पंवार जी की कविताएं, उमा भारती जी, आडवाणी जी, ऋतंभरा जी, आचार्य धर्मेंद्र जी, अशोक जी सिंघल आदि कितने ही लोगों की नस-नस में ऊर्जा भर देने वाली ऑडियो कैसेट के आदान-प्रदान समविचारी परिवारों में होते रहते थे और उन्हें सुनने का भी अवसर मिलना बहुत सहज था ।

मेरा उस समय शाखा में खेलने जाना नियमित था। घर पर राष्ट्र कार्य करने वाले लोगों का नियमित रूप से संपर्क था। वर्ष 1990 के अंत तक आते-आते इस क्रांतिकारी राम आंदोलन में एकदम से बड़ी तेजी आ गई थी। उन दिनों विश्व हिंदू परिषद, दुर्गा वाहिनी तथा बजरंग दल के दायित्ववान अधिकारियों, कार्यकर्ताओं का भी कार्य की गति बढ़ाने के लिए घर आना जाना बढ़ गया था। दीवारों पर नारे लिखना, घर-घर में ''रामलला हम आएंगे मंदिर वहीं बनाएंगे, बच्चा बच्चा राम का जन्म भूमि के काम का, कारसेवा में जुटने के आह्वान'' के स्टीकर वितरण का, साहित्य वितरण का काम बहुत प्रभावी प्रकार से हो रहा था और अपने मां बापूजी के माध्यम से हमें भी उसे देखने का समीप से अवसर मिल रहा था। मुझे जो गर्व से भरता था वो उस स्टीकर पर बनी हुई राम मंदिर के मॉडल की तस्वीर थी, जिसे कुछ समय पूर्व प्रत्यक्ष रूप से देखने का मौका मिला था और यादें एकदम ताजा और पक्की थीं। अपनी कक्षा के सहपाठियों को बताने में भी बड़ा आनंद आता था कि यह मॉडल आंखों से अयोध्या जाकर के स्वयं देख कर आए हैं। घर पर आने वाले

अखबार, पत्रिकाएं और विशेष कर पाञ्चजन्य की फोटो देखा करते थे तथा उसके नीचे कैप्शन में उसकी डिटेल पढ़ा करते थे। विश्व हिंदू परिषद ने कारसेवकों को अयोध्या पहुंचने का आह्वान कर दिया था। इनमें मुख्य ख़बर के रूप में एक हेडिंग बहुत प्रमुखता से छपा होता था जो आज भी याद है कि विहिप की प्रस्तावित कार सेवा में ''अयोध्या में परिंदा भी पर नहीं मार सकता'', ऐसा सरकार कह रही है।

30 अक्टूबर और 2 नवम्बर 1990 को कारसेवा के लिए पूरे देश भर से कार सेवक अयोध्या में जुटना प्रारंभ हो गए थे। इसके संबंध में घर आने वाले अखबार में फोटो सहित समाचार भी पढ़ने को मिलते थे, जिसमें अयोध्या की गलियों के बाहर लगे हुए बैरिकेड और चाक चौबंद सुरक्षा व्यवस्था के फोटो हुआ करते थे। अयोध्या किसी पुलिस छावनी की तरह हो गई थी। तय समय पर कारसेवा होने और कारसेवकों पर गोली चलने का समाचार भी मिला, इनके बीच ढांचे के काले गुंबदों में से बीच वाले गुंबद पर लहरा रहे भगवा ध्वज का चित्र भी छपा हुआ था। मानो यह भगवा ध्वज फहराते हुए कह रहा है कि ''जहां परिंदा भी पर नहीं मार सके ऐसी पुलिस व्यवस्था के बीच कारसेवकों ने अपने प्राणों की आहुति देकर जन्मभूमि जीत ली।'' इन्हीं के बीच जोधपुर के प्रोफेसर महेंद्रनाथ जी अरोड़ा और युवा सेठाराम जी परिहार के भी इस गोलीबारी में प्राण न्योछावर करने का समाचार इनके छाया चित्रों के साथ छपा था।

(ढांचा ध्वस्त होने से पूर्व का फाइल चित्र)

कोठारी बंधु और अन्य वीरों के बारे में भी घर में बात होती थी। बापूजी प्रोफेसर महेंद्रनाथ जी अरोड़ा के पार्थिव शरीर के जोधपुर पहुंचने के बाद उनके दर्शन कर, अंतिम संस्कार में भी जाकर आए थे। परिवार में एक क्षोभ और जन्म भूमि के लिए प्राणों की आहुति देने वाले कारसेवकों के लिए श्रद्धा का भाव था।

पूरे देश भर में कारसेवकों पर हुए अत्याचार पर गुस्सा उबल रहा था। इसी क्रम में विश्व हिंदू परिषद ने अयोध्या में देश भर से महिलाओं द्वारा कारसेवा की योजना भी बनाई । जोधपुर से भी ऐसे ही महिलाओं का जत्था जाए, इस पर संपर्क और कार्य चल रहा था। इसी संदर्भ में मां से भी चलने को कहा गया होगा, उन्होंने बापूजी और हम बच्चों से बात कर जवाब देने की बात बताई थी। मुझे अच्छे से याद है कि शाम के भोजन के बाद बापूजी ने हम दोनों भाई बहिन जो 9 वर्ष और 11 वर्ष की आयु को पूर्ण कर चुके थे, उनसे मां के अयोध्या भेजे जाने के बारे में पूछा। वहां पर हुई गोलीबारी और खतरे के बारे में भी हमें बताया। बाल मन में देश और धर्म के लिए सर्वस्व अर्पण करने का भाव प्रारंभ से ही कूट-कूट कर भरा हुआ था, तो हमने सहज भाव से ही अपनी सहमति दी। इस प्रकार मां भी जोधपुर से जाने वाली सात महिलाओं में से एक थीं, जिसमें वर्तमान में मां के अतिरिक्त सिर्फ सूर्यकांता जी व्यास पूर्व विधायक ही जीवित हैं।

कुछ दिनों के अयोध्या प्रवास के बाद मां सकुशल घर लौट आई और घर में एक उत्सव का वातावरण रहा। हम उनके अनुभव सुनते थे, जहां-जहां गोली बरसाई गई और कारसेवकों पर अत्याचार हुए उसे देखने के दृश्य भी वह बताती थीं। विभिन्न राष्ट्रीय पत्र पत्रिकाओं ने कारसेवा के अगले चरण में महिलाओं की भूमिका से संबंधित समाचार चित्रों सहित प्रमुखता से छापे। सिर पर भगवा पट्टी और नारे लगाते हुए मां सहित महिला समूह के फोटो भी मुख्य पृष्ठ पर दो पत्रिकाओं में छपी थीं। एक वीर माता की संतान होने का भाव ऊर्जावान कर देता था। अयोध्या से आते समय मां एक छोटा एल्बम भी लायी थीं। जिसमें वीरगति को प्राप्त हुए कारसेवक, सरयू के पुल पर पुलिस के अत्याचारों की गवाही देते हुए बिखरे हुए जूते चप्पल - सामान, सरयू के जल पर तैरती कारसेवकों की मृत देह, सरयू किनारे निर्वस्त्र-कटे क्षत विक्षत-अधजले कारसेवकों के पार्थिव शरीर, सरयू के तट पर कारसेवकों की जलती चिताएं आदि कितने ही चित्र अंतरात्मा को झकझोर रहे थे। इसी समय वीडियो कैसेट के माध्यम से भी जन्मभूमि के संघर्ष की कथाओं को समाज में कार्यकर्ताओं के माध्यम से दिखाया जा रहा था। सामान्यत: रात्रि 8 बजे के बाद कुछ परिवारों और कार्यकर्ताओं के समूह में वीसीआर और टीवी के माध्यम से ऐसी जागृति लाई जा रही थी, जिसमें हम भी ऐसे आयोजनों का हिस्सा बनते थे।

एक डेढ़ वर्ष की जन जागृति के बाद वर्ष 1992 के सितंबर अक्टूबर आते-आते जन्मभूमि का आंदोलन फिर से गति पकड़ने लगा था। 6 दिसंबर 1992 का दिन कारसेवा के लिए तय हुआ था। दीवारों पर नारे लेखन, जागरण के साहित्य का वितरण, विभिन्न कार्यक्रमों और बैठकों में तेजी आ गई थी । विद्या भारती के विद्यालय में होने वाली प्रार्थना सभा में जन्मभूमि को लेकर बने जागरण और ऊर्जा भाव बढ़ाने वाले गीत होते थे, जिन्हें हम विद्यालय से घर आने के बाद भी गुनगुनाते रहते थे। ऐसा लगता था कि सभी ओर राम क्रांति हो रही है। मैं उस समय नवीन आदर्श विद्या मंदिर, जोधपुर

में पढ़ रहा था। समानांतर रूप से घर में भी कारसेवा हेतु जाने के लिए बापूजी ने कमर कस ली थी। अच्छे से याद है कि बापूजी के प्रस्थान करने से एक दिन पूर्व उनके परमस्नेही मित्र डॉ महेंद्र जी टाक घर पर आए थे और बापूजी का एक सुंदर सी गुलाबों की महक से भरी फूलमाला से अभिनंदन किया था। इस फूल माला की जब तक ताजगी रही, गले में डाल कर अपने आप को भी मैं कारसेवक समझता रहा। गुलाबों की वह खुशबू आज भी उतनी ही ताजा है। अगले दिन सुबह तिलक लगाकर बापूजी को अयोध्या के लिए भावपूर्ण वातावरण में विदाई दी गई।

2 वर्ष पूर्व हुई कारसेवा में मुलायम सिंह सरकार द्वारा कारसेवकों पर अत्याचार हुआ, किंतु इस बार कल्याण सिंह सरकार होने से व्यवस्थाएं कुछ अनुकूल लग रही थीं। 2 नवंबर 1990 में विश्व हिंदू परिषद के तत्कालीन अध्यक्ष श्री अशोक जी सिंघल की लहू लुहान हुए सिर के साथ की तस्वीर मेरे स्मृति पटल पर ताजा थी और उनके जोश में वृद्धि के साथ 6 दिसंबर 1992 की कारसेवा में जुटने के आह्वान के ओजस्वी भाषण उनकी संघर्षशीलता और प्रतिबद्धता की एक प्रेरणा थी। ऐसे ही माहौल में जोधपुर से अयोध्याजी पहुंचने वाले जत्थे में बापूजी भी थे। उत्तर प्रदेश की उस ठंड में बापूजी और उनके कुछ साथियों के आवास की व्यवस्था वहीं के एक मठ में की गई थी। कमरे में बाजरी की भूसी की मोटी परत बिछाई गई थी। वह बताते हैं कि दिनभर की बैठकों, भजन मंडलियों, सभाओं के बाद की थकान बिस्तर के स्थान पर इस भूसी पर राम नाम की ऊर्जा के साथ सो कर मिटाते थे।

6 दिसंबर 1992 के उस ऐतिहासिक दिवस पर सूर्योदय के साथ ही ढांचे के बाहर सभा स्थल पर कारसेवक जुटने प्रारंभ हो गए थे। मंच से साधु-संन्यासियों, तथा अधिकारियों के भाषणों का दौर चल रहा था। इसी बीच कुछ उत्साही युवा कारसेवक पीछे की ओर से ढांचे के बीच वाले गुंबद पर चढ़ गए और नारे लगाने लगे। उन्हें देखकर ढांचे के चारों ओर से अन्य कारसेवक भी अवरोध हटाते हुए ढांचे तक पहुंचे और सब मिलकर उस कलंक को मिटाने में जुट गए। पूरे कार्य में बापूजी के हाथों से भी रामकाज में आहुति लगी थी। शाम तक ढांचा गिराने के बाद मलबे की सफाई का कार्य प्रारंभ हो गया और उसमें से कुछ निशानियाँ बहुत से कारसेवक मिट्टी, ईंट, पत्थर आदि के रूप में अपने साथ भी लेकर आए जिसे हमने भी बापूजी और उनके साथियों के आने के बाद देखा। जिस ट्रेन से अयोध्या से लौटे वह पूरी ट्रेन ठसा ठस भरी थी, बापूजी जैसे तैसे लगेज की बोगी में चढ़ रहे थे, भागने के कारण सांस फूली हुई थी, उन्हें अस्थमा की भी शिकायत रहती थी । उसी समय ट्रेन रवाना हो गई तो उनकी स्थिति देखते हुए साथी कारसेवकों ने उन्हें खींचकर डिब्बे में चढ़ाया । लगेज के डिब्बे के दरवाजे अंदर से बंद कर लिए गए थे।

पूरी ट्रेन पर रास्ते में जगह-जगह पथराव भी हो रहा था । उत्तर प्रदेश की सीमा से राजस्थान में प्रवेश करने तक लगभग यही स्थिति रही। जिन स्टेशन पर शांति रहती और बाहर आने का अवसर मिलता तो वहां ड्यूटी पर लगे पुलिस कर्मचारी और कारसेवकों में एक ही नारा लगता ''जय श्री राम हो गया काम''।

कर्फ्यू लगे शहरों में से होती हुई ट्रेन जोधपुर पहुंची और पिताजी 8 दिसंबर को घर पहुंचे। जोधपुर में भी इस समय कर्फ्यू लग चुका था तथा संघ पर भी प्रतिबंध पांच राज्य सरकारों को बर्खास्त करने के बाद थोपा जा चुका था। पिताजी के आने से पूर्व 7 दिसंबर के समाचार पत्र में ढांचा टूटने की खबर और छायाचित्र पढ़-देख एक संतोष की सुखद अनुभूति भी थी। ढांचा टूटने के चित्र जो पत्र पत्रिकाओं में छपे थे उनमें काले गुबंदों पर चढ़े हुए कारसेवकों के भी थे। ऐसा ही एक चित्र मुझे जहां तक याद है इंडिया टुडे के मुखपृष्ठ पर भी छपा था। उस चित्र में हमने अपने प्रिय आचार्य विनोद जी गौड़ को देखा।

उस समय संघ पर प्रतिबंध के कारण शाखाएं बंद थीं। मैं उस समय पावटा सायं शाखा का बाल स्वयंसेवक था। बापूजी भी उस समय संघ के दायित्ववान कार्यकर्ता थे। कारसेवा में जाने से पूर्व तक संघ के प्रचारकों का घर पर आना जाना सामान्य बात थी । लेकिन ढांचा ढहाने के बाद संघ पर लगे प्रतिबंध के कारण यह क्रम रुक गया था।

संघ के प्रचारकों को पूरे देश भर में गिरफ्तार किया जा रहा था। जागरण का कार्य तो कभी रुका नहीं था, अत: बहुत से कार्यकर्ता प्रचारक भूमिगत रहते हुए इसी कार्य को कर रहे थे। एक रविवार सुबह आकर्षक से दिख रहे, करीने से कटे हुए छोटे छोटे घने काले बाल वाले क्लीन शेव युवा जिसने नीली जींस, आधी बाजू का पीला मैट टी शर्ट, स्पोर्ट्स जूते और आंखों पर रेबन का काला चश्मा लगा रखा था का घर आना हुआ। देखने में किसी फिल्मी हीरो से कम नहीं था वो व्यक्तित्व।

हम दोनों बहन-भाई छोटे-छोटे थे, चेहरा जाना पहचाना लग रहा था पर पहचान नहीं पा रहे थे। मां पिताजी ने उनका खूब स्वागत किया और अल्पाहार कराया। हम दोनों को भी उन्होंने बहुत दुलारा। उन्होंने खुद को नंदलाल जी का छोटा भाई होना बताया। उनके घर से जाने के बाद हम खूब हंसे क्योंकि हमें मां बापूजी से पता लगा कि यह तो हमारे चिर परिचित लंबे बाल और दाढ़ी वाले नंदलाल जी जोशी थे, जिन्हें हम प्यार से बाबा जी कहते हैं। संघ पर प्रतिबंध की अवधि में ऐसे ही कई अनुभव पूरे देश भर में लोगों के रहे। टेंट में रामलला और उनके समाचार जानते पढ़ते रहते। ऐसे ही आयु बढ़ रही थी और परिवार में सक्रियता अनवरत जारी रही।

लिखने को तो बहुत कुछ है, पर मर्यादा का ध्यान रखते हुए इतना ही अनुभव साझा करना उचित समझता हूं। अपने आप को परम सौभाग्यशाली समझता हूं कि इस राम राष्ट्र में ऐसे हिंदू परिवार में मेरा जन्म हुआ, जिसके माता-पिता दोनों ही कारसेवा में अपनी सहभागिता निभाने में सफल हुए।

(लेखक अभियांत्रिकी महाविद्यालय,बीकानेर में प्राध्यापक हैं)

मुस्लिम नेतृत्व की जिद के कारण बातचीत से नहीं सुलझा मामला

समस्या आम मुसलमान की नहीं, नेताओं की है

मौलाना वहीदुद्दीन खान
विख्यात इस्लामिक विद्वान

पद्म विभूषण से सम्मानित मौलाना वहीदुद्दीन खान एक विख्यात इस्लामिक विद्वान थे। इस्लामी आध्यात्मिक गुरु, वक्ता और लेखक के नाते उनकी व्यापक पहचान रही है। इस्लामिक सेंटर के संस्थापक अध्यक्ष रहे वहीदुद्दीन ने कोई 22 वर्ष पूर्व श्रीरामजन्मभूमि के संबंध में मुस्लिम नेतृत्व के बारे में जो कहा है वह आज भी प्रासंगिक है। प्रस्तुत है उनसे सन् 2002 में लिए गए एक साक्षात्कार के कुछ अंश -

■ राम जन्मभूमि के मुद्दे को जिस तरह से मुस्लिम राजनीतिज्ञों ने भुनाया, क्या इससे उनकी मानसिकता उजागर नहीं हो गई है?

▸ इस पूरे मामले पर शुरू से ही मेरा विचार रहा है कि देश सबसे ऊपर है। हिन्दू, मुसलमान, ईसाई देश के बाद आते हैं। इसलिए हमें सबसे पहले यह सोचना होगा कि देश का फायदा किसमें है ? इस सोच को सामने रखकर देखें तो किसी भी विवाद का समाधान करने के लिए 'कॉमन ग्राउंड' तलाशनी होगी।

■ राम जन्मभूमि विवाद पर ऐसी 'कॉमन ग्राउंड' क्या हो सकती है?

▸ मुझे याद है कि 27 मार्च, 1987 को विट्ठलभाई पटेल भवन (दिल्ली) में एक बैठक हुई थी। उसमें दोनों ही पक्षों के नेता शामिल हुए थे। महंत अवैद्यनाथ (श्रीरामजन्मभूमि यज्ञ समिति के अध्यक्ष) और सैय्यद शहाबुद्दीन (बाबरी एक्शन प्लान कमेटी के मुखिया) भी थे। उस बैठक में मैंने कहा था कि दोनों के बीच 'कॉमन ग्राउंड' इतिहास बन सकता है। इतिहास से जो साबित हो, वह मान लिया जाए। उस समय मुझे बड़ा ही कड़वा तजुर्बा हुआ कि सारे हिन्दू नेता तो इस सुझाव पर राजी हो गए, लेकिन मुस्लिम नेता इस बात पर राजी नहीं हुए। शहाबुद्दीन साहब ने शोर करना शुरू कर दिया। उन्हीं के शोर पर यह बैठक खत्म हो गई।

■ आपके सुझाव को न मानने के पीछे शहाबुद्दीन क्या तर्क दे रहे थे ?

मुझे याद है कि 27 मार्च 1987 को विट्ठलभाई पटेल भवन (दिल्ली) में एक बैठक हुई थी। उसमें दोनों ही पक्षों के नेता शामिल हुए थे। महंत अवैद्यनाथ और सैय्यद शहाबुद्दीन भी थे। उस बैठक में मैंने कहा था कि दोनों के बीच 'कॉमन ग्राउंड' इतिहास बन सकता है। इतिहास से जो साबित हो, वह मान लिया जाए। उस समय मुझे बड़ा ही कड़वा तजुर्बा हुआ कि सारे हिन्दू नेता तो इस सुझाव पर राजी हो गए, लेकिन मुस्लिम नेता इस बात पर राजी नहीं हुए।

▸ उस समय तो ऐसा हुआ कि वह जोर-जोर से चिल्लाने लगे और किसी को समझ ही नहीं आया कि वह कह क्या रहे हैं? मैंने तो यह कहा था कि इतिहासज्ञों का एक बोर्ड बना दिया जाए। वह बोर्ड जो भी फैसला दे, उसे दोनों तरफ के लोग मान लें। इसको सभी के सभी हिन्दू नेताओं ने एक स्वर से स्वीकार कर लिया, मगर शहाबुद्दीन साहब ने चिल्ला-चिल्लाकर बैठक खत्म करा दी। मुझे इस पर बहुत दु:ख हुआ।

■ जाहिर है शहाबुद्दीन को इतिहास के आधार पर भी अपना पक्ष कमजोर लगा होगा ?

▸ इसके बारे में मैं क्या कहूं ? पर इतना तो है कि उन्होंने अपनी कोशिश से वह बैठक समाप्त करा दी थी। दीवान वीरेन्द्रनाथ उस बैठक के संयोजक थे। संजय डालमिया, मुनि सुशील कुमार, कुलदीप नैय्यर, महंत अवैद्यनाथ आदि इस बात के गवाह हैं।

■ आम मुसलमान क्या चाहता है ?

▸ आप तो जानते ही हैं कि आम मुसलमान इस मामले में भावुक है। इसलिए यह न देखिए कि आम मुसलमान क्या चाहता है? यह देखिए कि उनके नेता, उनके बुद्धिजीवी क्या चाहते हैं ? ऊपर के लोगों ने कोई बात तय कर ली तो अवाम उसे मान ही लेता है। अवाम को इतनी समझ कहां होती है ?

■ राम जन्मभूमि का मामला न्यायालय को सौंपने के बारे

में आपका क्या कहना है ?

▶ देखिए, कभी 1686 में निचली अदालत ने ताले हटाने का फैसला किया था। उस समय मुसलमानों को चाहिए था कि दंगा- फसाद न करते। उन्हें निचली अदालत के फैसले से संतुष्टि नहीं थी तो उसे ऊपर की अदालत में ले जाते। उच्च न्यायालय में अपील करते। वहां न बात बनती तो उच्चतम न्यायालय जाते। मगर जो लोग आज न्यायालय को मामला सौंपने की बात कर रहे हैं, उन्होंने जुलूस निकाले, मार्च की घोषणाएं कीं, रैलियां आयोजित कीं। ये सब बकवास हरकतें थीं ।

■ **इस्लामिक सिद्धांतों के अनुसार बाबरी मस्जिद की वैधता क्या है ?**

▶ इस्लाम यह कहता है कि अगर कोई मस्जिद ऐसी जगह बनाई जाए जो किसी दूसरे की जमीन हो और जहां जबरदस्ती मस्जिद बना ली जाय तो वहां नमाज ही नहीं होगी। वह मस्जिद मस्जिद नहीं है। मस्जिद बनाने के लिए जगह ईमानदारी से खरीदी जाए और जब तक उस जगह को लिखित रूप में हासिल न कर लिया जाए, तब तक वहां मस्जिद बनाना बिल्कुल ही नाजायज है। अगर यह साबित हो जाए कि किसी मस्जिद को जबरदस्ती बनाया गया है तो उसमें नमाज ही नहीं होगी। यह बात हर मस्जिद पर लागू होती है।

■ **आप कभी इस विवाद को लेकर इतिहास की गहराई में गए हैं?**

▶ मुझे इसकी तारीख में बहुत दिलचस्पी नहीं रही । मैंने कहा न कि जैसे मुहल्ले की मस्जिद है, वैसे ही वह भी एक मस्जिद है। कोई मक्का-मदीने की मस्जिद नहीं है वह। कुछ लोगों की दिलचस्पी है और वे इसी के नाम पर मुसलमानों की भावनाओं को भड़का भी रहे हैं। ■

कट्टरपंथियों द्वारा भड़काए गए दंगों में मारे गए थे सैंकड़ों लोग

राम मंदिर आंदोलन को ठेस पहुँचाने के लिए कुछ कट्टरपंथी ताकतों ने देश भर में दंगे भड़का दिए, जिससे जान-माल का भारी नुकसान हुआ। राजस्थान में जयपुर, मालपुरा जोधपुर आदि पर दंगों में बड़ी संख्या में लोग मारे गए। अजमेर में कर्फ्यू लगाया गया।

के एल बैरवा

श्रीरामजन्मभूमि हेतु चले देशव्यापी संघर्ष के दौरान सन् 1990 में सम्पूर्ण देश में हिन्दू मुस्लिम तनाव व्याप्त हो गया था। एक तरफ विश्व हिन्दू परिषद्, बजरंग दल व संघ परिवार का कार सेवा का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ तो दूसरी तरफ भाजपा नेता श्री लाल कृष्ण आडवाणी ने 25 सितम्बर 1990 को सोमनाथ से राम रथ यात्रा प्रारम्भ कर 30 अक्टूबर को अयोध्या पहुंचकर समापन करने का निर्णय हुआ । 23 अक्टूबर को बिहार में प्रवेश करते ही तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री लालू प्रसाद यादव ने श्री आडवाणी जी को गिरफ्तार करवा दिया। सम्पूर्ण देश में हिन्दू मुस्लिम तनाव व दंगे भड़क गये। लाखों कार सेवक 30 अक्टूबर तक अयोध्या पहुंच गये थे। इस अवधि में अनेक राम भक्तों ने अपना बलिदान दिया । लगभग 1.50 लाख कार सेवक जेलों में डाल दिये गये व पुलिस की गोली लगने से लगभग 20 कार सेवकों की मृत्यु हो गयी। देश के अन्य भागों में भी हिन्दू-मुस्लिम दंगे हुए, गुजरात में कई स्थानों पर दंगे हुये। इंदौर, उड़ीसा व राजस्थान में दंगे हुये, जिसमें भारी जान माल की हानि हुई व सैकड़ों लोगों ने अपना बलिदान दिया ।

6 दिसम्बर 1992 को विवादित ढांचा ढहा दिया गया था। 6 दिसम्बर 1992 की घटना के बाद पूरे देश में साम्प्रदायिक दंगे हुए। राजस्थान में भी अनेक स्थानों पर दंगे व तनाव के कारण कर्फ्यू लगाना पड़ा । लूट आगजनी में करोड़ों का नुकसान हुआ व भारी जन हानि हुई। श्रीराम मन्दिर निर्माण के लिए लम्बा संघर्ष करना पड़ा है जिसके लिए अनेक राम भक्तों ने बलिदान दिया हैं।

राजस्थान की कुछ प्रमुख घटनाएं

जयपुर में हिन्दू-मुस्लिम दंगे

1) वर्ष 1989 में शास्त्री नगर व भट्टा बस्ती थाना क्षेत्र में शिला पूजन की सवारी पर पथराव के बाद कर्फ्यू लगाना पड़ा।

2) 27 नवम्बर 1989 में साम्प्रदायिक तनाव के कारण चुनाव के जुलूस पर पथराव आगजनी के बाद कर्फ्यू लगाया गया व चार लोगों की मौत हो गई।

3) 23 अक्टूबर 1990 को समस्तीपुर बिहार में श्री आडवाणी जी की गिरफ्तारी के बाद जयपुर के परकोटे के अन्दर भयंकर आगजनी हुई। कोतवाली, रामगंज, माणक चौक, ब्रह्मपुरी, शास्त्री नगर थाना क्षेत्रों में कर्फ्यू लगाया गया व लगभग 49 लोगों की मौत हो गई।

4) 6 दिसम्बर को बाबरी ढांचा गिराने के समाचार ज्यों ही जयपुर में पहुँचे,

सितम्बर 1990 में सोमनाथ से प्रारंभ हुई राम रथ यात्रा (फाइल चित्र)

परकोटे में भयंकर तनाव बढ़ गया परकोटे के अन्दर व शास्त्री नगर क्षेत्र में कर्फ्यू लगाया गया। विभिन्न स्थानों पर आगजनी व लूटपाट हुई। लगभग 20 लोग मारे गए ।

अजमेर में कर्फ्यू

6 दिसम्बर को बाबरी ढांचे को गिराने के समाचार आते ही भयंकर तनाव फैल गया । सम्पूर्ण जगह पर कर्फ्यू लगाया गया। इससे पूर्व अक्टूबर माह में भी साम्प्रदायिक तनाव व दरगाह बाजार, नला बाजार में आगजनी के बाद कर्फ्यू लगाना पड़ा था।

मालपुरा में हिन्दू मुस्लिम दंगे

6 दिसम्बर 1992 को बाबरी ढांचा गिराने के विरोध में दिनांक 8 दिसम्बर, 1992 को मुस्लिम समुदाय द्वारा व 9 दिसम्बर, 1992 को भाजपा के आह्वान पर बन्द के दौरान कस्बा मालपुरा में भड़की हिंसा में सम्पूर्ण कस्बे में आगजनी हुई व 26 व्यक्तियों की मौत हुई । इन दंगों में अगुवाई करने वाले कैलाश माली की 10 जुलाई, 2000 को हत्या होने के बाद पुन: मालपुरा में आगजनी व दंगा हुआ जिसमें 12 व्यक्ति मारे गये।

कोटा में हिन्दू मुस्लिम दंगे

14 सितम्बर 1989 को कोटा में अनंत चतुर्दशी के दिन हिन्दुओं द्वारा निकाली जाने वाली शोभायात्रा पर हमले के कारण दंगे भड़के। पुराने शहर में व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में आगजनी व लूटपाट की गई। कोटा में धारा 144 व कर्फ्यू लगाना पड़ा। लगभग 20 लोगों की जान गई व 74 व्यक्ति घायल हुए।

जोधपुर में हिन्दू मुस्लिम दंगे

24 अक्टूबर, 1990 को पथराव व आगजनी की घटनाओं के बाद कर्फ्यू लगाना पड़ा, सेना बुलानी पड़ी। हिंसा की वारदात व पुलिस फायरिंग में लगभग 20 लोगों की जान गयी व लगभग 100 से अधिक घायल हुए। यह कर्फ्यू 27 दिन (19 नवम्बर, 1990 तक) चला।

(लेखक राजस्थान में पुलिस अधीक्षक तथा राजस्थान लोक सेवा आयोग के सदस्य रहे हैं)

थाईलैण्ड में भी है एक अयोध्या-'अयुत्थ्या'

मधु सूदन शर्मा

थाईलैंड में अयोध्या के नाम और विशेषताओं से मिलता जुलता शहर है- अयुत्थ्या। थाईलैण्ड के राजा को राम कहकर संबोधित किया जाता रहा है, प्रस्तुत है थाईलैण्ड की इस 'अयोध्या' की यात्रा का वृतांत तथा महत्वपूर्ण जानकारी

मेरा थाईलैण्ड की पुरानी राजधानी अयुत्थ्या 10 दिसम्बर, 2023 को जाना हुआ। थाईलैण्ड के प्राचीनतम नगरों में एक श्रेष्ठतम नगर रहा है जो कि व्यापारिक केन्द्र रहा था तथा इसे पूर्व का वेनिस भी कहा जाता था।

अयुत्थ्या का इतिहास प्राचीनतम व हिन्दू धर्म से ओतप्रोत रहा है। अयुत्थ्या का स्थानीय नाम 'फरा-नखोन-सी-अयुत्थ्या' है जिसका शाब्दिक अर्थ 'वैभवयुक्त श्री अयुत्थ्या नगरी' है।

वर्तमान अयुत्थ्या की स्थापना सन् 1351 ई. में राजा यू थोंग ने की थी जो बैंकॉक से लगभग 80 किमी. की दूरी पर है। ऐसा माना जाता है कि यू थोंग राजा ने अपनी प्रजा व राज्य को एक भीषण महामारी से बचाने के लिए भगवान राम की जन्मस्थली के नाम से ये नगर बसाया था। बैंकॉक जो कि थाईलैण्ड की वर्तमान राजधानी है के संस्थापक राजा राम-प्रथम की जन्म स्थली भी अयुत्थ्या ही है। 1700 ई. तक अयुत्थ्या थाईलैण्ड के व्यापार-संस्कृति राजनीति के केन्द्र में रही है। थाईलैण्ड के राजा को राम की उपाधि दी गई है।

अयुत्थ्या दो पवित्र नदियों, चावो फरायो तथा पा-साक नदियों के संगम द्वीप पर बसी है तथा इसकी यह भी विशेषता है कि यह भारत व चीन से समान दूरी, लगभग 3500 किमी. पर स्थित है। अयुत्थ्या पर हिन्दू संस्कृति का प्रभाव इसके पुरातन संस्कृत ग्रंथों में आज भी मिलता है।

अयुत्थ्या पर कालान्तर में बौध धर्म का पूर्ण प्रभाव रहा तथा यहां लगभग 20-25 ऐतिहासिक बौद्ध मंदिर बने है। मेरा लगभग सभी मंदिरों में जाना हुआ है। इन मंदिरों में सर्वश्रेष्ठ वात-याई-चाई मोंग खोन मंदिर है जिसका निर्माण 1375 ई. में राजा रामाथिबोदी ने किया था। इसके अलावा वहाँ वात महाथाथ, वात-चाईवा थानाराम, वात-फानान-चोईंग, वात-फरा-सी सनोफेट, व वात-फरा-राम मंदिर प्रमुख हैं। इनमें से कई मंदिर तो अयुत्थ्या की स्थापना से भी पहले के हैं। कालान्तर में उपरोक्त सभी मंदिरों के विदेशी आक्रान्ताओं, विशेषकर बर्मा के आक्रमणकारियों ने बुरी तरह विध्वंस कर दिया था। अत: वर्तमान में ये सभी भग्नावशेष रूप में ही मिलते हैं।

अयुत्थ्या के स्थानीय बुजुर्ग अभी हिन्दू-संस्कृति, रीति-रिवाजों, खान-पान व वेशभूषा से भली भांति परिचित हैं व भारतीयों से बड़ी आत्मीयता से मिलते हैं। थाईलैण्ड में विश्व हिन्दू परिषद व राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का व्यापक व गहरा प्रभाव देखा जा सकता है। इसी के परिणाम स्वरूप थाईलैण्ड की सरकार व वर्तमान में मनोनीत राजा श्री महा वजीरा लोंगकोर्न ने **थाईलैण्ड की प्रमुख पवित्र नदियों का जल तथा वहाँ की मिट्टी अयोध्या में बने राम मंदिर हेतु बड़े आदर व सत्कार से भेजी थी।**

जैसे कि कुछ भारतीय परिवारों से मुझे जानने व सुनने में मिला, थाईलैण्ड में भी अयोध्या में बन रहे विशाल रामलला के मंदिर से लोगों में काफी प्रसन्नता का भाव है। मेरी अयुत्थ्या यात्रा काफी ज्ञानवर्धक व सुखदायक रही। इस यात्रा के माध्यम से भारतीय संस्कृति के व्यापक प्रसार व प्रभाव का साक्षात अनुभव हुआ।

जो भी आगामी समय में थाईलैण्ड की यात्रा की योजना बना रहे हैं उनको मैं यही सलाह दूंगा कि वे अयुत्थ्या जरूर जाएं जिससे कि वे भारत के पुरातन वैभव के प्रभाव व मान्यताओं को सुदूर विदेश में भी महसूस कर सके।

(लेखक सेवा भारती समिति, जयपुर के भाग सहमंत्री हैं)

हिन्दी सिनेमा में भगवान राम

रचनात्मकता के नाम पर आस्था से खिलवाड़

डॉ. शुचि चौहान

धार्मिक फिल्मों से भारतीय सिनेमा की शुरुआत हुई। यह वह समय था जब हिंदी सिनेमा हिंदू महाकाव्यों व ग्रंथों से प्रेरणा लेता था। परंतु 1930 के बाद ऐसी फिल्में बनने लगी जिनमें हिंदू समाज व आस्थाओं की आलोचना की जाने लगी। 1960 के दशक से 1980 तक राम के नाम का पूरी तरह मजाक उड़ाया जाना एक सामान्य बात हो गई। लेकिन अब समय बदल गया है। आदिपुरुष के बेहूदेपन पर समाज की तीखी प्रतिक्रिया हुई। बॉलीवुड को समझना होगा कि रचनात्मकता के नाम पर आस्था से खिलवाड़ बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

धुंडीराज गोविंद फाल्के ने, जो बाद में भारतीय सिनेमा के जनक कहलाए, 1913 में एक फिल्म बनायी राजा हरिश्चंद्र। यह मूक फिल्म थी, लेकिन जनमानस पर छा गई। उन्होंने अपने 19 वर्षों के कैरियर में सत्यवान सावित्री, श्रीकृष्ण जन्म, कालियामर्दन, लंका दहन जैसी 95 फिल्में बनाईं। **रामायण के एक प्रसंग पर 1917 में बनी उनकी फिल्म लंका दहन तो इतनी लोकप्रिय हुई कि एक सिनेमा हॉल में सुबह 7 बजे से आधी रात तक हर घंटे फिल्म दिखानी पड़ी। लंका दहन रामायण पर बनी पहली ऐसी फिल्म थी, जिसने सिनेमाघरों को मंदिर बना दिया था। लोग लंका दहन देखने जाते तो सिनेमाघरों के बाहर जूते-चप्पल उतारकर जाया करते थे और हाथ जोड़कर बैठा करते थे, मानो मंदिर में भगवान की शरण में बैठे हों।** यह वह समय था, जब हिन्दी सिनेमा हिन्दू महाकाव्यों व ग्रंथों से प्रेरणा लेता था।

1931 में फिल्म आलमआरा ने फिल्मों की दशा और दिशा ही बदल दी। यह एक बोलती फिल्म थी। फिल्म के लेखक जोसेफ डेविड व मुंशी जहीर थे, तो संगीतकार फिरोजशाह मिस्त्री और बहराम मिस्त्री। इसका निर्देशन अर्देशिर ईरानी ने किया था।

ईरानी के दादाजी और पिताजी मूलत: पर्शिया (ईरान) से थे। मजहबी उत्पीड़न से बचने के लिए परिवार भारत आ गया था। फिल्म के संवादों में उर्दू शब्दों की भरमार थी और गाने एकेश्वरवाद से प्रेरित थे। इसके बाद एक के बाद एक अनेक फिल्में आईं, जिनमें धीरे-धीरे एक ट्रेंड विकसित हुआ। भाषा उर्दू होती गई और हिन्दू समाज व आस्थाओं की आलोचना करने वाले सामाजिक नाटक प्रमुख विषय बनते गए। छलिया, आवारा, राम तेरी गंगा मैली, कल आज कल, सत्यम शिवम सुंदरम, संगम, जागते रहो, धरम करम, बरसात और कन्हैया आदि कुछ ऐसी ही फिल्में हैं।

छलिया में एक गर्भवती हिन्दू महिला है, जो विभाजन के दौरान पाकिस्तान में रह जाती है, जबकि उसका परिवार जल्दबाजी में भारत आ जाता है। अब्दुल रहमान नामक एक दयालु पठान उसे बचाता है और 5 वर्षों तक अपने घर में बिना उसकी ओर देखे उसकी देखभाल करता है, उसके बेटे को अपने बेटे की तरह पालता है। जब महिला भारत आती है तो उसके माता-पिता और भाई उसे पहचानने से मना कर देते हैं, पति महिला के बच्चे द्वारा अपना नाम अनवर और पिता का नाम रहमान बताने पर महिला पर व्याभिचार का शक करते हुए अपनाने से इनकार कर देता है। एक नास्तिक छलिया जो यह सब देख रहा है, उसी क्षण वहां से गुजरने वाले भगवान राम के जुलूस को देखकर मुस्कुराता है। लोग गा रहे हैं -'' गली गली सीता रोये...। ''

आवारा में एक जज है, जिसका नाम रघु है। रघु की पत्नी लीला का अपहरण जग्गा डाकू कर लेता है, लेकिन जब उसे पता चलता है कि लीला गर्भ से है, तो वह उसे छोड़ देता है। जब वह घर पहुंचती है तो परिवार लीला के चरित्र पर शक करता है। रघु स्वयं भी उलझन में है कि उसे अपनाए या न अपनाए, तभी रघु की भाभी ताना मारती है इसके पेट में संपोला पल रहा है, क्या तुम भगवान राम से भी बढ़कर हो, उन्होंने भी सीता का परित्याग कर दिया था गाँव वालों के कहने पर।

हिन्दी सिनेमा का यह वह दौर था, जब फिल्मों में भगवान श्रीराम पर सूक्ष्मता से उंगली उठाई जा रही थी, उन्हें सामाजिक अन्याय के लिए अप्रत्यक्ष रूप से जिम्मेदार के रूप में चित्रित किया जा रहा था। यह राम के चरित्र को पूज्य से विवादास्पद में बदलने का प्रयास था।

जैसे ही 1960 के दशक के सामाजिक नाटकों ने 1970 और 1980 के दशक की मसाला फिल्मों के लिए रास्ता बनाया, राम के नाम का पूरी तरह से मजाक उड़ाया

जाना एक सामान्य बात हो गई। चोरों और गुंडों को चित्रित करने वाले मुख्य पात्रों को 'राम नाम जपना पराया माल अपना' का जाप करते हुए दिखाया गया, जैसे कि फिल्म नमक हलाल में अमिताभ बच्चन।

फिल्म मुकद्दर का फैसला (1987) में राज बब्बर को भगवाधारी साधु के भेष में 'राम नाम की लूट है लूट सके तो लूट' का जाप करते हुए बैंक लूटते हुए दिखाया गया है।

2001 में राजकुमार संतोषी की फिल्म आई लज्जा। जिसमें दहेज, घरेलू दुर्व्यवहार और महिलाओं के विरुद्ध यौन अपराधों जैसी सामाजिक बुराइयों से पीड़ित चार हिन्दू महिलाओं की कहानी दर्शायी गई। इन महिलाओं के नाम थे- रामदुलारी, वैदेही, जानकी व मैथिली, जो माँ सीता के ही दूसरे नाम हैं और अय्याश पुरुषों के नाम रखे गए रघु और पुरुषोत्तम। एक दृश्य में, फिल्म में मंच पर उपस्थित रामलीला नाटक में सीता की भूमिका निभा रही माधुरी दीक्षित, अपनी पवित्रता साबित करने के लिए अग्नि परीक्षा मांगने के लिए अपने पति राम को डांटती हैं। 2010 में आयी रावण में तो रावण का महिमामंडन करते हुए उसे नायक ही बना दिया गया।

2013 में, फिल्म निर्माता संजय लीला भंसाली ने मुख्य रोमांटिक जोड़ी का नाम राम और लीला रखने के बाद अपनी मसाला फिल्म का नाम राम-लीला रखने की मांग की। फिल्म के प्रमोशनल पोस्टर में राम (रणवीर सिंह) को आपसी वासना में लीला (दीपिका पादुकोण) का ब्लाउज खींचते हुए दिखाया गया। हिन्दू समूहों के विरोध के बाद फिल्म का नाम बदलकर गोलियों की रासलीला रामलीला कर दिया गया।

फिर आयी आदिपुरुष। जिसने रचनात्मकता के नाम पर हिन्दू आस्था की धज्जियां उड़ा दीं। कहा गया कि फिल्म संस्कृत महाकाव्य रामायण पर आधारित है, लेकिन इसमें मुख्य पात्रों को जो लुक दिया गया, कॉस्ट्यूम पहनाए गए और उनसे डायलॉग बुलवाए गए, वे बड़े ही अशोभनीय थे। एक दृश्य में हनुमान जी कहते हैं- कपड़ा तेरे बाप का, तेल तेरे बाप का, जलेगी भी तेरे बाप की। दूसरे दृश्य में अशोक वाटिका के रखवाले हनुमान जी से कहते हैं- तेरी बुआ का बगीचा है क्या, जो हवा खाने चला आया। एक दृश्य में जब हनुमान जी माँ सीता से मिलकर लौटते हैं और रामजी के पास जाते हैं तो राम उनसे पूछते हैं कि रावण से आपकी क्या बात हुई। इस पर वह कहते हैं, हमने उनसे कह दिया कि अगर हमारी बहनों को हाथ लगाओगे तो हम तुम्हारी लंका लगा देंगे।

हाल ही में एक फिल्म आई है अन्नपूर्णी, जो नेटफ्लिक्स पर स्ट्रीम हो रही है। इस फिल्म के एक दृश्य में हीरो लड़की को मांस खाने के लिए प्रेरित करता है। वह वाल्मीकि रामायण का उदाहरण देकर कहता है कि वनवास के समय श्रीराम, लक्ष्मण, सीता ने भी जानवर मारकर खाया था।

आज जब पूरा विश्व राम मंदिर बनने की खुशी में डूबा है, तब भी सनातन विरोधी अपने एजेंडे से बाज नहीं आ रहे। विडम्बना यह है कि हिन्दी सिनेमा का सबसे बड़ा अवार्ड आज भी दादा साहब फाल्के के नाम पर दिया जाता है, लेकिन इस इंडस्ट्री ने उनकी आत्मा का खून कर दिया है। बॉलीवुड में सब कुछ है बस नहीं है तो दादा साहब फाल्के के संस्कार और उनका दृष्टिकोण।

लेकिन अब समय बदल गया है। आदिपुरुष के बेहूदेपन पर समाज की तीखी प्रतिक्रिया हुई। लोगों को भगवान राम को मसाला फिल्मों के किरदार के रूप में देखना आहत कर गया। बॉलीवुड को समझना होगा कि रचनात्मकता के नाम पर आस्था से खिलवाड़ बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। भगवान राम आज भी जनमानस की आत्मा हैं। धारावाहिक रामायण इसका अनुपम उदाहरण है। वर्ष 1987 में यह जितना लोकप्रिय हुआ, कोविड काल में भी लोगों ने उसे उतनी ही श्रद्धा से देखा। राम का किरदार निभाने वाले अरुण गोविल को लोग भगवान राम के रूप में ही देखने लगे थे, उनके पाँव छूते थे। दूसरी ओर आदिपुरुष और अन्नपूर्णी जैसी फिल्में मात्र सनातन विरोधी एजेंडा बनकर रह गईं। अब समय आ गया है जब बॉलीवुड रचनात्मकता और आस्था के बीच के अंतर को समझे, जनता यह अंतर समझ गई है।

(लेखिका विश्व संवाद केन्द्र, जयपुर की निदेशक हैं)

रामकथा पर बनी फिल्में

भारतीय सिनेमा के पितामह दादा साहब फाल्के ने 1943 में प्रभु श्री राम पर पहली फिल्म बनाई जिसका शीर्षक था- **'राम राज्य'**। इसमें प्रभु राम का किरदार प्रेम आदिब ने निभाया तथा सीता की भूमिका शोभना समर्थ ने निभाई। इस फिल्म का एक प्रीमियम अमेरिका में भी दिखाया गया, जिसे भारी संख्या में दर्शक मिले थे। भारत में इस फिल्म ने बॉक्स ऑफिस के सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए थे। फिल्म का प्रभाव ऐसा था कि महात्मा गांधी ने भी इसे एक सिनेमा हॉल में जा कर देखा था। फिल्म के निर्देशक विजय भट्ट ने गांधी जी के लिए फिल्म का विशेष शो का आयोजन किया था। इसके बाद इसी फिल्म के निर्देशक विजय भट्ट की भगवान श्रीराम पर तीन फिल्में और आईं रामबन, रामायण और भरत मिलाप। रामायण में उन्होंने उत्तर रामायण यानी भगवान राम के पुत्र लव व कुश की कथा सुनाई है। 1964 में विजय भट्ट ने राम राज्य फिल्म का रीमेक बनाया।

जनवरी 1948 में 'सीता स्वयंवर' नाम की एक फिल्म आई जिसके निर्माता एक मुस्लिम एआर शेख थे। 1961 में होमी वाडिया ने 'संपूर्ण रामायण' फिल्म बनाई। राम भक्त हनुमान पर भी बॉलीवुड में 'पवनपुत्र हनुमान' और 'वीर बभ्रुवाहन' नामक दो फिल्में बनीं।

हाल ही आई निर्माता व निर्देशक ओम राउत की फिल्म 'आदिपुरुष' भी रामायण के कुछ चयनित प्रसंगों पर आधारित थी। हालांकि कुछ विवादों के चलते लोगों ने इस फिल्म को आपत्तिजनक मानकर नकार दिया ।

दक्षिण भारत में भी भगवान राम के चरित्र पर दक्षिण की ही भाषाओं में कुछ फिल्में रिलीज हुई हैं, जैसे 1948 में तेलुगु निर्देशक के सोमू ने 'रामयागा' फिल्म का निर्माण किया । इसमें प्रभु राम का किरदार प्रसिद्ध दक्षिण भारतीय अभिनेता एन टी रामाराव ने निभाया तथा मां सीता का पद्मिनी ने। इस फिल्म को अच्छी खासी सफलता मिली थी। फिल्म 250 दिन तक सिनेमाघरों से नहीं उतरी जो उन दिनों बड़ी उपलब्धि थी। यह फिल्म बाद में हिन्दी में भी डब की गई, जिसे दर्शकों ने खूब सराहा। इसके बाद आई फिल्म 'लव कुश' में भी एनटी रामाराव ने राम की भूमिका की थी। माना जाता है कि कई फिल्मों में भगवान राम की भूमिका निभाने से ही एनटी रामाराव इतने लोकप्रिय हुए कि सफल राजनेता बने और आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री रहे। मराठी फिल्म इंडस्ट्री में भी 1974 में 'स्वयंवर झाले सीतेचे' नामक फिल्म रिलीज हुई । मराठी कवि जीडी मडगुल्कर ने इस फिल्म की पटकथा लिखी। वे 'गीत रामायण' लिखने के लिए भी विख्यात हैं । इसी प्रकार छोटे पर्दे पर 1987 में दूरदर्शन पर दिखाया गया रामानंद सागर का धारावाहिक रामायण अत्यधिक लोकप्रिय रहा। ब्रिटिश प्रसारण संस्था बीबीसी के अनुसार 60 करोड़ लोग इस धारावाहिक को देखते थे। विदेशों में यह धारावाहिक अंग्रेजी सब टाइटल के साथ दिखाया गया और बहुत पसंद किया गया। अब सोनी टीवी चैनल पर श्रीमद रामायण नाम से नया धारावाहिक दिखाया जा रहा है।

- पाथेय डेस्क

गोचर भूमि की रक्षा से राम राज्य की पुनः स्थापना

भगवान श्रीराम के मंदिर का निर्माण हो गया। किन्तु अभी राम राज्य स्थापित करना बाकी है। राम राज्य स्थापित करने के लिए गोवंश आधारित जीवन व्यवस्था पुनः स्थापित करनी होगी। जिसके लिए हमें राष्ट्र की करोड़ों बीघा गोचर भूमि का सीमांकन करके गोचर भूमि से अंग्रेजी बबुल को हटाना होगा। वहां की भूमि को विकसित करके भरपूर मात्रा में घास चारा उगाना होगा।

ललित मेघराज जैन

गोवंश रक्षा

भरपूर मात्रा में चारा प्राप्त होने पर गोवंश भूखो मरना बंद होगा। कत्लखानों में जाना बंद होगा। हर कोई गोवंश को सरलतापूर्वक अपने परिवार में स्थान दे सकेगा। अधिकतम गोवंश से भरपूर मात्रा में दूध, दही, घी की पूर्ति होगी। प्रजा की सात्विक शक्ति में वृद्धि होगी।

रोटी, कपड़ा और मकान के लिए सस्तीवाड़ा

गोवंश की रक्षा से भरपूर मात्रा में गोबर प्राप्त होगा। गोबर और गोबर की खाद से मनुष्य की मूलभूत रोटी (अन्न, सब्जी, फल, जड़ी-बूटी), कपड़ा (रूई, ऊन) और मकान (ठंडी में गर्मी देने वाले और गर्मी में ठंडक देने वाले गोबर, मिट्टी से बनने वाले सस्ते मकान) के आवश्यकता की पूर्ति होगी। भरपूर मात्रा में गोबर का खाद होगा तो कैंसर जैसी भंयकर बीमारियां लाने वाले डीएपी, यूरिया पेस्टिसाइड के उपयोग करने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। गोबर के भरपूर खाद से भरपूर कृषि का उत्पादन होगा। मनुष्य की मूलभूत आवश्यकताओं में सस्तीवाड़ा आएगा। इसके साथ अन्य सभी वस्तुओं में भी स्वयं ही सस्तीवाड़ा आ जाएगा।

हर हाथ को काम-सभी समस्याओं का समाधान

हमारी पारंपरिक भारतीय गोवंश आधारित कृषि व्यवस्था में लगभग 70 प्रतिशत प्रजा को अपने ही गांव में रोजगार मिल जाएगा। जब किसानों की आमदनी अच्छी होती है, फिर उनके द्वारा जो खर्च किया जाता है, उससे 36 कोम की बाकी की 30 प्रतिशत प्रजा के हाथों को अपने ही घर में स्वयं का रोजगार मिल जाता है। कुदरत की व्यवस्था में संपूर्ण जीवसृष्टि एक दूसरे पर अन्त: निर्भर है। जिससे राष्ट्र को महंगाई, बेरोजगारी, गरीबी, भ्रष्टाचार, चोरी, हिंसा से मुक्ति मिलती है। आइए हम सभी मिलकर ऋषि-मुनियों की दी हुई यह व्यवस्था पुन: स्थापित करने में अपना योगदान दें। इसके साथ इस अभियान को अच्छी गति देने के लिए मृतप्राय: सूखी पड़ी हुई नदियों को पुनर्जीवित करके 12 महीने चलने वाली नदियों के रूप में बदलना होगा और जोखिम भरे नुकसान करने वाली आधुनिक डैम (बांध) की

व्यवस्था के स्थान पर पारंपरिक कुंए, तालाब, बावड़ी की व्यवस्था पुन: स्थापित करनी होगी।

आह्वान

आओ, श्रीराम जन्मभूमि के प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव के इस पावन अवसर पर हम संकल्प करें कि राष्ट्र रक्षा के लिए, अपने धर्म की रक्षा के लिए, हिंदू राष्ट्र की रक्षा के लिए, गोवंश की रक्षा के लिए अपने सामर्थ्य के अनुसार गोचर भूमि के रक्षा कार्य में अपने तन, मन, धन का योगदान दें।

सम्पर्क सूत्र-
1. गोचर ओरण संरक्षण संघ राजस्थान, प्रदेश कार्यालय, बीकानेर
मो.9929745967
2. ललित मेघराज जैन
मो. 7014612178

गुलाब बत्रा

मुलायम की व्यूह रचना टूटते ही
जागे कैमरे और कलम

प्रस्तुत लेख में श्रीराम जन्मभूमि संघर्ष की कारसेवा के समय मीडिया कवरेज से जुड़े प्रसंगों को संक्षेप में रेखांकित किया गया है।

त्रेता युग में अभिजीत मुहूर्त में जन्में प्रभु श्रीराम आधुनिक युग की 21वीं शताब्दी के अभिजीत मुहूर्त में ही अपने निज मंदिर में विराजमान हुए हैं। यह सुअवसर आने में 496 वर्षों की संघर्षमय लम्बी यात्रा का अपना इतिहास है।

वर्ष 1990 तथा 1992 में कारसेवा से कारसेवा सहित आंदोलन के विभिन्न चरण, अदालतों में कानूनी दावपेंच और फैसले की प्रक्रिया में मंदिर निर्माण की रोमांचक यात्रा का प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया साक्षी रहा है।

राजस्थान पत्रिका के तत्कालीन विशेष संवाददाता एवं जयपुर महानगर के संस्थापक संपादक और अब सिविल लाइंस जयपुर से भाजपा विधायक ने अपनी पुस्तक कारसेवा से कारसेवा तक शीर्षक की **प्रस्तावना में लिखा है- फैसला लागू करवाने में दृढ़ता की बजाय राम जन्मभूमि के राष्ट्रवादी आंदोलन को चोट पहुंचाई गई। मीडिया का एक वर्ग हर मामले में सरकार का अनुगामी बना रहा। मंदिर निर्माण समर्थक संगठनों ने न्यायालय की अवमानना नहीं करने और विवाद के हल के प्रति सकारात्मक रूख दिखाया तो यह कहते हुए उन्हें कठघरे में खड़े करने की कोशिश की गई कि वे झुक गये हैं। उनसे पूछा गया- 'आप मंदिर कब बनायेंगे? आपके जनादेश का क्या हुआ? और, वे अपने निर्णय पर अड़े रहे तो उन्हें मध्ययुगीन और अड़ियल बताया गया। राममंदिर निर्माण समर्थक कार्यक्रम सफल हुए तो उन्हें साम्प्रदायिकता भड़काने वाला प्रयास बताया गया और यदि कोई कार्यक्रम कमजोर रहा तो यह कहकर कचोटा गया कि उन्होंने अपना असर खो दिया है और जनता अब उनकी चाल समझ गई है।... और जब ढांचा ध्वस्त हो गया तो इसके लिए परिषद (विश्व हिन्दू परिषद) को ही दोषी ठहरा दिया। विशेष बात यह कि इस विवादित ढांचे के मलबे से प्राचीन मंदिर के गताधिक अवशेषों का निकलना था, लेकिन इसे ज्यादातर समाचार पत्रों ने खबर नहीं माना।**

जयपुर के वयोवृद्ध पत्रकार प्रवीण चन्द्र छाबड़ा के पुत्र मनोज छाबड़ा नवभारत टाइम्स में प्रेस फोटो ग्राफर थे और 1991 में उनका लखनऊ स्थानान्तरण हुआ था। अयोध्या में 6 दिसम्बर, 1992 को विवादित ढांचा गिराये जाने के आरंभिक फोटो उन्होंने खींचे थे। लेकिन गोरे चिट्टे रंगरूप के कारण कारसेवकों ने उन्हें बी.बी.सी. का फोटोग्राफर समझ कैमरा भी छीना, रील निकाल ली तथा लात घूसों से मारा पीटा। बाद में सी.बी.आई. की टीम के साथ घटनास्थल पर गये मनोज को एक सूखे कुंए में टूटा फूटा कैमरा मिला।

मनोज के साथी प्रेस फोटोग्राफर आर.बी. थापा ने दोनों कारसेवाओं की फोटोग्राफी की। बकौल थापा, 30 सितम्बर, 1990 को वे सुबह सरयू पुल की ओर जा रहे थे, गाड़ी में महाराष्ट्र के तथा दिल्ली टाइम्स ऑफ इंडिया के फोटोग्राफर नीरज पोल भी थे। अचानक विवादित ढांचे पर दो-तीन कारसेवकों को चढते देख गाड़ी रोकी गई। थापा ने ऐतराज किया कि ये केवल फोटो खिंचवाना चाहते हैं। महाराष्ट्र के फोटोग्राफर का कहना था कि 'देट इज द पिक्चर'। लिहाज वश थापा ने अनमने भाव से वह फोटो खीचा जिसने इतिहास रच दिया। इसमें तीनों गुम्बदों पर से केवल एक गुम्बद पर तीन कारसेवक भगवा पताका फहरा रहे थे। संपादक नकवी ने कहा- अयोध्या में आग लेखनी कम देखनी (फोटो) ज्यादा होगी। तब थापा ने फोटो की झड़ी लगा दी। पर संपादक ने कहा कि वे जो फोटो चाहते है वह इनमें नहीं है। तब थापा ने भगवा पताका वाला फोटो दिखाया जिसे फ्रंट पेज पर थापा के नाम से आठ कॉलम में छापा गया। फोटो छपते ही थापा लखनऊवासियों के हीरो बन गये। जगह-जगह उनका स्वागत हुआ। लेकिन मुलायम सरकार द्वारा उनके बारे में पूछताछ करने पर संपादक ने उन्हें नेपाल जाने तक की सलाह दी। फोटो खीचने से पहले अयोध्या में थापा पानियर के विजय सिंह अमर उजाला के विनोद सहित अन्य फोटोग्राफर कारसेवकों की कारसेवा के शिकार बने लेकिन उनके फोटो सुरक्षित रहे। द हिंदू के एस. राय की अनूठी फोटोग्राफी के फोटो का देश के अन्य समाचार पत्रों ने भी उपयोग किया।

भाजपा नेता लालकृष्ण आडवाणी की सोमनाथ से अयोध्या रथयात्रा मीडिया की सुर्खिया बनी हुई थी। दैनिक जागरण के 28 अक्टूबर के अंक में सरिता सिंह ने लिखा-लखनऊ से फैजाबाद तक प्रेस पार्टी की जिप्सी को एक दर्जन बैरियरों पर रोककर घंटों पूछताछ तथा तलाशी ली गई। हर पन्द्रह कदम पर वायरलैस तथा दो कि.मी. की दूरी पर क्लोज सर्किट टी.वी. लगे हुए थे। रोल रोलर खड़े कर सड़कें रोकी गई।

इसी दिन स्वतंत्र भारत ने 60 वर्षीय साधू स्वामी रामनाथ दास का फोटो छापा। बून्दी के इस साधू को इटावा पुलिस ने बेड़ियों में जकड़कर अस्पताल में रखा। उनके पांव बेड़ियों से छिल गये। इसी पत्र में अनिश्चित कालीन कर्फ्यू (फैजाबाद, अयोध्या) पर अब अयोध्या में 'लंका' शीर्षक संपादकीय छपा। वाराणसी में पायनियर, जागरण, आज, स्वतंत्र भारत सहित कई समाचारों पत्रों की बिक्री पर रोक लगा दी गई। इलाहाबाद में अमृत प्रभात, नार्दन सहित अन्य पत्रों की प्रतियां जब्त कर ली गईं।

अयोध्या में प्रथम कारसेवा तथा मीडिया को लेकर मुलायम सिंह सरकार के संदर्भ में प्रेस काउसिंल ऑफ इंडिया, नई दिल्ली की त्रिवेन्द्रम में 21-22 जनवरी, 1991 को बैठक हुई। काउसिंल के सदस्य (1988-91) के नाते मैं भी बैठक में उपस्थित था। इस गंभीर मसले पर लगातार 14 घंटे (वर्किंग लंच) तक चर्चा हुई और संभवत: पहली बार सर्वसम्मति की अपेक्षा दो रिपोर्ट बनी। ऐसा माना गया कि एक वरिष्ठ पत्रकार उत्तरप्रदेश सरकार के घोर समर्थक थे।

कारसेवा की कवरेज के लिए आये पत्रकारों के बारे में 29 अक्टूबर की रात का जायजा लेते हुए वरिष्ठ पत्रकार राष्ट्रधर्म संपादक भानुप्रताप शुक्ल का कहना था-यहां आना व्यर्थ गया। कुछ पत्रकारों ने शुक्ल जी के सामने विश्व हिन्दू परिषद की कारसेवा का मजाक भी उड़ाया।

वहीं राजस्थान पत्रिका के गोपाल शर्मा ने लिखा- सौ-सौ कदमों पर बनी स्टेनगनों से लैस जवानों की पंक्तियों के बीच से गुजरते समय सचमुच यह अहसास हुआ कि कारसेवा होना तो दूर उसकी बात यहां सोचना भी अनहोनी कल्पना करना है। इसके बाद जब जन्मभूमि की रचना देखी जहां मंदिर में प्रवेश करने वाले गलियारे से पूर्व ही तीनों रास्तों को इस्पात के जमीन ट्रेक बैरियरों से रोककर मंदिर के आगे सीखचें लगा दिए गए थे। सरकार का दावा था कि यहां परिन्दा भी पर नहीं मार सकता। लोहे की रैलिंग मंदिर के चारों तरफ लगी थी जिन पर कांटो के तार लिपटे थे और आदेश था कि इन में हमेशा करंट दौड़ता रहना चाहिए।

वि.सं. 2047 कार्तिक शुक्ल पक्ष देवोत्थान एकादशी के दिन अयोध्या का सूर्य प्रखर लालिमा लिए था। मुलायम सिंह सरकार की कल्पनाशील व्यूह रचना को तोड़ते हुए अभियान के प्रणेता अशोक सिंहल मणिराम छावनी के सिंह द्वार पर प्रकट हुए। सड़क पर आते ही टिड्डी दल की भांति कारसेवकों की विशाल वाहिनी जमा हो गई। खटाखट कैमरे जाग पड़े और कलम हरकत में आ गई। लोक शक्ति के नृसिंह का नया प्राकट्य हुआ।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं तथा यूनिवार्ता के संपादक रहे हैं)

श्रीराम जन्मभूमि के लिए संघर्ष यात्रा की दस्तावेज है

पुस्तक : कारसेवा से कारसेवा तक

ऐश्वर्या चौहान

कारसेवा से कारसेवा तक पुस्तक संघर्ष, संघर्षशीलता, और सत्यनिष्ठा की कहानी है, जो राम मंदिर के निर्माण से जुड़ी एक बड़े आंदोलन की यात्रा को सुनाती है। ''कारसेवा से कारसेवा तक'' ने रामजन्मभूमि आंदोलन के सभी पहलुओं को बड़ी जिम्मेदारी के साथ दर्शाया है। पुस्तक दो काल खंडों में रामजन्मभूमि के लिये की गई कारसेवा का विस्तृत प्रतीकात्मक रूप है जिसमें इतिहास, तथ्य, अदालत के फैसले, दलीलें, विभिन्न संस्थानों, महंत, स्वामी, सरकार आदि की भूमिका का वर्णन किया गया है। नृशंस संहार, बलिदान, वीरता को प्रत्यक्ष अनुभव से बताया गया है। पुस्तक को तीन भागों में देखा जा सकता है। जिसमें पुरोवाच, 1990 की कारसेवा और बाबरी ढाँचे का आखिरी अध्याय शामिल है। पुरोवाच की शुरुआत 22-23 दिसम्बर की रात रामलला के प्राकट्य से हुई। 1936-1992 तक के ऐतिहासिक क्षणों को पुस्तक में संक्षेप से शामिल किया गया है।

पुस्तक का अध्याय 2 ''रामजन्मभूमि का विवाद'' है। जिसमें विश्व स्तर पर मज़बूत संगठन बनाने का उद्देश्य और किए गए प्रयत्नों का विवरण मिलता है। देवोत्थान एकादशी 16 नवंबर, 1983 से एक महीने का एकात्मक यज्ञ का आयोजन किया गया। पुस्तक में बजरंग दल का गठन, जन्मभूमि मुक्ति के लिए मुकदमा, साधु-संतों की बैठक, जनचेतना जगाने के लिए राम-जानकी रथयात्रा, जनसैलाब का रथयात्रा के लिए प्रेम उमड़ना, अविस्मरणीय सहयोग, सरयू किनारे संकल्प दिवस, पदयात्रा में जन्मभूमि के लिए लगे नारे का जिक्र मिलता है।

मंदिर के लिए प्रत्यक्ष कार्यक्रमों की शुरुआत 1989 में हुई। मंदिर निर्माण के लिए भारत के हर गाँव से 1-1 रामशिला और हर हिंदू से सवा सवा रुपया लिया गया। किताब का मध्य भाग जिसमें तत्कालीन प्रधानमंत्री वीपी सिंह, रक्षा मंत्री अजीत सिंह, अटलबिहारी वाजपेयी, मुफ्ती मुहम्मद सैयद और भैरोंसिंह शेखावत की भूमिका बताता है जिसमें चुनावों में जन्मभूमि विवाद का मुद्दा, घोषणा-पत्र, आपात बैठक और मंदिर विवाद को 4 महीने में समाधान के आश्वासन देना शामिल है। बाद में दिवाली के बाद 5 लाख गाँवों से लाखों कारसेवक तिथिवार मंदिर निर्माण के लिए अयोध्या पहुँचें। एक पूरा अध्याय रामरथ यात्रा पर दिया गया है जिसकी अगुवाई लालकृष्ण आडवाणी ने की थी। बाद में उन्हें गिरफ़्तार कर लिया गया था।

''लोकशक्ति की विजय'' अध्याय में दिखाया गया है कि कैसे सरकारी इंतजामों के बावजूद भी कारसेवक रुके नहीं थे, लेकिन उन्हें बड़ी क़ीमत चुकानी पड़ी।

एक वक्त जब पूरा उत्तरप्रदेश आतंक के साये में था जब चौदह कोसी परिक्रमा रोकी जा रही थी इस पूरे काल में कारसेवकों और संतों पर हुई भीषण बर्बरता, मारकाट को दिखाया गया है।

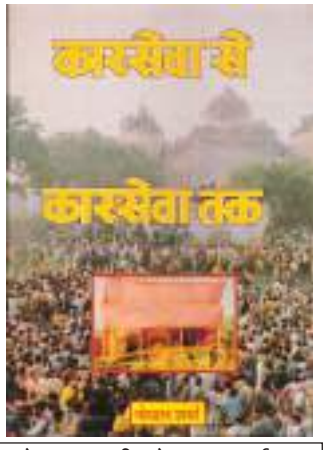

लेखक : श्री गोपाल शर्मा
मुद्रक : राजस्थान पत्रिका प्रेस, जयपुर

युद्ध क्षेत्र मोर्चेबंदी, चक्रव्यूह का अभेद्यद्वार, कारसेवा होनी ही थी, जेलें भरी, सरयू पुल पर गोलीबारी, कारसेवा और विजय ध्वज, गुंबद पर बंदर, जवानों का गोली चलाने से इनकार जैसे हैडिंग पुस्तक में मिलते हैं। एक रूह छलनी करने वाला मार्मिक अध्याय ''जब अयोध्या खून से नहा उठी'' है, जिसमें 1990 की कारसेवा का विवरण मिलता हैं जब कारसेवकों पर निशाना लगा-लगा कर मारा था। उसके बाद का दंगा भड़कने, फ्लैग मार्च, लोगों को जिन्दा जलाने का विवरण मिलता है। ''राम भक्तों का महाकुंभ'' अध्याय 1990 के बाद का देश में माहौल, साध्वी ऋतंभरा, पूज्य शंकराचार्य, आचार्य धर्मेन्द्र आदि के भाषण की विस्तृत जानकारी देता है।

''कल्याण सिंह की निर्भीकता'' अध्याय राज्य सरकार द्वारा उत्तर प्रदेश में लिये गये अहम फैसलों को बताता है।

पुस्तक के अंतिम भाग के अध्याय में ''अंतिम सात दिन'' इस प्रकार पढ़े जाते हैं जैसे किसी फिल्म का क्लाइमेक्स देखा जा रहा हो। अंतिम अध्याय में मिनट-मिनट की गतिविधि को बताया है जब गुंबद को ढहाया जा रहा था।

कहानी गुंबद ढहने के बाद भी चलती रहती है, सरकार द्वारा की गई कार्रवाई और राममंदिर के वहाँ होने के सभी साक्ष्यों की जानकारी देती है। यह कोई आम कहानी नहीं है बल्कि एक राष्ट्र आंदोलन की अविस्मरणीय ऐतिहासिक गाथा है जो लाखों लोगों के अपनी जन्मभूमि के प्रति प्राणों से अधिक प्रेम को बताती है। • *(लेखिका पत्रकारिता की विद्यार्थी हैं)*

राजस्थान के बलिदानियों को शत-शत नमन!
जिन्होंने रामजन्मभूमि मुक्ति संघर्ष में अपने जीवन की आहुति दी

प्रो. महेन्द्रनाथ अरोड़ा, जोधपुर

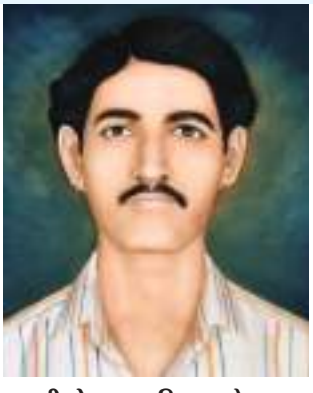

श्री सेठाराम परिहार, जोधपुर

श्री रामकुमार व श्री शरद कुमार कोठारी, बीकानेर (कोलकाता से आए थे)

श्री रामावतार सिंहल, अलवर

श्री अविनाश माहेश्वरी, अजमेर

श्री सुरेश जैन, भीलवाड़ा

श्री रतनलाल सेन, शाहपुरा, भीलवाड़ा

श्री रवीन्द्र कुमार सांचीहर, नाथद्वारा

आसान नहीं था संघर्ष, गौरवान्वित करती हैं स्मृतियां...

(कारसेवा से संबंधित संस्मरण)

'सिर पर कफन बांध कर आए हैं लौटेंगे नहीं'

जुगल किशोर

बात 1992 की है। जयपुर जंक्शन पर 400-500 कारसेवक एकत्र हुए। वे सब घर से इसी संकल्प के साथ निकले थे कि कार सेवा करने अयोध्या जाना है। सभी मरूधर एक्सप्रेस से अयोध्या जाने के लिए खड़े थे। उस समय तत्कालीन प्रांत प्रचारक माननीय हस्तीमल जी भी स्टेशन पर थे। उन्होंने मुझसे कहा, ''अयोध्या से फोन आया है,कारसेवकों को अब अयोध्या नहीं जाना है;क्योंकि वहां पहले से ही लाखों कारसेवक पहुंच चुके हैं। आवास व भोजन व्यवस्था में समस्या हो रही है। आप यह संदेश इन कारसेवकों को दे दें और उन्हें घर लौटने को कह दें।''

मैंने आशंका जताई कि ''अब कौन सुनेगा हमारी बात!'' और यही हुआ,संदेश सुनकर कारसेवकों ने कहा-''हम सौगन्ध खाकर आए हैं। सौगन्ध राम की खाते हैं, मंदिर वहीं बनाएंगे।'' कुछ ने कहा-''भाईसाहब हम तो सर पर कफन बांध कर आए हैं,वापस घर नहीं जाएंगे। चाहे वहां हमारा बलिदान हो जाए।'' यह सुनकर मैंने हस्तीमल जी से कहा ''आप समझाइए इन्हें।'' इस पर उन्होंने कहा-''इनको मैं और आप तो क्या, भगवान भी नहीं समझा सकते।'' मैंने कहा फिर जाने दो, तो उन्होंने कारसेवकों से कहा ''जाओ!'' बस फिर क्या था,जयपुर जंक्शन पर नारे गूंज उठे -''जयश्री राम और सौगंध राम की खाते हैं,मंदिर वहीं बनाएंगे।'' पूरा वातावरण राममय हो गया था। मेरा मन भी भावुक हो गया। सारे कारसेवक ट्रेन में चढ़ कर अयोध्या की ओर निकल पड़े।

कैसा था कारसेवा का जुनून

अलवर जिले के थानागाजी से भाजपा विधायक रहे शिवचरण लाल जी भी कारसेवा के लिए अयोध्या गए थे। हालांकि उन्हें हृदय रोग था और डॉक्टर ने उन्हें कह रखा था कि वे अपने घर पर भी सीढ़ियां नहीं चढ़ेंगे-उतरेंगे, उन्हें बड़ी सावधानी से रहना है। फिर भी वे अयोध्या के लिए रवाना हो गए,जबकि उस समय लखनऊ से अयोध्या जाने के सारे रास्ते बंद थे, सड़कें तोड़ दी गई थीं,बसें व ट्रेनें बंद कर दी गई थीं। वे कारसेवकों के साथ लखनऊ से पैदल ही रवाना हो गए। कम से कम 150-200 किलोमीटर की दूरी पैदल तय करके अयोध्या पहुंचे। कारसेवा से लौटने पर जब मैं उनसे थानागाजी में मिला तो मैंने पूछा-''शिवचरण लाल जी आपका स्वास्थ्य तो ठीक नहीं था,फिर भी आप कैसे पैदल चल लिए वहां?'' उनका उत्तर था-''पूछिए मत कि क्या ऐसी चेतना जगी कि जुनून में पैदल ही चल पड़ा। जब कई दिन बाद वहां पहुंचे तो लगा कि कोई न कोई ध्येय मन मस्तिष्क पर ऐसा छा जाता है कि उसे पूरा करने के लिए स्वत: ऊर्जा आ जाती है।'' आज जब वे हमारे बीच नहीं है तो उनसे जुड़ा यह संस्मरण उल्लेखनीय है।

घरवालों ने मान लिया था बलिदानी एक माह बाद लौटे

1990 में मैं विभाग प्रचारक था। अलवर भी जयपुर विभाग में आता था। बहुत से कारसेवकों के साथ अलवर से श्री योगेश कुमार जी भी अयोध्या गए थे। मैं निषाद जी के चौक में स्थित कार्यालय में था। योगेश जी के परिजन कार्यालय आए, क्योंकि बाकी कारसेवक लौट आए किन्तु योगेश नहीं आया था। उनके पिताजी अयोध्या गए,उनके बारे में खोजबीन की। भारी मन से दिवंगत हो चुके कारसेवकों के कपड़ों को भी चैक किया। एक-दो मिलते-जुलते से कपड़े देखे तो वे मान बैठे कि उनका पुत्र शहीद हो गया है। घर वालों ने सारे क्रियाकर्म कर दिए।

एक महीने बाद अचानक योगेश लौट आया और संघ कार्यालय पहुँचा। मैंने उन्हें बताया कि हम सब तो मान बैठे थे कि आप शहीद हो गए हैं। इस पर योगेश ने कहा-''कुछ कारसेवक नेपाल से आए थे, उनसे दोस्ती हो गई तो मैं उनके साथ नेपाल निकल गया।'' मैंने कहा-''भले आदमी, बताना तो चाहिए था कि नेपाल जा रहे हो। घर वाले चिंतित थे। पिताजी जाकर आए थे अयोध्या, उन्होंने ही आकर सूचना दी कि आप शहीद हो गए तो घरवालों ने क्रियाकर्म कर दिया।'' मैंने योगेश को कार्यालय ही रोक लिया और उनके घर पर किसी स्वयंसेवक को भेज कर उनके पिताजी को बुलवा

लिया।

जब वे कार्यालय आए तो पहले उन्हें अपने सामने बिठाकर धैर्यपूर्वक सूचना दी कि योगेश जीवित है। इतना सुनते ही वे खुशी से उछल पड़े। योगेश मेरे कहे अनुसार अंदर कहीं बैठे थे। मैंने कहा ''आपको योगेश से मिलवाऊं,'' उन्होंने कहा–''हां।''

तब मैंने योगेश को आवाज दी तो वे बाहर आकर पिता से लिपट पड़े। बड़ा ही भावविह्वल क्षण था। मैंने फिर योगेश के पिताजी से आग्रह किया कि ''आप घर चलें, योगेश को हम जुलूस निकाल कर घर लाएंगे।'' सभी स्वयंसेवकों को बुला लिया और 150–200 कार्यकर्ताओं की भीड़ थी। सभी राम मंदिर के नारे लगाते हुए चल रहे थे– ''सौगन्ध राम की खाते हैं,मंदिर वहीं बनाएंगे,मंदिर भव्य बनाएंगे।'' फूल वर्षा के बीच योगेश को जब घर लेकर गए तो परिजनों की खुशी का ठिकाना नहीं रहा।

हमारे सामने गोली मारी महेन्द्रनाथ जी अरोड़ा को

डॉ. विनोद कुमार शर्मा

सांगानेर के डॉ. विनोद शर्मा शिलान्यास सहित सभी कारसेवा में अयोध्या गए थे। 1990 की कारसेवा में घायल हुए।

9 नवम्बर, 1989 को श्रीराम जन्मभूमि मंदिर के लिए अयोध्या में हुए शिलान्यास कार्यक्रम में कारसेवा हेतु सांगानेर से गए जत्थे में शामिल होने का सौभाग्य मिला। सरयू के तट पर अस्थायी आवास बनाकर भोजन, स्नान व निवास की व्यवस्था की गई थी। कारसेवक अधिक होने के कारण माइक से सूचनाएं दी जाती थी। लौटने पर तत्कालीन विधायक और संतजनों ने माला पहनाकर स्वागत किया। पिताजी की आंखों में अश्रुधारा बहने लगी थी। पहली बार पिताजी ने गले लगाया था और मां ने तो सारा स्नेह ही उड़ेल दिया था।

1990 की कारसेवा

30 अक्टूबर, 1990 को होने वाली कारसेवा के लिए सांगानेर स्टेशन से ट्रेन में बैठे। निर्देश था कि अपने उत्साह पर नियंत्रण रखना है। ट्रेन में नारे नहीं लगाने हैं। अपने को कारसेवक के रूप न दिखाकर सामान्य यात्री बनकर जाना है ताकि रास्ते में गिरफ्तारी से बच सकें। कारसेवकों को 2–2 या 3–3 की टोलियों में बांट दिया था। निर्देश था कि टोली का एक सदस्य भी गिरफ्तार हुआ तो बाकि को भी गिरफ्तारी देनी हैं। हमारी टोली के तीनों सदस्यों ने उपनाम रखकर यह प्रकट किया कि लखनऊ एक कवि सम्मेलन में जा रहे हैं। लखनऊ रेलवे स्टेशन पर किसी के द्वारा 'जय श्रीराम' का नारा जगाए जाने पर मेरे साथियों ने भी जोश में आकर 'जय श्रीराम' का नारा लगा दिया। परिणामत: सादी वर्दी वाले सिपाही ने साथी रतन सिंह को पकड़ लिया। निर्देशानुसार हम दोनों को भी साथ जाना पड़ा। रेल्वे स्टेशन पर बसों में बिठाकर केन्द्रीय कारागार ले जाया गया। वहां पहले से ही कई कारसेवक बैठे थे।

तभी मैंने देखा कि फागी के रामानन्द गुर्जर और गोविन्द सिंह धाभाई एक पुलिस वाले से दूर जाकर बात कर रहे थे। वे निकलने की बातें कर रहे थे। फिर मेरे से गोविन्द जी बोले शास्त्री जी निकलना है तो हमारे पीछे–पीछे आ जाओ। हम तीनों उनके पीछे चलने लगे और भी कारसेवक आने लगे तो पुलिस पीछे पड़ गई। हम दौड़कर घुड़साल के एक बड़े छेद में से निकलकर बाहर मैन रोड़ पर आ गये और तत्काल एक सवारी ऑटो गाड़ी में बैठकर निकल गये।

कांग्रेस पदाधिकारी ने की सहायता

गाड़ी में मैंने एक व्यक्ति से पूछा कि अयोध्या कैसे जा सकते हैं? वह बोला कि जब जाओ तो बता देना, मैं बैरिकेड पार करा दूंगा। मैंने कहा कि हम तो अभी जा रहे हैं तो वह हमें घूरकर देखता रहा और बोला कि मेरा नाम रामचन्द्र है और मैं यहाँ कांग्रेस का पदाधिकारी भी हूँ। मैं पुलिस से कहकर बैरिकेड से पार करा दूंगा, परन्तु आगे मैं कोई सहायता नहीं कर सकूंगा। और सचमुच उसने हमें पार करा दिया। हम पैदल ही आगे बढ़े जा रहे थे। चार–पांच किलोमीटर आगे जाने पर हमें और भी कारसेवक दिखे जो टोलियों में जा रहे थे तभी पीछे से एक पुलिस की लॉरी आकर आगे के कारसेवकों के पास रूकी और उन्हें बिठाने लगी। हम कच्चे रास्ते में दौड़ पड़े। पुलिस पीछे दौड़ी किन्तु हम बड़े–बड़े गन्नों और घास–फूस में छिपते छिपाते भागने में कामयाब हो गये।

अब हमारे सामने न सड़क थी न रास्ता। पगडण्डियों पर खेतों में से होकर छिपते–छिपाते चलते रहे। रास्ते में ईदन सिंह के बैग में रखी सामग्री से पेट भरते रहते। पेड़ पर चढ़कर मोटी

शाखाओं पर आराम करते। एक बार तो रात को एक गांव से होकर निकल रहे थे, वह गांव मुस्लिम आबादी का था, कुत्ते भौंके तो जाग हो गई। मुसलमान युवक पीछे दौड़े तो हम भी तेजी से दौड़े और जान बचाई।

कमर तक पानी से गुजरे

दूसरे दिन आगे बढ़े तो तालाब में से होकर गुजरना पड़ा। कमर तक पानी था, जूते-चप्पल हाथ में ले लिए, कपड़े ऊंचे कर लिए, बैग सिर पर रख लिए। पैरों के नीचे और आसपास छोटी-छोटी मछलियों का स्पर्श गुदगुदा रहा था।

गाँव में आव-भगत

दो दिन बाद रात्रि में एक हिन्दू बहुल गांव में पहुंचे। गांव के लोगों ने रात्रि एक मंदिर में रुकने की व्यवस्था की। घास फूस बिछाकर चद्दर बिछा दिया और हमने विश्राम किया। मन्दिर के पुजारी रामबोले बाबा थे। काले गुड़ की चाय पीते ही थकान दूर हो गई। मोटे-मोटे लड्डू, पुरी और आलू की सब्जी खाई, आनन्द आ गया।

डाकू भी जा रहे थे कारसेवा में

दूसरे दिन सुबह गांव वालों ने विदा किया। अब आगे धीरे-धीरे और भी कारसेवक मिलने लगे थे। एक व्यक्ति राजस्थानी सफेद पगड़ी, धोती कुर्ता पहने था, हाथों में दुनाली, कमर पर गोलियों की बेल्ट, कंधे पर थैला था। मैंने अचानक ही उनसे राम राम कर लिया तो उन्होंने भी राम राम किया। मैंने पूछा कि आप कौन हैं और कहाँ जा रहे हैं।

वे बोले हम डाकू हैं और अयोध्या जा रहे हैं। मैंने मजाक से पूछा कि ये बन्दूकें असली हैं क्या? तो एक ने कहा कि चला के दिखाऊँ क्या? वे बोले राम हमारे आराध्य हैं और हमारे कई लोग हैं जो झुण्ड बनाकर अलग-अलग रास्तों से अयोध्या जा रहे हैं।

अयोध्या पहुंचे

हम किसी से पूछते कि अब अयोध्या कितनी दूर है तो सब यही कहते कि बस थोड़ी ही दूर है। और वह थोड़ी दूर बाद भी थोड़ी दूर ही रहता...। धीरे- धीरे और भी लोग मिलने लगे। दसों, बीसों से सैकड़ों और अब पंचकोसी तक आते-आते हजारों हो गये। अयोध्या पहुंचे तो दृश्य ही बदल गया। जहां परिन्दा भी पर नहीं मार सकता था वहां लाखों कारसेवक जोश के साथ एकत्र थे।

बड़ी छावनी, छोटी छावनी सहित अनेक स्थानों पर ठहरने व भोजन की व्यवस्था थी। तीनों मित्रों ने सरयू जी में स्नान किया। थकान उतारी। मन्दिर के लंगर में भोजन किया। छावनी में ही सूचना मिली कि कल सुबह सभी कारसेवक रामधुनी करते हुए शान्तिपूर्ण तरीके से श्री रामलला के दर्शन करने श्रीराम जन्मभूमि पर जाएंगे। अयोध्या के सभी रास्ते श्री रामभक्तों से भर गये थे।

दूसरे दिन घोष लगाते रामधुनी करते लाखों कारसेवक हर उस रास्ते से आगे बढ़ रहे थे जो रामजन्मभूमि तक जाता था। पुलिस की तादाद भी हजारों थी। बन्दूकधारी, मशीनगन वाले, आंसूगैस वाले और डण्डे वाले सभी तरह की पुलिस फोर्स थी। कुछ गुण्डे और डाकू या कैदी जैसे लोग भी हाथों में हथियार लिए खड़े थे।

पुलिस की गोली-लाठी

जोश ही जोश में मेरा साथी रतनसिंह कुछ आगे निकल गया। मैंने खूब आवाजें दीं... मना किया। परन्तु वह भागकर चला गया। तभी अचानक लाठी चार्ज हुआ और गोलियों की आवाजें आने लगीं। मैं और ईदन सिंह सामने वाले कमरे में घुस गये। वहां 20-25 कारसेवक हो गये थे। उसी कमरे में शहीद कोठारी बन्धु भी थे। तभी दो मशीनगन वाले सिपाही आये और हमें बाहर निकलने को कहा। एक कारसेवक गोविन्द जी ने नाटक करते हुए

एक पुलिस वाले के पैर पकड़ लिये और छोड़ने को कहा। उसने कहा कि तुरन्त बाहर भाग जाओ। गोविन्द जी के साथ मैं और ईदन सिंह भी उनके पीछे भागे। तो पीछे से महेन्द्र नाथ जी अरोड़ा भी भागे। तब तक सिपाही ने गेट बन्द कर दिया और गोलियां चलानी शुरू कर दी। अरोड़ा जी को गोली लगी। हम उन्हें उठाकर ले जाना चाहते थे तभी बाहर सड़क से हम पर गोलियां चलने लगीं। हम दीवार की ओर आ गये और फिर दीवार के सहारे, गलियों में होते हुए उनसे बचे। रास्तों में सिपाहियों ने खूब डण्डे बरसाये।

गोली लगी

हम डण्डे खाते, गिरते-पड़ते.. अस्पताल पहुंचे। रास्ते में पुलिस की गाड़ियों में लाशों को ले जाते हमने देखा। अस्पताल में घायलों का उपचार हो रहा था। हम भी कराह रहे थे दीवार पर घायलों के नामों में रतन सिंह का नाम पढ़कर हम उनके पास पहुँचे। वह होश में आ गया था। उसके गोली आरपार हो गई थी। हमारी जान में जान आ गई। फिर वहीं अचानक गश खाकर मैं गिर पड़ा। होश में आया तो देखा कि ईदन सिंह और मैं आसपास के बेड पर लेटे हैं। डॉक्टर्स ने उपचार कर दिया था। मलहम, लेप, गोलियां। दो दिन एडमिट रहने के बाद हम जयपुर के लिये रवाना हुए। रतन सिंह का चूंकि ऑपरेशन हुआ था अत: वह अन्य वाहन से भेज दिया गया था। हमारे बैग और सामान कब कहां रह गये, पता ही

नहीं चला।

कारसेवा : 06-12-1992

डॉ. विनोद शर्मा ने 1992 की कारसेवा में अपनी आंखों के सामने ढांचा ध्वस्त होते देखा। उनके साथ सांगानेर से बड़ी संख्या में कार्यकर्ता कारसेवा के लिए अयोध्या गए। अयोध्या में आईआईटी फैजाबाद में उन्हें रुकाया गया। आगे का वर्णन उन्हीं के शब्दों में- ''हमें वहां ढांचे के चारों ओर दीवार पर खड़े रहने तथा कारसेवकों को सहयोग करने को कहा गया। निकर पहना, एक दुपट्टा जेब में रख लिया। सामने मंच पर आचार्य धर्मेन्द्र, साध्वी ऋतम्भरा जी, अशोक सिंहल जी, महन्त नृत्य गोपाल दास जी महाराज, आडवाणी जी, जोशी जी, उमा भारती जी इत्यादि कारसेवकों को जोश के साथ संबोधित कर कारसेवा करने को कह रहे थे।''

बारुद की छड़ों से विस्फोट

सबके उद्बोधन के बाद सन्तों ने हुंकार भरी... एक धक्का और दो.. और देखते ही देखते पुलिस का घेरा तोड़कर हजारों कारसेवक दीवारों पर चढ़ने लगे। शिव सैनिकों ने हमें भी दीवार पर धक्के मारकर गिरा दिया। हमने भी उनका सहयोग करना प्रारंभ कर दिया। मैं ढांचे पर चढ़ने की कोशिश करने लगा, परन्तु सफल नहीं हो सका। अन्दर जाकर खम्बे तोड़ने लगा। तभी सारा ढांचा हिल गया, परन्तु एक पिलर नहीं हट रहा था। कुछ शिव सैनिकों ने हमें दूर किया और एक शिव सैनिक बारूद की छड़ें लेकर अन्दर चला गया। सब दूर हो गये थे। अचानक अंदर से विस्फोट हुआ, ढांचा पीछे की ओर भरभरा कर गिर गया। वह शिव सैनिक कहाँ गया, पता ही नहीं चला। सब तरफ घोष लगने लगे। सूर्यास्त का सूर्य सूर्यवंशी रामलला की जन्मभूमि पर स्थित बाबरी ढांचे के ध्वस्त होने का साक्षी बना।

कारसेवक ढांचे की ईंटे अपने साथ घरों में ले जाने लगे। मैं भी दो ईंट बैग में ले आया था, किन्तु रेल में भाईसाहब ने उन्हें वहीं निकालकर डलवा दी। रेल के डिब्बे में किसी प्रकार बैठकर, लटककर, लेटकर आये। वहाँ तो सचमुच देवदुर्लभ दृश्य ही था। इस प्रकार वह अविस्मरणीय दृश्य जब भी याद आता है तो रोम-रोम रोमांचित हो जाता है।

(चम्पाराम जी की बगीची के पास,
व्यास मौहल्ला, सांगानेर, जयपुर)

तय करके गए थे ढांचा तोड़ेंगे वरना सरयू में समाधि ले लेंगे

परमानंद आचार्य

अयोध्या पहुँचने के रास्ते में अवरोध आ सकते हैं, यह सोचकर सवाईमाधोपुर से हम 21 कारसेवकों की टोली 17 सितम्बर, 1990 को ट्रेन से रवाना हुई। हमारी टोली में तब के सांसद श्री किरोड़ीलाल मीणा तथा विधायक श्री मदन दिलावर भी थे, जिनको सुरक्षित अयोध्या पहुंचाने की जिम्मेदारी हमें दी गई थी। ईश्वरीय कार्य करने का अवसर मिल रहा था, यह सोचकर सब में बड़ा जोश और उत्साह था।

अयोध्या से लगभग 60 किमी. पहले एक स्टेशन आता है जगदीशपुर। वहां चेतावनी दी गई कि अयोध्या में ट्रेन नहीं रूकेगी। मन बैचेन हुआ। ट्रेन की गति बहुत तेज थी। अत: कूदना भी संभव नहीं था। सारे सिस्टम कटे थे, जंजीर नहीं खिंची तो मैंने सोचा राम काज के लिए यदि ये सब पहुंच जाए, इसके लिए मेरा बलिदान यहीं हो जाये तो भी ठीक। ट्रेन कारसेवकों से भरी पड़ी थी। एक क्षण खोए बिना ही मैंने हॉज पाईप तोड़कर भाप निकालने का निर्णय लिया और सबके मना करने पर भी ताकत से चलती ट्रेन में ही पीछे जाकर पैरों से हॉज पाइप तोड़ डाला। ट्रेन कुछ दूर जाकर रूक गई, जय श्रीराम का नारा लगा। सब कारसेवक जगदीशपुर के पास उतर कर भागे। कुछ को चोट लगी, कुछ पकड़े गए पर कुछ भागने में सफल हुए।

हमारी मंडली वहां से थोड़ी दूर खड़े एक ट्रक में बैठ गई और कहीं ले जाकर छोड़ने की प्रार्थना की। उसने हमारे ऊपर तिरपाल डाल दिया और कहा आगे चैकिंग है। कोई भी बोलना या खांसना नहीं। चैक पोस्ट आई। हम सब श्वास रोक कर बैठ गए। ट्रक को जाने दिया। ट्रक वाले ने हमें जंगल में छोड़ दिया। उस अनजानी जगह मिल गए हमें अनेक राम दूत। खेतों में होते हुए, पैदल चलते-चलते हम अयोध्या पहुंच गये।

वहां सरयू में स्नान किया। डॉ. किरोड़ीलाल एवं मदन जी दिलावर का नाम बदलकर स्वामी किरोड़ानन्द जी महाराज एवं स्वामी मदनानंद जी महाराज रख दिया। मदन दिलावर जी को भगवा वस्त्रों में कीर्तन करते

हुए, हाथ में खरताल लेकर साधु मंडली बनाकर आगे बढ़ते गये।

लोगों को पता तो चले कि सांसद व विधायक भी कारसेवा में आए है, इसलिए दोनों जन प्रतिनिधियों का भाषण कराने की सोची। योगा योग से एक स्थान पर बड़ी सभा हो रही थी। हजारों कारसेवक बैठे थे। संचालक महोदय के कान में मैंने बताया तो मंच से आवाज आई कि स्वामी किरोड़ानन्द जी महाराज और स्वामी मदनानन्द जी महाराज भी संतों के मंच पर आकर अपना स्थान ग्रहण करें। दोनों का जोशीला भाषण हुआ। बाद में इन दोनों की अगुवाई में अयोध्या में चौराहे पर बैठकर धरना प्रदर्शन हुआ। सब की गिरफ्तारी हुई तथा जेल भेजने का आदेश भी। बहुत भीड़ थी प्रशासन के हाथ-पांव फूल गये और अयोध्या से बाहर छोड़ने का आदेश हो गया। वाहनों से किसी को कहीं, किसी को कहीं छोड़ा। कौन फंस गया, पता नहीं, पर हम कुछ लोग भाग कर अयोध्या के एक मंदिर में छिप गये। आगे जो हुआ वह बहुत ही दु:खद और पीड़ादायक था। चारों ओर गोलियों की आवाज, कर्फ्यू, खून की नदियां।

बलिदानी जत्था- आखिर गुंबद तोड़कर ही आया

1992 की कारसेवा के लिए सवाईमाधोपुर से एक बलिदानी जत्था हम चयनित कारसेवकों का था। संकल्प लिया कि इस बार ढांचा ढहाकर ही आयेंगे वरना सरयू में समाधि ले लेंगे।

नवविवाहिता को छोड़कर कारसेवा में गए

बलिदानी जत्थे के नाम पर जहां हमें आशीष और शुभकामनाएं मिल रही थीं, वहीं कुछ कारसेवकों के परिवारों ने उन्हें रोकने की कोशिश की, परन्तु कोई रूका नहीं। एक कारसेवक की चलने से पूर्व ही शादी हुई थी। नवविवाहिता पहली बार ससुराल आई थी फिर भी वह हमारे साथ चल पड़ा। एक घर से पिता-पुत्र दोनों साथ चले। हमारे जत्थे में चपरासी से लेकर सेना में रहे बड़े अधिकारी तक थे। इस बार बहुत पैदल चलना पड़ा, चावल-धान के खेतों में यात्रा करनी पड़ी पर आगे रामदूत मिलते गये। व्यवस्था सब प्रकार की करते गये।

6 नवम्बर को हमारी 21 कारसेवकों की टीम ने सिर पर केसरिया (कफन के रूप में) धारण किया और सब बैठे सूचनाएं सुन रहे थे 'कुछ करना नहीं है, केवल परिक्रमा करनी है।' आगे किसी को जाने ही नहीं दे रहे थे। हम सबके सिर पर हनुमान जी सवार थे। हटो बलिदानी जत्था, कहकर आगे बढ़ते गए। हमसे भी पहले अनेक कारसेवक वहां थे। उस झुंड में मिल गये। फिर क्या था, जोश आया, बैरिकेड्स से लोहे के पाईप तोड़ आगे बढ़ते गये। उन्हीं पाईपों से ढांचे का प्लास्टर उतारने लगे। ऐसा लगता था कि बहुत सारे इस कार्य के विशेषज्ञ वहां हैं। एक के ऊपर एक लगकर गुम्बद पर चढ़ गये। हममें से एक के पास कैमरा था, वो फोटो ले रहा था उसका कैमरा तोड़कर फेंक दिया गया।

लोग कहते हैं हमने तोड़ा- हमने तोड़ा, पर सच तो यह हैं कि केवल और केवल रामजी ने ही गुम्बद तोड़े। मोटी-मोटी दीवार, खड़े होने के लिए भी एक दूसरे का सहारा लेना पड़ रहा था। अचानक गुम्बदों में हुए छेदों में मोटे-मोटे रस्से फंसाए, खिड़की-द्वार टूटे और बंधे हुए रस्से जय श्रीराम के साथ खींचे। टूट गया गुम्बद। मानो विस्फोट हुआ हो। कोई वहां रोकने वाला नहीं था। कारसवेक ऊपर से नीचे गिरते। नीचे वाले हाथों में थामते और अस्पताल भेजते थे। कुछ दब गये, कुचल गये। भीषण उत्साह था। तीनों गुम्बद लगभग 4 बजे तक टूट गये।

अब आपस में सूचनाएं आई कि कारसेवक हो तो कारसेवा करो। एक-एक ईंट यहां से कलंक ही हटा दो। देखते ही देखते एक भी ईंट, पत्थर, भाटा वहां बचा नहीं, मिट्टी, कचरा भी हट गया।

जहां मुलायम की पुलिस कारसेवकों पर 1990 में गोलियां चला रही थी, वहीं कल्याण सिंह जी की पुलिस इशारे से बता रही थी-जल्दी जाओ, काम करके आओ, जयश्रीराम।

आनन-फानन में हुई सफाई

हलचल बढ़ने लगी। टेन्ट लगा और भगवान रामलला विराजमान हुए। दर्शन कर सकने वालों ने दर्शन किए। मैं भी उन सौभाग्यशाली में से एक हूँ, जो यह सब कर और देख पाया। सब बिछुड़ गये। कुछ घायल हो गये। कोई कब पहुँचा, कोई कब पहुँचा, पर यह बलिदानी जत्था अपना वचन निभाकर कुछ दिन बाद अपने-अपने स्थान पर पहुंच गया।

(लेखक काठियाबाबा आश्रम, बारां के संरक्षक हैं तथा एकल अभियान (चित्तौड़ प्रान्त) के भाग उपाध्यक्ष हैं)

राजस्थान के मंत्री, विधायक, सांसद भी गए कारसेवा में

राजस्थान की तत्कालीन भैरोंसिंह शेखावत की सरकार में मंत्री रहे श्री ललित किशोर चतुर्वेदी ने मंत्री पद से इस्तीफा देकर कारसेवा में भाग लिया। तत्कालीन सांसद किरोड़ी लाल मीणा, विधायक मदन दिलावर तथा तारा भंडारी ने भी कार सेवा में सहभागिता की थी। विधायक जोगेश्वर गर्ग अपनी माताजी के साथ कारसेवा में गए थे।

ललित किशोर चतुर्वेदी

किरोड़ी लाल मीणा

मदन दिलावर

जोगेश्वर गर्ग

तारा भंडारी

एक वर्ष की बेटी के नाम वसीयत करके गए

सीमा दया

जब 1990 में मेरी नई-नई शादी हुई थी तब राम जन्मभूमि आंदोलन चल रहा था। मेरे पति उसी दौरान कारसेवा में गए थे, जहां उन्हें नेपाल बॉर्डर की लखीमपुर जेल में रखा गया था और मुलायम सरकार ने उस वक्त कारसेवकों पर फायरिंग कर बहुत अत्याचार किया था। हमारे गोल्डन दिन इसी जन्मभूमि आंदोलन में बीते, बाद में दूसरी कारसेवा (6 दिसंबर, 1992)में मैं भी पति डॉ. विजय दया के साथ अपनी 1 साल की बच्ची को छोड़कर गई थी। हमारे चिकित्सकों का एक समूह था, जिसमें हमारे वर्तमान क्षेत्र संघचालक डॉ. रमेश अग्रवाल भी थे।

महिलाओं के लिए अलग से कोई व्यवस्था नहीं थी इसलिए मैं पुरुष कारसेवकों के साथ ही एक स्कूल में रुकी थी। 4 दिसंबर की कड़ाके की सर्दी में हम घास के बिछौने पर सोते थे। 28 नवंबर को हम अयोध्या पहुंचे और 8 दिसंबर को वहां से वापस रवाना हुए। इसी के साथ पूरे देश में जिहादियों ने जबरदस्त हिंसा की। शाम 6:00 बजे तक तीनों ढांचे ध्वस्त होने के बाद अधिकांश कारसेवक अपने डेरों पर आ गए थे।

रात को एक बजे जब जन्मभूमि पर अस्थाई निर्माण हो रहा था उसी समय फैजाबाद से आई आर्मी ने जन्मभूमि को हस्तगत करने हेतु मार्च किया। तब पूरे अयोध्या में लाउड स्पीकर से जोरदार अपील होने लगी कि सभी कारसेवक जन्मभूमि के सारे रास्ते घेर कर ब्लॉक करें और आर्मी की एंट्री को रोक दें। उस समय दो लाख कारसेवक जन्मभूमि को घेर कर एक छावनी बना चुके थे और जब तक अस्थाई मंदिर नहीं बन गया तब (सुबह) तक आर्मी को घुसने नहीं दिया। अयोध्या से लौटते समय हमारी ट्रेन पर जिहादियों ने भीषण पथराव किया, जिसका जवाब हम सभी कारसेवकों ने सठे साठ्यम की तर्ज पर पथराव कर दिया। ट्रेनों की छतों पर बैठे हजारों कारसेवकों ने इस पथराव को बखूबी अंजाम दिया। आज भी मैं उस घटना को याद कर रोमांचित हो जाती हूं।

(लेखिका संस्कार भारती, जयपुर की महानगर मंत्री हैं)

डॉ. विजय दया

सीमा दया के पति डॉ. विजय दया ने बताया- "मेरी नई शादी हुई, लेकिन मैं कारसेवक के तौर पर अयोध्या जाना चाहता था। छुपते-छुपाते ट्रेन में बैठ गया, किसी को शक ना हो, इसलिए राम भक्तों को भी गालियां देनी पड़ी। लखनऊ पहुंचने पर पीएससी की गाड़ियों ने घेर लिया। करीब 10 दिन मुझे जेल में रखा। जेल से छूटा तो घर आने के बजाय अयोध्या गया। 1992 में फिर से कारसेवा शुरू हुई। इस बार पत्नी सीमा दया ने भी साथ जाने का निर्णय किया। एक साल की बच्ची के नाम वसीयत करके दोनों निकले। उस वक्त महिला कारसेवक बहुत कम थी।"

गुंबद पर बांधा रस्सा

महेन्द्र नागर

अयोध्या जाने के लिए लखनऊ के आगे गांवों, जंगलों से होते हुए जाना पड़ा। गांव वालों ने बड़ी सहायता की। मुलासाड़ी गांव में जब पुलिस के आने की सूचना मिली तो मुझे और मेरे साथी मोहन बजाज को तुड़ी के भंडार में छुपा दिया तथा ऊपर से तिरपाल डाल दिया था।

1990 वाली कारसेवा में सरयू नदी का पुल पार करते समय पुलिस लाठी चार्ज में माथे तथा पैरों में चोट आयी थी। 2 नवम्बर को फिर कारसेवा के लिए ढांचे की तरफ बढ़ रहे थे कि दिगम्बर अखाड़े के पास हुई गोलीबारी से घायल हो गया था। पैर के बांए हिस्से में गोली लगी। फैजाबाद के बाबा रामदास परमहंस के जनता चिकित्सालय में 14 दिन तक ईलाज चलता रहा। वहां से लौटकर सूरतगढ़ के चिकित्सालय में भी उपचार चला।

1992 की कारसेवा में फिर से अयोध्या गए। 6 दिसम्बर को विवादित ढांचे पर चढ़ गया। बीच के गुंबद पर रस्से बांधने लगा। जैतसर के सुधीर शर्मा और केरल से आए कारसेवक दूसरे गुंबद पर चढ़ गए थे। आह्वान हुआ कि ढांचे को नीचे से तोड़ना शुरू किया जाए। ढांचे के नजदीक शेषनाग मंदिर में निर्माण कार्य चल रहा था। वहां से गैंतियां, हथौड़े, सब्बल आदि लाकर कारसेवकों ने ढांचे को तोड़ना शुरू किया और शीघ्र ही धराशायी कर दिया।

-वार्ड 45, आदर्श कॉलोनी, भवानी चौक, सूरतगढ़

तीर-कमान धारी वनवासी बंधुओं की अनूठी कारसेवा

नारायण उपाध्याय

बांसवाड़ा से तीर-कमान धारी वनवासी बंधुओं के जत्थे को लेकर कारसेवा में गए। ढांचा ध्वस्त के समय मंच की भूमिका को रेखांकित करते हुए एक संस्मरण, जब मंच से कहा गया, '' जब टूटना तय ही हो गया है तो इसे पूरा तोड़ डालो, नामो निशान मत छोड़ना''

रामजन्मभूमि आंदोलन के सिलसिले में अयोध्या जी में विश्व हिंदू परिषद ने 1987 में एक दिन का श्रीराम महायज्ञ आयोजित किया गया था। इसकी सुरक्षा का दायित्व बांसवाड़ा के वनवासियों को सौंपा गया। उस समय मैं विश्व हिन्दू परिषद बांसवाड़ा का जिला संगठन मंत्री था व गढ़ी राव साहब स्व. श्री इंद्रजीत सिंह जी राजस्थान के अध्यक्ष श्री लालशंकर जी पारसी (जो बाद में जिला संघचालक बांसवाड़ा रहे) के सामूहिक नेतृत्व लगभग 400 तीर व कमान धारी वनवासी भील बंधुओं के साथ 7 बसों से रवाना हो अयोध्या पहुँचे। तीर कमान हाथों में लिए वनवासी बंधुओं को यज्ञ के चारों ओर लगाया गया। यह सुरक्षा प्रतिकात्मक थी।

6 दिसम्बर,1992की कारसेवा में रवानगी से पूर्व का छायाचित्र

सोहन सिंह जी ने कहा वनवासी बंधुओं का पूरा ध्यान रखना

1992 की कारसेवा के लिए लगभग 450 वनवासी कारसेवकों के साथ अयोध्या के लिए रवाना हुए। मैं वाहिनी प्रमुख व श्री भवानी जी जोशी (जो आगे चलकर भाजपा सरकार में मंत्री रहे) सह वाहिनी प्रमुख थे। हम जब नई दिल्ली रेल्वे स्टेशन पहुंचे तब सोहन सिंह जी (तब दिल्ली झंडेवाला में उनका निवास था) मिले, कहा ''नारायण, देखो तुम्हारे साथ क्षेत्र के भोलेभाले वनवासी हैं, उनका पूरा ध्यान रखना है। यह सुनिश्चित करना है कि यह सभी सुरक्षित अपने घरों को लौटें। तुम्हें एक कार्य करना होगा। पूरे रास्ते चैकिंग होगी, पूछताछ होगी। यदि पुलिस वालों को सही उत्तर नहीं मिला तो वे वनवासी कारसेवकों को गिरफ्तार कर लेंगे। तुम्हें इस बात का ध्यान रखना है कि जहाँ कहीं एक भी वनवासी बन्धु को गिरफ्तार कर ले, आपको आगे नहीं बढ़ना है, वहीं गिरफ्तारी दे देनी है।''

गगनभेदी उद्घोष

हम दिल्ली से आगे बढ़े। अलीगढ़ के नजदीक आते-आते पुलिस की पूछताछ तेज हो गई, कुछ कारसेवक संतोषप्रद उत्तर नहीं दे पाए। 5 कारसेवक गिरफ्तार हो गए, तब पूरी वाहिनी को गिरफ्तारी देनी ही थी। सभी कारसेवक आकाशभेदी नारे ''रामलला हम आएंगे, मन्दिर वहीं बनाएंगे।' ','' जिस हिन्दू का खून न खोला, खून नहीं वह पानी है, रामजन्मभूमि के काम न आये वह बेकार जवानी है।'' ''यह तो पहली झांकी है, मथुरा-काशी बाकी है।'','' तेल लगाओ डाबर का वंश मिटाओ बाबर का'' आदि नारे लगाने लगे। हमारी पूरी वाहिनी (450 कारसेवकों) ने अलीगढ़ में गिरफ्तारी दी। कुल 9 दिन अलीगढ़ जेल में कैदी के रूप में बिताए। 30 नवम्बर की घटना के बाद पूरे उ. प्र. में कर्फ्यू लग गया। अलीगढ़ में दँगा हो गया, किंतु अलीगढ़ के साहसी रामभक्तों ने उन स्थितियों के बीच जहाँ बाहर गोलियों की आवाजें आती थी, की परवाह न करते हुए गिरफ्तार कारसेवक जो लगभग 8 हजार की संख्या में थे , की शानदार भोजन व्यवस्था की। हम 9 नवम्बर को अलीगढ़ जेल से छूटे। 11 नवम्बर, 1990 की पुन: बांसवाड़ा पहुंचे ।

1992 की कारसेवा

उस समय (दिसम्बर 1992) में वकालात प्रारम्भ कर राजसमन्द रहने लग गया था। वहाँ से लगभग 30 कारसेवकों का जत्था 2 दिसम्बर,1992 को रवाना होकर 4 दिसम्बर को अयोध्या पहुंचा था। उस समय हमारे जत्थे का नेतृत्व कांकरोली के दिनेश जी पालीवाल कर रहे थे। 6 दिसम्बर की होने वाली

घटनाएं लगभग सब आंखों के सामने घटित हुई। लगभग 9 बजे ढांचे के पास वाले मैदान पर सभा जुट गई थी। सभा में स्व. अशोक जी सिंहल, संघ के सरकार्यवाह शेषाद्री जी , लालकृष्ण जी आडवाणी, मुरली मनोहर जी जोशी, साध्वी ऋतम्भरा, साध्वी उमाभारती, आचार्य धर्मेन्द्र आदि मंच पर थे।

आडवाणी जी ने रोकना चाहा

लगभग 10 से 10.30 का समय होगा ,आडवाणी जी भाषण कर रहे थे तभी तथाकथित बाबरी ढांचे की तरफ हल्ला मचा। भाषण रोक कर आडवाणी जी ने ढांचे की तरफ देखा। 25-30 कारसेवक ढांचे के गुबंद तक पहुच गए और तोड़-फोड़ शुरू कर दी। तब आडवाणी जी विचलित हो उठे, माइक से जोर-जोर से घोषणा करने लगे कि सब ढांचे के गुबन्द से नीचे उतर आएं। ढांचे को तोड़ना हमारी योजना का हिस्सा नहीं है। लेकिन उत्साही कारसेवक नहीं माने। उनको तो बस एक ही धुन चढ़ी थी कि 450 वर्ष पूर्व किये गए कलंक को हमें नष्ट करना है ।

जब आडवाणी जी की नहीं सुनी तो वे हताश हो नीचे बैठ गए, तब संघ के सरकार्यवाह ने माइक सम्हाला, उन्होंने सभी कारसेवकों को अनुशासन का हवाला देकर कहा, सभी नीचे आ जाय, ढांचा तोड़ना व गिराना हमारी योजना का हिस्सा नहीं है। कोई नहीं माना।

कोई नामोनिशान नहीं छोड़ना

तब तक ढांचे पर 500 से 700 कारसेवकों ने धावा बोल दिया था। अंत में अशोक जी सिंहल मंच पर आए और कहा ''जब टूटना तय ही हो गया है तो इसे पूरा तोड़ डालो, नामोनिशान मत छोड़ना!'' अंत में साध्वी ऋतम्भरा जी व साध्वी उमा भारती ने मोर्चा सम्हाला ,वे कारसेवकों में उत्साह का संचार करने लगी,''एक धक्का और दो ,बाबरी ढाँचा तोड़ दो'' के नारे गुंजायमान होने लगे ,जोश बढ़ता गया, कारसेवक तम्बू गाड़ने में काम आने वाले कील, अयोध्यावासियों के घरों से कुदाल फावड़े, गेंती आदि लेकर आ गए। ढाँचा गिरना शुरू हो गया। इस बीच सावधान व सजग कारसेवक मूर्तियां बाहर ले आये। अस्थायी चबुतरा बना उस पर स्थापित कर दी। 76 फीट ऊंचा 3 गुबंदों वाला ढाँचा जिसकी दीवार 10 से 12 फुट चौड़ी थी लगभग 8 घण्टों में पूरा गिरा दिया। उस ध्वस्त ढांचे से 4 फुट ऊंची विष्णु भगवान की मूर्ति , एक 3 फुट ऊंचा विराट घण्टा, कसौटी पत्थर के खम्भे जिन पर देवी-देवताओं की मूर्तियां अंकित थी, दीवारों से निकली। दीवारों की ईटों पर स्वास्तिक अंकित था, यह अनवरत रात्रि 10 बजे तक चलता रहा, कुछ कारसेवक व अयोध्यावासियों ने जिस चबूतरे पर मूर्तियां रखीं थीं, उसके आस-पास ईंटों की 8 फीट ऊंची दीवार चुन दी गई।

अन्य चरण 1987 में 92 के वर्ष इस आंदोलन के विभिन्न चरण पूरे करने में ही व्यतीत हो गए, कभी विराट हिन्दू सम्मेलन, तो रामशिला पूजन यात्राएं, तो श्रीराम ज्योति यात्राएँ, तो कारसेवकों की अस्थि कलश यात्राएं। हम सब इन यात्राओं में रहते थे। कभी खाना एक समय नसीब तो कभी रात्रि 11 बजे। भीमपुर बांसवाड़ा की घटना है श्रीराम ज्योति यात्रा थी। 20 कार्यकर्ता थे। घाटोल, घण्टाली, पीपलखूंट से लोटते रात्रि 11 बज गए। फिर खाना बनाना था। धर्मपत्नी को खाना तैयार करना था। कोई सब्जी काट रहा, कोई आटा गूंध रहा, उस समय गैस का चूल्हा कहाँ था? बाती वाले स्टोव थे। रात्रि 2 बजे रामभक्त कारसेवकों का भोग लगा, क्या आनन्द के दिन थे? क्या जनून था, क्या उत्साह था। उस तपस्या, उस साधना का फल आज मिला है।

-लेखक आमेट (चित्तौड़ प्रांत) के जिला संघचालक हैं।

दो और पाँच साल के बच्चों को छोड़कर पत्नी सहित गए

उदयपुर से रवाना हुए कारसेवकों के जत्थे को विदा देने के लिए स्टेशन पर पूरा शहर उमड़ पड़ा था। हमारे जत्थे में मातृशक्ति, कॉलेज विद्यार्थी और स्वयंसेवक साथी थे। उस समय मैं और मेरी पत्नी रूक्मा पामेचा, हमारे दोनों बच्चों (2 वर्ष व 5 वर्ष) को घर छोड़कर कारसेवा में गए थे। अयोध्या पहुँचने के बाद वहाँ की जबरदस्त सर्दी में एक स्थान पर

राजेन्द्र पामेचा

सीढ़ी के नीचे चारा बिछाकर एक कंबल पर 2-3 लोग सोए।

कैसे जाएंगे खाली हाथ?

6 दिसम्बर, 1992 को आचार्य धर्मेन्द्र भाषण दे रहे थे। साथ ही सूचना भी चल रही थी कि सभी लोग मुट्ठी भर सरयू रेती से कारसेवा करेंगे। हम सभी साथी बैठे चर्चा कर रहे थे, कि उदयपुर वालों ने माला पहनाकर विदाई दी है, खाली हाथ तो नहीं जाएंगे। दोपहर 12:05 पर सुंदर जी कटारिया (वर्तमान विश्व हिन्दू परिषद, चित्तौड़ प्रांत सहमंत्री) कहते हुए आ रहे थे कि सुरक्षा घेरा टूट गया और कारसेवक गुंबद पर चढ़ गए हैं। अयोध्यावासियों ने कारसेवकों को गेती, कुदाल, फावड़े उपलब्ध कराए। बैरिकेडिंग तोड़ते हुए लगभग 100 लोग एक पाइप से ढांचे को नीचे से तोड़ने लगे, देखते-देखते ढांचा भरभरा कर गिर गया। उदयपुर के कुछ बंधु ढांचे से धूल धूसरित होकर निकल रहे थे।

अस्थाई मंदिर निर्माण का आह्वान

रात्रि 2 बजे सभी को मंदिर निर्माण का आह्वान हुआ। मंदिर की तरफ जाने वाले सभी गलियों में कारसेवक बैठ गए ताकि मिलिट्री नहीं आ सके। अस्थाई मंदिर निर्माण में ईंट देते हुए मैं भी साक्षी बना। अस्थाई मंदिर निर्माण होकर रामलला टेंट में विराजे। अयोध्या से लौटते समय जब ट्रेन गुजर रही थी तो छतों पर खड़े होकर वहां की जनता ने अभूतपूर्व स्वागत किया। वापसी में कर्फ्यू होने से 2 दिन तक सभी कारसेवक भूखे ही रहे।

एक बेटा राम के नाम

दूसरी ओर मां को लग रहा था कि दोनों शहीद होकर आयेंगे। उस समय घर पर टीवी नहीं था तो मां बार-बार टीवी पर खबर देखकर आती तो पिताजी कहते ''जो सबके साथ होगा, हो जायेगा। एक बेटा राम के नाम बलिदान हो गया तो क्या फर्क पड़ता है।''

(लेखक वरिष्ठ प्रबंधक, ग्रामीण बैंक से सेवानिवृत्त हैं तथा वर्तमान में क्षेत्र गो सेवा संयोजक हैं)

महंत बाबा अवधशरण जी ने की सेवा-सुश्रुषा

21 अक्टूबर, 1990 को ट्रेन से 70 कारेसेवकों का जत्था श्रीगंगानगर से रवाना हुआ।

झिलाई रेलवे स्टेशन से कई दिन-रात पैदल चलकर 27 अक्टूबर, 1990 की सुबह-सुबह हम सरयू के तट पहुँचे। वहाँ मौजूद मल्लाह रामआधार यादव हमें सरयू पार कराने के लिए तैयार हो गया। तभी वहाँ दो लोग आए और उससे कहा कि ये लोग आडवाणी के आदमी हैं, इनको नदिया पार नहीं कराना है। उनके चले जाने के बाद हमने मल्लाह से आग्रह किया तो उसने कहा कि वह रात को चुपके से नदिया पार करा देगा। हमने उसकी झोंपड़ी के बाहर ही डेरा डाल दिया क्योंकि पैदल चलने से छलनी हुए पांव के छाले बेहद दर्द कर रहे थे।

कष्टकारी रात

हमारे पास खाने को कुछ नहीं बचा था। रात को हमने मल्लाह से खाने के लिए कुछ मांगा तो उसने हमें आटा, आलू, हरीमिर्च, लहसुन और तेल की एक शीशी दे दी। मैंने और हमारे एक साथी लक्ष्मण खींची ने रोटियां बनाई, अन्य ने सब्जी बनाई। कच्ची-पक्की जैसी रोटियां बनीं, हम सब चट कर गए, भूखे जो थे। यह हमारे जीवन की सबसे कष्टदायी रात थी जो कभी झोंपड़ी तो कभी खेतों के बीच में, राम-राम कर काटी। ठंड से बचाव के लिए कोई कपड़ा हमारे पास नहीं था। मल्लाह के पास भी कोई अतिरिक्त कपड़ा नहीं था, जो हमें दे देता। दूसरी ओर पुलिस गश्ती दल रात भर सर्च लाइट लगाकर कड़ी नजर रखे हुए था।

राजकुमार सोनी

महंत जी ने की सेवा-सुश्रुषा

मन से गिरफ्तारी का भय निकाल सरयू पुल पहुँचे तो वहां से निकल रहे दूध वाले ने बताया कि अयोध्या में प्रवेश के लिए सुबह 6 से 9 बजे तक कर्फ्यू में छूट है। इसी अवसर का लाभ उठाते हुए हमने अयोध्या में प्रवेश किया।

वैदेही वल्लभ कुंड के महंत अवधशरण जी हमारी हालत देख कर रोने लगे और 3-4 दिन उन्होंने हमारी सेवा की। दिगम्बर अखाड़े के महंत जी ने बताया कि बाबरी गुंबद पर भगवा ध्वज फहरा दिया गया है।

मंदिर की ओर प्रस्थान का आह्वान

अब जो कारसेवक जाना चाहते हैं वो लौट जाए। लेकिन अशोक सिंहल का कहना था कारसेवकों को मंदिर की ओर प्रस्थान करना चाहिए। लगभग 2 वर्ष बाद 1992 में फिर से कारसेवा का आह्वान हुआ तो मैं भी 4 दिसम्बर, 1992 को अयोध्या पहुँचा। अयोध्या पहुँचे कारसेवकों के जबरदस्त आक्रोश और गुस्से ने आखिरकार बाबरी ढांचे को ध्वस्त कर दिया।

(श्रीगंगानगर)

पुलिस वाले ने कहा-

"बंदूक की नाल ऊपर है, नीचे से निकल जाओ"

भंवर लाल शर्मा

उदयपुर से 1990 की कारसेवा में निकले आखिरी जत्थे में संभाग से 600 कारसेवक थे। उस समय संघ के महानगर कार्यवाह रहे श्री धर्मनारायण जोशी (बाद में विधायक बने) तथा विश्व हिंदू परिषद के उस समय के विभाग मंत्री महेन्द्र सिंह शेखावत नेतृत्व कर रहे थे। वैद्य रामेश्वर रटलई (उदयपुर) तथा राजकुमार गुप्ता देबारी अपने परिवारों सहित कारसेवा में गए।

रास्ते में ट्रेन 'निरस्त' कर दी गई

दिल्ली से लखनऊ जाने वाली हर ट्रेन में हर कोई कारसेवक था, लेकिन हर कोई मौन था। अगले दिन सुबह ट्रेन लखनऊ पहुंचने वाली थी, लेकिन रात 11 बजे ट्रेन को टुंडला स्टेशन पर केन्द्रीय सुरक्षा बलों ने घेर लिया। कुछ कार्यकर्ता इससे अचानक आक्रोशित हो उठे तभी जोशी व शर्मा हरकत में आए और संघ स्थान पर बजाई जाने वाली सिटी बजाकर सभी को प्लेटफार्म पर बिठाया और समझाया कि हमें किसी भी तरह का प्रतिकार नहीं करने के निर्देश मिले हैं, पूरी तरह अनुशासन में रहना है। इसके बाद प्रशासन ने सभी को गिरफ्तार करने की सूचना दी। स्टेशन से ले जाकर पास के कॉलेज में बिठा दिया गया और पुलिस घेराबंदी कर दी गई।

पुलिस ने कहा बंदूक की नाल ऊपर है, नीचे से निकल जाओ

देर रात गाड़ियां लगाकर कारसेवकों को आगरा जेल शिफ्ट किया जाने लगा। तब हमने पुलिस से चर्चा की, कहा कि हम तो कारसेवा के लिए आए हैं, हमें अयोध्या जाना है, जेल नहीं। तब पुलिसकर्मियों ने कहा, तो आपको रोका किसने है। हमने कहा, आप बंदूक लेकर खड़े हैं। तो उन्होंने कहा, बंदूक की नली ऊपर है, आप तो नीचे से निकल सकते हैं। इसके बाद चुपचाप एक-एक कारसेवक इधर-उधर खिसककर ओझल होने लगे। स्टेशन के पास और समीपवर्ती आबादी में जाकर खो गए।

श्रीरामजन्मभूमि संघर्ष के दिनों में आयोजित एक सभा को संबोधित करते हुए श्री धर्मनारायण जोशी। श्री गुलाबचंद कटारिया मंच पर बैठे हैं। (फाइल चित्र)

ग्रामीणों का सहयोग

अगले दिन की सुबह छिपे हुए कारसेवकों के लिए चौंकाने वाली थी। ग्रामीण जोर-जोर से पुकारते हुए आए कि जो भी कारसेवक हैं, वे हमारे पीछे आते जाएं। यह दृश्य भावुक करने वाला था। छिपे हुए कारसेवक एक-एक कर पीछे होते चले गए और एक स्थान पर स्नान-भोजन की व्यवस्था थी। कारसेवक इस बात को समझते हुए धन्य हो गए कि ग्रामीणों को उनके इस तरह छिपने की पूरी भनक थी और मदद की पूरी व्यवस्था की गई थी। इसके बाद ग्रामीणों ने सूचना दी आपको 11 बजे कानपुर वाली ट्रेन से निकलना है।

कानपुर से पहले ही आउटर पर उतरने के बाद कारसेवकों को स्थानीय कार्यकर्ता पनकी बिजलीघर स्थित हनुमान मंदिर ले गए।

सिख समाज का लंगर

अगले दिन स्थानीय कार्यकर्ताओं के साथ कारसेवक कानपुर के सरस्वती शिशु मंदिर विद्यालय पहुंचे। उस दिन रात को वहां सिख समाज की ओर से लंगर प्रसाद की व्यवस्था की गई थी। पग-पग पर प्रेम और सार-संभाल की व्यवस्था कारसेवकों को अचम्भित भी कर रही थी। कानपुर में अगली सुबह 30 अक्टूबर को सूचना आई कि अशोक सिंहल के नेतृत्व में कारसेवा हो गई। तब सभी गीत गाते हुए कर्फ्यू में ही निकल पड़े और उनके पीछे कानपुर के लोग जुड़ते गए। प्रशासन का मौन समर्थन नजर आया। उस दिन वहीं रुककर अगले दिन अयोध्या के लिए प्रस्थान किया। लखनऊ पहुंचने पर सूचना थी कि कैंटीन के पास माथे पर गोल पट्टी बांधे जो

मिलेगा, वह आपका साथी होगा। वह कार्यकर्ता स्टेशन से धर्मशाला ले गया।

ट्रेन का हौज पाइप काटा

31 शाम 5 बजे लखनऊ से प्रयाग जाने वाली ट्रेन में बैठे। यह गाड़ी जगदीशपुर स्टेशन रुकती थी जो अयोध्या के पास था। योजना थी कि यहां उतरकर पैदल बढ़ेंगे। लेकिन यह क्या, इस स्टेशन पर ट्रेन की गति और बढ़ गई। उस दौरान रेलगाड़ियों में चैन पुलिंग सिस्टम भी हटा दिया गया था। यहीं पर पल भर भी देर नहीं करते हुए धर्मनारायण जोशी और महेन्द्र सिंह शेखावत ने निर्णय कर चलती ट्रेन का जैसे-तैसे हौज पाइप काट दिया। ट्रेन रुकते ही सभी कूदे और निकल चले।

एक नवम्बर रात तक हम अयोध्या के निकटवर्ती जौनपुर गांव पहुंचे। वहाँ निर्देश मिले कि अयोध्या में कर्फ्यू है और अभी आगे नहीं जाना है। रात्रि में जिस परिवार के यहां ठहराया गया, वहां की महिलाओं ने सभी से कहा कि आगे न जाएं। उन्होंने भावुक होते हुए बताया कि दो दिन पहले ही शरद और रामकुमार कोठारी इसी कमरे में ठहरे थे और उनके बलिदान की सूचना उन्हें मिल चुकी थी। उस वक्त माहौल स्तब्ध हो गया था।

पुलिस बर्बरता का निशान

खैर, जौनपुर के बाद जब वे कर्फ्यू खुलने पर अयोध्या पहुंचे तो हनुमानगढ़ी गए। वहां पर उन्हें पता चला कि अशोक सिंहल के साथ कारसेवा के दौरान उदयपुर के भी पांच कार्यकर्ता हीरालाल सोनी, हिम्मत सिंह पंवार, हरीश शर्मा, रामेश्वर छीपा, यशवंत पालीवाल शामिल थे। उन्होंने भी पुलिस की बर्बरता झेली थी। हमने वहां गोलियों के निशान देखे, सरयू पुल पर जूते-चप्पल देखे, फटे कपड़े, रक्त के धब्बे भी देखे जो राम के काज के लिए आए कारसेवकों के बलिदान की गाथा बयां कर रहे थे।

कारसेवकों से कैसे पैसे?

कारसेवकों के पैसे कहीं बैग के साथ गिर गए हों या किसी जगह छूट गए हों, उन्हें इसकी कमी महसूस नहीं हुई। चाय तक के पैसे भी नहीं लगे। कदम-कदम पर सर्वसमाज कारसेवकों की सेवा में खड़े नजर आ रहा था। कहीं चाय भी पीते तो अगले पूछते, आप कारसेवक हैं क्या, चाहे हां कहें या मौन रहें, वे समझ जाते और कहते, कारसेवकों से कैसे पैसे। गांवों में पड़ाव के बाद आगे बढ़ने पर साथ में पूड़ी-गुड़-धाणी-मसाला साथ बांधते थे, ताकि रस्ते में कोई भूखा न रहे। गांवों में ठहराने के लिए बिस्तर तो इतने थे नहीं, ऐसे में चावल की भूसी पर तिरपाल डाला जाता था और कम्बल तो कारसेवक अनिवार्यत: घर से ही साथ लेकर निकले थे।

(लेखक विश्व हिंदू परिषद के पूर्व विभाग मंत्री रहे हैं)

भरतपुर के कारसेवक चढ़ गए थे गुंबद पर

संजय वशिष्ठ

मेरा पूरा परिवार ही संघमय था। पिताजी सरकारी अधिकारी के साथ ही संघ के कार्यकर्ता थे। बचपन से ही पांचजन्य, पाथेय कण आदि पत्रिकाएं पढ़ते हुए बड़े हुए। मेरे बड़े भाई पवन वशिष्ठ 1983 के शिलान्यास तथा 1990 व 1992 की कारसेवा में गए थे। मैं 1992 की कारसेवा में गया।

कारसेवक नदी के भंवर में फंसा

1992 की कारसेवा के लिए भरतपुर से बजरंग दल के तत्कालीन प्रमुख श्री अशोक गर्ग के नेतृत्व में हम 40 कारसेवकों का दल रवाना हुआ। हम लोग 23 नवम्बर को ही अयोध्या पहुँच गए थे। कारसेवापुरम में रहने की व्यवस्था की गई थी। एक दिन सरयू में स्नान करते समय हमारा एक साथी नदी के भंवर में फंस गया था। पास में नहा रहे कारसेवक महेश मित्तल ने उनको बचाया।

भरतपुर के कारसेवक चढ़ गए थे गुंबद पर

2 दिसम्बर को हुई धर्मसभा में मंच से जोश-उत्साह का संचार किया गया। कहा कि 6 दिसम्बर को प्रतीकात्मक कारसेवा होगी। 6 दिसम्बर तक लाखों कार सेवक अयोध्या पहुँच गए थे। उमा भारती द्वारा भीड़ को दिए दो नारे अभी भी याद हैं- 'एक धक्का और दो, बाबरी मस्जिद को तोड़ दो' तथा 'राम नाम सत्य है,बाबरी मस्जिद ध्वस्त है'। उत्साही कारसेवकों ने ढांचे के चारों ओर लगी बैरिकेडिंग को हाथों से ही उखाड़ दिया तथा पेड़ों के सहारे रस्सी बांधकर गुंबद पर चढ़ गए। पहले गुंबद पर चढ़ने वाला कारसेवकों का दल भरतपुर से था। कुछ घंटों में ढांचे के गुंबद एक-एक कर धराशाही हो गए।

प्रसाद लेकर जाएं

आचार्य धर्मेन्द्र कह रहे थे कि जिन्होंने प्रसाद (ईंट) नहीं लिया है, प्रसाद ले लें। हम सभी कारसेवक अपने साथ ढांचे की ईंट व रस्सियाँ साथ लाए।

(भरतपुर)

कलंक का ढांचा हटाए बिना नहीं जाएंगे

डॉ.नन्द सिंह नरूका

1992 सरकारी सेवा में रहते हुए भी कारसेवा में गए। कारसेवकों की मनःस्थिति, ध्वस्त ढांचे के बाद किस तरह रात को राम लला का अस्थाई मंदिर बना, कैसे सुरक्षा बलों का रास्ता रोका गया, का विवरण

राजस्थान उच्च शिक्षा में कार्यरत रहने के कारण वर्ष 1990 की कारसेवा में जाने की अनुमति संगठन द्वारा नहीं दी गई। कारसेवा के लिए कार्यकर्ता तैयार करते समय बोलते थे- 'कसो लंगोटो, ले लो सोटो, अब अयोध्या जाणो हैं, मंदिर वहीं बनानो है।'

1992 में कार सेवा के लिए कोटपूतली जिले से 27 नवम्बर को गए हमारे दल में 15 कारसेवक थे। हम लोगों को कहा गया था कि जो भी राजकीय सेवा में कार्यरत है वो अपना नाम बदल कर कार सेवा में जावे। हमारे दल के श्री श्याम लाल शर्मा प्रागपुरा निवासी जो राजकीय सेवा में वैद्य थे, अपने मूल नाम से ही कार सेवा में गये। अयोध्या में मंच पर चढ़ गए। उन्होंने ललकारा कि कलंक का ढ़ाचा हटा कर ही रहूँगा। लखनऊ रेल्वे स्टेशन पर ज्ञात हुआ कि उस समय के सरकार्यवाह मा. शेषाद्रि जी कार सेवकों को संभालने हेतु वहाँ बैठे हुए हैं।

कारसेवकों के लिए व्यवस्था

पूरी अयोध्या कार सेवकों से भर गई थी। भोजन-नाश्तों के पैकिट बड़े-बड़े ट्रकों द्वारा आते थे। दिसम्बर का माह अत्यधिक ठंडा होने से आवासों में नीचे सूखे ज्वार, बाजरा, मक्की के फड़ों को बिछाकर फिर बिस्तर लगाये गये थे। बाद में आने वालों को टेंट लगाकर ठहराया गया था।

एक मुट्ठी मिट्टी डालने के लिए आए हैं क्या?

कार सेवा के दो दिन पूर्व तत्कालीन सह-सरकार्यवाह मा. सुदर्शन जी ने कार्यकर्ताओं को अनुशासन में रहते हुए अगले दिन होने वाली प्रतीकात्मक कार सेवा का पूर्वाभ्यास करने को कहा। हम लोगों ने सरयू नदी के किनारे से एक-एक मुट्ठी मिट्टी लेकर पूर्वाभ्यास में भाग लिया। परन्तु अधिकांश लोग इससे संतुष्ट नहीं थे। वो कुछ ठोस करना चाहते थे। कह रहे थे कि क्या हमें एक-एक मुट्ठी मिट्टी डालने के लिए यहाँ बुलाया गया है ? मार्ग में जो भी मिलते वो कहते-अबके नहीं (अर्थात् ढ़ाचा नहीं हटा तो फिर कभी नहीं।) 1990 की कार सेवा से सबक लेने की आवश्यकता है। कुछ युवा और साधु तो अत्यधिक गुस्से में थे। कह रहे थे कि इस कलंक के ढ़ाचे को हटाये बिना हम नहीं जायेंगे।

आयोजकों को भरोसा था कि सर्वोच्च न्यायालय में चल रहे वाद का कोई ऐसा सम्मान जनक निर्णय जरूर आयेगा जिससे कारसेवा बिना ढ़ाचा हटाये हो सके। केन्द्र सरकार के असहयोगात्मक व्यवहार से माननीय न्यायालय का निर्णय समय पर नहीं आ सका, जिससे कारसेवकों एवं आयोजकों को काफी पीड़ा हुई। अखबारों में आ रहा था कि कार सेवकों में अत्यधिक गुस्सा व्याप्त हो गया है, आयोजकों की मानने वाले नहीं हैं। अब ढ़ाचा कार सेवकों के रहमो करम पर है। प्रतिदिन महात्माओं एवं नेताओं के जोशीले भाषण अयोध्या राम मंदिर को लेकर हो रहे थे। उमा भारती, लाल कृष्ण जी अड़वाणी आदि नेताओं के भी तथ्यात्मक भाषण सुनने को मिले।

कलंक ढांचा हटाए बिना नहीं जाएंगे

6 दिसम्बर को हम छत पर चढ़कर नेताओं के सम्बोधन सुन रहे थे। जोशीले लोगों का हल्ला बढ़ गया। चारों ओर से आवाजें आने लगी, कलंक के ढ़ाचे को हटाये बिना हम यहाँ से नहीं जायेंगे। कहते हैं कि उस समय एक बन्दर गुबन्दों पर कूद रहा था। श्री राम की ऐसी कृपा बनी कि जिससे कारसेवकों में दुगना उत्साह हो गया। सुरक्षा दीवारों को फान्दकर ढ़ाचे के चारों ओर कारसेवक पहुँच गये। देखते ही देखते जिसको जो हाथ लगा उससे ढ़ाचे को गिराने लग गये। चंद घण्टों में तीनों गुबन्दों को धराशाही कर दिया । मुझे भी जोश आ गया था। मैं भी ढ़ाचे के पास पहुँच कर पत्थर से दीवार तोड़ने हेतु चोट मार रहा था। उसी समय एक ईंट मेरे हाथ लगी जिस पर स्वास्तिक का चिन्ह बना हुआ था, मैं उसे अपने आवास पर ले आया था। उस समय की सिरोही से विधायक एवं विधान सभा में उपाध्यक्ष रही श्रीमती तारा भण्डारी भी कार सेवा हेतु हमारे भवन के टेण्ट में ठहरी हुई थीं। मेरी ईंट देखकर लोगों को कह रही थी कि ये देखो पूर्व में यहाँ मंदिर होने का स्पष्ट प्रमाण इस ईंट से भी पता चलता है।

सुरक्षा बलों को रोकने हेतु रास्ते रोके गए

रात्रि को आह्वान हुआ कि कार सेवा हेतु मंदिर की ओर चलो। हम लोगों ने पंक्तियाँ बनाकर अस्थाई मंदिर निर्माण में तगारियों से सामान पहुँचाया। अयोध्या के चारों ओर लोगों ने अग्नि जला दी थी जिससे सुरक्षाबल वहाँ तक नहीं पहुँच पाए। रात्रि में ही रामलला का अस्थायी मंदिर बनकर तैयार हो गया था। ऊपर तिरपाल से ढक दिया गया था। हम लोग अपने कक्षों में चले गए थे। फिर आह्वान हुआ कि मंदिर की ओर चलो। केन्द्र

सरकार ने राज्य सरकार को भंग कर वहाँ राष्ट्रपति शासन लागू कर शासन अपने हाथ में ले लिया और सूचना मिली कि कार सेवकों को खदेड़ने के लिए भारी मात्रा में सुरक्षा बल अयोध्या आ रहे हैं। राम मंदिर का अस्थाई भवन हटा नहीं दिया जावे, इसलिए हम सभी लोग मार्ग में जहाँ जगह मिली वहाँ बैठ गए तथा रामधुनी करते रहे, जिससे सुरक्षा बल मंदिर तक नहीं पहुँच पावे।

अगले दिन आह्वान हुआ कि कार सेवक अयोध्या को खाली करें। अपने साथ कोई भी मंदिर ढ़ाचे से संबंधित चिन्ह नहीं ले जावे। मैंने भी वह ईंट वहीं छोड़ दी। कार सेवकों के लिए लौटने हेतु अतिरिक्त रेलों की व्यवस्था कर दी गई है सभी लौट जावें। हमारा दल भी रेल्वे स्टेशन पर घर लौटने के लिए आ गया था तभी घोषणा हुई कि कारसेवक मंदिर की ओर पुन: लौटें। सुरक्षा बल मंदिर को हटाना चाहते हैं। हमारे दल के भी कुछ सदस्य मंदिर की ओर दौड़ चले थे। कुछ स्टेशन पर ही अधिकृत घोषणा की प्रतिक्षा में खड़े रहे। फिर थोड़ी देर बाद पुन: घोषणा हुई कि कार सेवक घरों की ओर लौट जावें, मंदिर को नहीं हटाया जा रहा है। हम रेल में बैठकर कानपुर की ओर लौट रहे थे तो मार्ग में जहाँ मुस्लिम आबादी थी, वहाँ घरों पर काले झण्डे लगाये हुए थे। सभी खामोशी की मुद्रा में थे, जाने अब आगे क्या होगा ?

श्रीमती जी ने तिलक लगाकर मुझे विदा किया था। पीछे जब तक हम अयोध्या रहे, उन्होंने एक समय भोजन किया। सुरक्षित लौटने पर जोड़े से दर्शन की मन्नत भी मांगी थी, जिसे दर्शन कर हमने पूर्ण किया तथा वहाँ मंदिर पर मौली बांधकर पुन: यह मन्नत मांगी कि जब रामलला का भव्य मंदिर बन जाएगा तब पुन: जोड़े से दर्शन हेतु आयेंगे?

(पूर्व अध्यक्ष, राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड, जयपुर)

पास आकर फटा आंसू गैस का गोला

विवेक कुमार गुप्ता

1990 की कारसेवा के समय मैं दिल्ली में रहता था। गाजियाबाद की एक कंपनी में मार्केटिंग का काम देखता था। हमारे मैनेजिंग डायरेक्टर को मैंने अयोध्या कारसेवा हेतु जाने का निर्णय सुनाया तो उन्होंने तुरंत छुट्टी देते हुए 500/- रुपए भी दिए और कहा,'हम तो जाने की हिम्मत नहीं कर पा रहे हैं पर आपके साथ हमारा भी कुछ योगदान होना ही चाहिए।'

गाँव में थी भोजन व्यवस्था

मैं अपने एक मित्र पारिजात कौल के साथ शाहदरा जिले से जाने वाली टोली में शामिल होकर ट्रेन से अयोध्या जाने के लिए निकल पड़ा। लखनऊ के बाद गौंडा स्टेशन से पहले ही एक स्थान पर 'जयश्रीराम' के नारे सुनाई पड़े। ट्रेन स्टेशन पर रुकनी नहीं थी, परंतु ड्राइवर ने ट्रेन धीमी कर दी तो अन्य कारसेवकों के साथ वहीं उतर गए। जिधर से जय श्रीराम की आवाज आ रही थी। उसी दिशा में चल पड़े। वहां कारसेवकों के लिए भोजन की व्यवस्था थी। भोजन के बाद वहां के एक कार्यकर्ता हम दोनों को पास के एक गांव मे छोड़ आए। पूरा गांव राममय था और कारसेवकों की सेवा में लगा था। चार-पांच दिन हम लोग पैदल ही चलते रहे। रास्ते में आने वाले गांवों में रुकने, भोजन-स्नान की सभी सुविधाएं गांव वाले कर रहे थे।

पुलिस से बचाया

हम चलते-चलते एक स्थान पर आगे बढ़ रहे थे तो अचानक ही गांव का एक व्यक्ति आया और भागो-भागो, मेरे पीछे आओ। यहां जो अभी मोटरसाइकिल वाला गया था वह मुसलमान है और यहां से एक किलोमीटर पर ही पुलिस चौकी है, वह उधर ही गया है। पुलिस किसी भी वक्त आ सकती है... कहकर हमें इशारे से अपनी साइकिल, जिस पर अपनी गाय के लिए उसने चारा बांध रखा था, के पीछे दौड़ने का इशारा किया। हम उसके पीछे दौड़े। थोड़ी दूर पर ही उसका घर था। झोपड़ी बनी हुई थी जहां एक गाय भी बंधी थी। उसने हमें उधर ही छुपा दिया। दोपहर 4: 00 बज रहे थे। उस समय उसके घर पर खाने जैसा कुछ नहीं था तो जाकर दूध निकाल लाया और हमें दूध पिलाया। फिर थोड़ी देर में स्थिति सामान्य लगने पर हमको विदा किया। अगले दिन भी रास्ते के गांव वालों ने हमें पुलिस से बचाये रखा।

एक कंबल पर छः लोग सोये

29 अक्टूबर को रात्रि में सरयू के किनारे एक गन्ने के खेत में गन्ने की पुवाल पर कंबल बिछाकर, एक ही कंबल पर छह लोग सोए। दूसरे दिन जैसे-तैसे कर हम दोनों सरयू के पुल पर पहुँच गए। उस पार अयोध्या थी। जबरदस्त जन सैलाब था। पुलिस रोक रही थी। हजारों कारसेवक अयोध्या के अंदर जाने की पूरी कोशिश कर रहे थे। दूसरे दिन नावों ने हमें सरयू पार कराई।

हिंदू अब शेर की तरह

वहां एक मन्दिर में रुकने की व्यवस्था थी। हम दिल्ली के 15-20 कारसेवक उसी मंदिर में इकट्ठे हो गए। उनमें एक 12 वर्ष के बृजभूषण, श्री रामनिवास जी (जो अभी आप पार्टी से दिल्ली विधानसभा के अध्यक्ष हैं) ऐसे लोग थे। हमने शाखा लगाई।

कबड्डी आईटीबीपी के जवानों के साथ खेली। अयोध्या में हम लाखों कारसेवक थे। स्वामी वामदेव जी के साथ अनेक संत हमारा मार्गदर्शन कर रहे थे। सुश्री उमा भारती जी अपने बाल काटकर कैसे पहुंची, ऐसे अनेक अनुभव साझा हो रहे थे। तब के गीत, बौद्धिक, चर्चा, अयोध्या की गलियां सब याद आता हैं। एक भाषण में कहा गया, ''हिंदू अब शेर की तरह खड़ा हो गया है। केंचुआ, खरगोश समझ उस पर अब कोई प्रयोगशाला में प्रयोग किए जाने वाला कमजोर नहीं रहा।'' ये मन में आज भी अंकित हैं।

फटा आंसू गैस का गोला

2 नवंबर को सांकेतिक कारसेवा का निश्चय हुआ। हम सभी से हाथ के डंडे ले लिए गए थे। शांति से आगे बढ़ने के निर्देश थे। तीन दिशाओं से अलग-अलग प्रांतों की रचना में आगे बढ़ना था । हम (दिल्ली प्रांत के लोग) छोटे रास्ते से हनुमानगढ़ी चौराहे पर पहले पहुंचे। हमने चेहरे पर चूना लगा रखा था और एक गीली तोलिया अपने पास रखी थी। ताकि आंसू गैस की स्थिति में बचाव के लिए गीले कपड़े से चूने को गीला करके बचा जा सके। हनुमानगढ़ी चौराहे पर पुलिस और हमारे बीच में संघर्ष शुरू हुआ। आंसू गैस के गोले, लाठी चार्ज शुरू हुआ। पीछे हजारों कारसेवक थे। सबको सूचना थी आगे नहीं बढ़ने की स्थिति में अपने स्थान पर बैठना। हम चौराहे पर संघर्ष कर रहे थे। उधर से एक आंसू गैस का गोला मेरे बगल में आकर फट गया। मेरी आंखों में तेज जलन होने लगी। गीले तौलिए और चूने जैसे सभी प्रयोग उस गोले के सामने विफल थे। सामने एक घर में मैं पानी से आंखों को धोने लगा। तभी गोलीबारी शुरू हो गई।

मीडिया के लोग वहां अच्छी संख्या में थे। पुलिस बेरहमी से निहत्थों पर गोली चला रही थी। मैं जिस घर में था, उन्होंने मुझे अंदर बंद कर दिया। बाहर का थोड़ा दृश्य सुनाई दे रहा था। मीडिया के लोग कह रहे थे, क्या करते हो ? क्यों मार रहे हो? और गोली चल रही थी। मैं 5-6 घंटे उसी स्थान पर रहा। जब मैं निकला तो कई कारसेवकों का गोली से शांत शरीर इधर उधर देखा। किसी के सिर में गोली लगी थी, किसी की छाती में...विशेष ट्रेन से दिल्ली के लिए वापसी हुई।

घर का माहौल....। पारिजात की मां पागलों की तरह घूमती थी। कश्मीर की थी, वहां उनके परिवार के साथ घटी घटनाओं के कारण भय से भरी थी और आशंकाओं से मन बेचैन था। अपनी कॉलोनी में पारिजात दूसरी गली में अपने घर को गया और मैं अपने घर जाने के लिए जैसे ही दूसरी गली में घुसा वे मुझे देखकर मेरे से लिपट कर जो रोई..। मैं भूल नहीं सकता।

(लेखक जयपुर महानगर कार्यवाह हैं)

लापता होने के समाचार ने परिवार को चिंता में डाला

रवीन्द्र जाजू

1989 में गांव गांव में शिला पूजन के कार्यक्रम होने वाले थे। सीकर तहसील के आसपास के 127 गांवों में रामशिला पूजन संपन्न कराने की दृष्टि से प्रभात शाखा के कार्यकर्ताओं ने 102 गांव अपने अपने जिम्मे लिए। लगभग 25 गांव बचे जो कम्युनिस्ट बहुल थे। काशी का बास, मूंडवाडा, चोखा का बास ,धोद ,बिडोली, दूजोद आदि। ये गांव सायं भाग के जिम्मे में आए। मैं सायं भाग कार्यवाह था। चार- चार ,पांच- पांच कार्यकर्ताओं की टोली बना इन गांव में शिला पूजन के लिए जाना शुरू किया। काशी का बास में गए तो वहां स्कूल में पीपल के पेड़ के नीचे एक नौजवान बैठा था। जिसने कहा कि ''तेरी ईंट को ले जा नहीं तो माथा फोड़ दूंगा'' हमने कहा ''क्या तेरे दो सिर हैं? यह झंडे के नीचे जो डंडा है वह क्या काम आएगा''। उस गांव में हमने प्रमुख लोगों से मिलते हुए, यह काम संपन्न करवाया। मूंडवाडा में उस समय कम्यूनिस्ट पार्टी के पूर्व विधायक अमराराम सरपंच थे। हमने वहां स्वतंत्रता सेनानी लादूलाल जी जोशी से संपर्क कर रामशिला पूजन की बात कही। इस पर वह बहुत खुश हुए। कहा ''मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का मंदिर उनके जन्म स्थान पर नहीं बनेगा तो कहां बनेगा।'' मैंने कहा आपके नाम से यह संदेश समाचार पत्रों में दें तो आपको कोई आपत्ति तो नहीं है तो उन्होंने कहा कि कैसी आपत्ति? आप भी कैसी बात कर रहे हो? मैं इस पर साइन कर सकता हूं। उस समय उन्हें कांग्रेसी माना जाता था। उसी दौर में वहां रामलीला चल रही थी। हमने रामलीला के मंच का उपयोग करते हुए वहां शिला पूजन करवाया। समाज ने बहुत उत्साह से उस कार्यक्रम में भाग लिया। जिससे हमारा उत्साह बढ़ गया और शेष बचे 23 ग्रामों को भी हमने पूर्ण किया।

सोहन सिंह जी का निर्देश- कुछ भी करना पड़े अयोध्या पहुँचना ही है

30 अक्टूबर 1990 को अयोध्या में होने वाली कारसेवा के संबंध में राजस्थान के क्षेत्र प्रचारक सोहन सिंह जी ने प्रवास करके कहा कि ''चाहे सो कर जाना, बैठ कर जाना, लेट कर जाना, जाना अयोध्या जी है। रास्ते में अनेक बाधाएं आएंगी, उन सब को पार करते हुए आप सबको अयोध्या जी पहुंचना है। ''

कार सेवा में जाने की तारीख तय हुई 22 अक्टूबर। मैं जाने वाले कारसेवकों से संपर्क करता हुआ लगभग दो ढाई बजे पिताजी के सामने आया और बोला कि मैं कार सेवा में जा रहा हूं तो उन्होंने मेरे दृढ़ निश्चय को परखने के लिए कहा कि ''तू नहीं जाएगा तो क्या कार सेवा नहीं होगी'' मैंने कहा सब पिता इसी प्रकार सोचेंगे और सभी बेटे आज्ञाकारी हो जाएंगे तो निश्चित ही कार सेवा नहीं होगी और हिंदू समाज को नीचा देखना पड़ेगा। उन्होंने कहा तुम्हें जो जी में आये करो। स्वयंसेवकों को घर से निकालना और जहां से कार्यक्रम आरंभ होना है वहां पहुंचाना, इसी में ट्रेन का समय हो गया।

गिरफ्तारी

अगले दिन हमारे 252 में से 228 साथी मुरादाबाद के पास के स्टेशन पर गिरफ्तार कर लिए गए। गाड़ी के अंदर प्रत्येक व्यक्ति के सामान की तलाशी होती थी, जिस भी बैग के अंदर गुड़ और चना होता था, उसे उतार कर पुलिस अपने घेरे में ले लेती थी। कुछ स्वयंसेवक उनकी घेराबंदी को धता बताकर वापस ट्रेन में बैठ जाते। 23 अक्टूबर को हम लखनऊ पहुंच गए। वहां हमें पता चला कि समस्तीपुर बिहार में लालू यादव ने श्री लालकृष्ण आडवाणी को गिरफ्तार कर लिया गया है और लखनऊ से आगे कोई ट्रेन अब नहीं जाएगी। ऐसे में हमारे पास लखनऊ उतरने के अलावा कोई चारा नहीं था।

स्थानीय लोगों ने कहा- नहर के साथ चले जाओ

लखनऊ से आगे जाने के सारे रास्ते बंद थे। ट्रेन बंद थी, बस बंद थी। निर्णय हुआ कि हमें पैदल चलना चाहिए। स्थानीय लोगो ने कहा कि आपको अयोध्या जी जाना है तो नहर- नहर के सहारे जाओगे तो पहुंच जाओगे। दिन भर पैदल चलते। रात को किसी गांव में विश्राम करते थे। एक गांव में रात्रि को पहुँचे तो उन्होंने हमें आटा, दाल, तेल, नमक, मिर्च वगैरह सामग्री दे दी। हमने वही गांव के बाहर जंगल में भोजन बनाकर विश्राम स्थली ढूंढी तो गांव वालों ने एक मंदिर में सोने के लिए हमें जगह दी। हम वहीं सो गए।

26 तारीख को हम फिर आगे बढ़े रास्ते में विष्णुकांत शास्त्री(जो बाद में उत्तर प्रदेश के राज्यपाल भी रहे), अखिल शुक्ला जी और अन्य कार्यकर्ता भी मिले। वह हमसे 1-2 पड़ाव आगे पीछे चल रहे थे। विष्णुकांत जी शास्त्री ने खेत में से हमें गन्ने तोड़कर दिए और कहा खा लीजिए- विटामिन बी कॉम्प्लेक्स के कैप्सूल है।

गांव वालों ने की बहुत सेवा, पैरों में मालिश तक की

गांव के लोग राम के काम के जाने के कारण हमें बहुत आदर करते। यहां तक कि हम युवाओं के भी पैर बुजुर्ग लोग छू लेते और पैरों में सरसों का तेल लगाते और मालिश करते। गरम पानी और नमक से पैरों का सेक कर ठीक करते। इस प्रकार हमने कल्याणी नदी पार की।

ग्रामीणों ने सिपाही को बंद किया

आगे एक गांव के अंदर हम रुके थे। उस गांव का ही एक व्यक्ति पुलिस में सिपाही था। जब उसने हमें देखा और वापस जाने लगा तो गांव वालों ने उसको पकड़ लिया और कहा तू नहीं जा सकता। तू जाकर पुलिस को कह देगा और पुलिस इन्हें पकड़ लेगी। गांव वालों ने उसे बंद कर दिया। हमें चावल के पुआल पर सोने के लिए व्यवस्था की।

नहीं ली नाव उतराई

28 अक्टूबर 1990 को 6-7 घर के नदी किनारे गाँव वालों ने केवट की भूमिका निभाई और राशि देने की चेष्टा की तो बताया आप कौनसे अपने काम से जा रहे हैं। आप भी तो रामजी के काम ही कर रहे हैं। हम नाव उतराई नही लेंगे।

उन्होंने बताया कि वे रोज 200-250 कारसेवकों को पार पहुचाते हैं। माताएं बहने रास्ते भर में आगे से आगे पूडियां बेल रही थी और आलू की सब्जी बना रही थी। जो भी कारसेवक आता, उन्हें खिलाती और आगे रवाना करतीं। बड़ी श्रद्धा भाव से यह सारा कार्य संपन्न हो रहा था। उन्होंने राम काज के लिए अपना सब कुछ लगा दिया था।

गडर पाईप से की नदी पार

29 अक्टूबर रात्रि में लगभग 2.30 बजे हमने एक गडर के ऊपर चलकर तमसा नदी पार की। थोड़ा सा भी पैर चूकते ही सीधे नदी में डूबने का डर था। इस प्रकार चलते-चलते हम अयोध्या जी के पास पहुंच गए। तब तक सांकेतिक कार सेवा हो चुकी थी और सर्वत्र दीपावली का सा माहौल था। घरों के ऊपर दीपक जल रहे थे और हर ओर रोशनी का माहौल था। वह दिन देवोत्थान एकादशी का था।

लापता होने की सूचना माता-पिता को मिली

बहुत पुराने परिचित उमापति जी शुक्ला के कहने पर हम सभी 24 कार्यकर्ता मणिराम दास जी की छावनी छोड़कर उमापति जी शुक्ल के घर पर चले गए। अब सूचीबद्ध तो मणिराम दास जी की छावनी में हो गए थे और चले गए शुक्ला जी के घर। दैनिक जागरण और पंजाब केसरी में यह समाचार छप गया कि सीकर के 24 कारसेवक लापता हैं। समाचार सुनकर हमारे परिजन बड़ी तकलीफ में आ गए और चिंता करने लग गए। हमें यह जानकारी वापस आने पर मिली।

मुलायम सरकार ने भोजन पैकेट नष्ट कराए। तैरती लाशों से टकराए।

31 अक्टूबर को सरयू नदी के पुलिया

पर हजारों भोजन पैकेट गाड़ी से उतरवा कर मुलायम सिंह की सरकार ने जला दिए थे कि कार सेवक भूखे रह जाएं। 1 तारीख को हम सरयू नदी में स्नान कर रहे थे तो एकदम से पैर किसी से टकराया, जब देखा तो दो लाशें थीं, जो बाद में समाचार पत्रों में सुर्खियों में रही। यहां सवेरे-शाम धर्म सभा होती थी। जिसमें महंत नृत्यगोपालदास जी , सत्यमित्रानंद गिरी जी, रामचंद्र परमहंस जी और अशोकजी सिंघल सहित पूज्य संतों के मुख से प्रवचन सुनते थे।

कारसेवकों की सहायता कर रही मां-बेटी को मारी गोली

2 नवंबर 1990 को हम सवेरे दो जत्थों में राम जन्मभूमि की ओर रवाना हुए। हम लोग मणिरामदास जी की छावनी , दिगंबर अखाड़ा, लाल कोठी, हनुमान गढ़ी चौक होते हुए जन्म भूमि की तरफ जाने वाले थे। हम लाल कोठी के आस-पास पहुंचे ही थे कि अश्रु गैस के गोले छोड़ने आरंभ हो गए। हम गोलों को कैच करते और नाली की तरफ कर देते थे, जिससे उनका प्रभाव कम हो जाए। आसपास के घरों वाले अयोध्या वासी हमें पानी दे रहे थे। देखते ही देखते एक बहिन और उसका बेटा जो हमें पानी दे रही थी उसको हमारी आंखों के सामने ही पुलिस ने बर्बरता पूर्वक गोली मार दी। वह वहीं घायल होकर गिर गई।

प्लास्टिक और बारूद की गोलियां चल रही थी। देखते ही देखते सारी सड़क रक्तरंजित हो गई। हम घायलों को उठाकर एंबुलेंस तक पहुंचा रहे थे। कुछ ही देर में सन्नाटा पसर गया।

जय श्रीराम का उद्घोष करने पर लाठियां मिली

आंखों में लगातार आंसू आ रहे थे और श्वास भी अश्रु गैस के कारण फूल गई थी। ऐसे में हम एक मकान में तख्त की आड़ में जाकर बैठ गए । कारसेवक उस मकान की दीवार फांद रहे थे। दीवार के उस पार एक कुआं था। उस पार प्रकाशनाथ जी महाराज जयपुर हरमाड़ा वाले थे। उन्होंने कुएं के ऊपर खाट रखी, जिससे दीवार फांद कर आने वाला कारसेवक कुएं में ना गिरे। उस दिन कई कारसेवक बलिदान हुए। हम जिस घर में बैठे थे, वहां भी फोर्स घुसी और हमें कहा कि आप यहाँ से चले जाएं। लेकिन हमारे सड़क पर आते ही फोर्स ने हमारी लाठियों से पिटाई शुरू कर दी। हम जय श्रीराम का उद्घोष करते रहे और वह हमें डंडे मारते रहे। लगभग 200-250 मीटर तक हमारी डंडो से पिटाई होती रही। शरीर पर डंडे पड़ते गए। हम किसी तरह अपने आवास तक पहुंचे। वह रात और अगली रात डंडों की मार के दर्द के कारण हम लोग सो नहीं सके। तब उमापति जी शुक्ला ने महुआ के रस से हमारी मालिश की तब कुछ आराम आया। नित्य रात्रि में माननीय मोती सिंह जी राठौड़ के लाल कोठी के पास में एक धर्मशाला की छत पर राजस्थान क्षेत्र का हिसाब किताब करते थे कि कितने कारसेवक चले थे कितने पकड़े गए कितने यहां पहुंचे और उनकी क्या स्थिति है।

बलिदानी समझने पर मां को कष्ट

हम 7 तारीख को रवाना होकर 9 तारीख को दिन में सीकर पहुंचे। समाचार पत्रों में हमारे लापता होने की खबर से हमारे रिश्तेदार व इष्ट मित्रों ने यह समझ लिया कि हम भी कार सेवा में बलिदान हो गए हैं। इस कारण घर पर माताएं, बहने और पुरुष आने लग गए। इससे मेरी मां की मनस्थिति बडी विचित्र हो गई । वह हर आहट के साथ मेरा रवि आ गया... मेरा रवि आ गया... बोलने लग गई । वह समय मेरी मां का बहुत ही कष्ट में बीता।

(लेखक चित्तौड़ प्रांत कुटुम्ब प्रबोधन संयोजक हैं)

अयोध्या के दिगम्बर अखाड़ा की ओर जाने वाली गली नं.2 का मकान जहाँ कोठारी बंधुओं को गोलियों से भूना गया तथा सन् 1990 में जयपुर में निकली राम ज्योति यात्रा । (फाइल चित्र)

चित्र साभार: डॉ. विजय दया

श्रद्धांजलि

नहीं रहे वरिष्ठ प्रचारक सत्यनारायण जी

संघ की रीति नीति के अनथक वाहक थे

संघ के वरिष्ठ प्रचारक सत्यरानायण जी का बीती 6 फरवरी की रात्रि को निधन हो गया। वे 91 वर्ष के थे तथा जयपुर के सवाईमानसिंह अस्पताल में उनका उपचार चल रहा था। सत्यनारायण जी 1947 में संघ के स्वयंसेवक बने और 1961 में प्रचारक बन कर गंगानगर, सवाईमाधोपुर, सीकर व टोंक में संघ कार्य को गति दी। आपातकाल के समय जयपुर संघ कार्यालय प्रमुख के नाते काम संभाला और 'हजारीलाल' के छद्म नाम से पुलिस की गिरफ्त से दूर रहते हुए जनजागरण का कार्य किया।

अंबाबाड़ी स्थित आदर्श विद्या मंदिर में आयोजित श्रद्धांजलि सभा (8 फरवरी) में वरिष्ठ प्रचारक शंकरलाल जी ने दिवगंत सत्यनारायण जी को संघ की रीति-नीति का अनथक वाहक बताते हुए कहा कि संघ स्थान पर कोई नहीं भी आए, तब भी वे अकेले ही सीटी बजाकर एक घंटे की शाखा के निर्धारित नियमित कालांश अवश्य पूरे करते थे। वे निर्मोही, वितरागी थे। श्रद्धांजलि सभा में राजस्थान क्षेत्र संघचालक डॉ. रमेश अग्रवाल ने कहा कि प्रचारक सनातन संस्कृति की ऋषि परम्परा का वाहक होता है। सत्यनारयण जी इसी प्रचारक परंपरा के मोती थे।

क्षेत्र प्रचारक श्री निम्बाराम, जयपुर प्रांत प्रचारक श्री बाबूलाल, प्रांत कार्यवाह श्री गेंदालाल, रेवासा पीठाधीश्वर राघवाचार्य जी, मुख्यमंत्री भजनलाल, उपमुख्यमंत्री श्रीमती दीया कुमारी सहित बड़ी संख्या में संघ के कार्यकर्ता तथा गणमान्य व्यक्तियों ने श्रद्धांजलि सभा में पहुँचकर दिवगंत प्रचारक को पुष्पांजलि अर्पित की।

पाथेय कण परिवार आपको श्रद्धासुमन अर्पित करता है।

चित्रमय समाचार

सहसरकार्यवाह मनमोहन वैद्य जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल में आयोजित पुस्तक चर्चा सत्र में पत्रकार मंदिरा नायर के सवाल का जवाब देते हुए। वे उनकी पुस्तक 'वी एंड द वर्ल्ड अराउंड' पर चर्चा कर रहे थे।

जयपुर में 'राष्ट्रीय स्वत्व के लिए संघर्ष' पुस्तक विमोचन कार्यक्रम में प्रांत संयोजक प्रज्ञा प्रवाह श्री देवेश बंसल, प्रज्ञा प्रवाह के राष्ट्रीय संयोजक जे. नंदकुमार, विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी, डॉ. एसएस अग्रवाल व प्रज्ञा प्रवाह के महानगर संयोजक डॉ. राजेश मेठी

बिड़ला ऑडिटोरियम जयपुर में आयोजित आदर्श विद्या मंदिर के पूर्व छात्रों के सम्मेलन में उपस्थित क्षेत्र प्रचारक निम्बाराम जी व उपमुख्यमंत्री श्रीमती दीया कुमारी

पश्चिमी राजस्थान उद्योग हस्तशिल्प उत्सव 2024 में विश्व संवाद केन्द्र, जोधपुर की ओर से लगाए गए साहित्य स्टॉल का अवलोकन करते अ.भा.सह प्रचारक प्रमुख श्री अद्वैतचरण दत्त, प्रांत प्रचारक श्री योगेन्द्र कुमार व लघु उद्योग भारती के राष्ट्रीय अध्यक्ष घनश्याम ओझा।

श्री रामलला के अयोध्या आगमन पर आप सभी को

बधाई और शुभकामनाएं

VELNIK

Website- https://velnik.com/

Nutrigain

Smart Way to Healthier Life

Sunplast

Moulded Furniture

Ganpati Polymers

F-2262, Ramchandrapura, RIICo Industria Area,
Goner Road, Sitapura, Jaipur
E-Mail : ganapatipolymers1@gmail.com

KAILASH SANKHLA
Mob. 9829322600

J.K. Khatri

Real Estate Consultant

JAY KISHAN
KHATRI

Mob. 9314505459
9829015459

J.K. Enterprises

Fact : H-1-620, RIICO Industrial Area,
Sitapura, Jaipur-302022 (Raj.)
E-Mail : khatrijaikishan@yahoo.co.in

Also Deals : Polythin Bags,
B.O.P.P., Rolls & Packing Materials,
Six Colour Flexo Printing

'राम और राष्ट्र पर समझौता नहीं'- कहने वाले आचार्य प्रमोद कृष्णम को कांग्रेस ने पार्टी से निकाला

कांग्रेस के नेता आचार्य प्रमोद कृष्णम ने कांग्रेस पार्टी द्वारा रामलला के प्राण प्रतिष्ठा समारोह में शामिल नहीं होने की आलोचना की थी। उन्होंने कहा, ''राम और राष्ट्र पर समझौता नहीं किया जा सकता।'' दो दिन बाद ही कांग्रेस ने उन्हें अपनी पार्टी से बर्खास्त कर दिया। आखिर कांग्रेस एक राम भक्त को अपनी पार्टी में कब तक सहन करती?

सरकार पहुंची राम के दरबार में

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री, मंत्रीगण, विधानसभा अध्यक्ष सहित सतारूढ़ एवं विपक्षी दलों के 300 से अधिक विधायकों ने बीती 11 फरवरी को अयोध्या जा कर रामलला के दर्शन किए। लखनऊ से अयोध्या तक 10 बसों से यात्रा करते हुए अयोध्या पहुंचे विधायकों ने 'जय श्रीराम' के नारे लगाते हुए तथा भजन गाते हुए राम मंदिर में प्रवेश किया।

विधायकों के इस दल में कांग्रेस व बहुजन समाज पार्टी के भी कई विधायक शामिल थे, परन्तु अखिलेश यादव की समाजवादी पार्टी के सभी विधायक इस यात्रा से दूर रहे। माना जा रहा है कि सपा का यह रूख मुसलमानों को खुश कर उनके वोट प्राप्त करने के लिए हैं। सपा की यह मुस्लिम परस्ती कहीं उसे हिंदुओं से दूर न कर दे।

पाथेय कण सदस्यता अभियान

अभी पाथेय कण का सदस्यता अभियान चल रहा है। अत: सभी पुराने-नये सदस्यों से आग्रह है कि अपनी सदस्यता प्राप्त करने हेतु कार्यकर्ताओं का सहयोग/सम्पर्क करें। कहीं पर कोई कार्यकर्ता नहीं पहुँचे हों तो आप पाथेय कण कार्यालय से सीधा सम्पर्क कर बैंक, डाकघर या पेटीएम से ऑनलाइन सदस्य बन सकते हैं।

पाथेय कण संस्थान

बैंक ऑफ बड़ौदा
खाता संख्या- **01130100007568**
IFSC Code - **BARB0MALJAI**

स्टेट बैंक ऑफ इंडिया
खाता संख्या- **61088526287**
IFSC Code - **BIN0031772**

पेटीएम द्वारा - मो. 7976582011 पर या संलग्न **QR Code** स्केन कर भी जमा कर सकते हैं। उसका स्क्रीनशॉट व अपना पता व्हाट्सएप पर भिजवा दें।

प्रबंध संपादक
ओमप्रकाश

BABA MASTNATH UNIVERSITY

Asthal Bohar, Rohtak-124021 (Haryana)

Established under Haryana Private Universities Act, 2006 and Recognised by UGC

250+ Acres
Lush Green Campus
25000+
Registered Alumni
10000+
Students
80+
Approved Courses

COURSES OFFERED BY THE UNIVERSITY

BAMS	B.TECH.
BPT	M.TECH.
MPT	BBA
D.Pharma	MBA
B.Pharma	BCA
M.Pharma	MCA
GNM	B.COM
PB. B.Sc (Nur.)	B.COM (Hons.)
B.Sc	M.COM
B.Sc (Hons.)	BA
M.Sc	BA Eng. (Hons.)
BA-LL.B	MA (All Stream)
LL.B	B.Lib.
LL.M	M.Lib.
Shastri	BJMC
Ph.D (All Stream)	MJMC

For detailed information regarding admissions interested/eligible candidates may visit

+91-90530 66636
8683888830/31/32

Website www.bmu.ac.in
Email admissions2024@bmu.ac.in

अयोध्या में
भव्य राम मंदिर
की प्राण प्रतिष्ठा होने के अवसर
पर हार्दिक शुभकामनाएं
नन्दी
ISO 9001
30
Years of Excellence
कोइल पाईप
Nandi
PAWAN POLYTEX PVT. LTD.
इनलाइन ड्रीप
इनलाइन फ्लैट ड्रिप
पाईप व फव्वारा सिस्टम
मिनी स्प्रिंकलर सिस्टम
पवन पोलीटेक्स प्रा.लि.
एफ-20, रिको इण्डस्ट्रीयल एरिया, नोखा -334803 (राज.) फोन नं. 01531-220555, 221555, 222555 (Mobile) 8503055555
ब्रांच ऑफिस - जयपुर, गुरुग्राम, रांची
E-mail : info@pawanpolytex.com Website : www.pawanpolytex.com Tollfree No. : 1800-120-2377

कार्यालय नगर पालिका मण्डल
बाड़ी (धौलपुर) राज.

अध्यक्ष
नगर पालिका बाड़ी, धौलपुर

अधिशाषी अधिकारी
नगर पालिका बाड़ी, धौलपुर

- घर-घर कचरा संग्रहण में सभी नगर पालिका का सहयोग करें।
- निर्माण बिना स्वीकृति के नहीं करे।
- सड़क पर पानी, कचरा ना फैलायें।
- कूड़े को कचरा पात्र में ही डालें।
- नगर पालिका की सम्पत्ति को नुकसान ना पहुंचायें।
- समय पर अपना नगरीय विकास कर जमा करायें।
- अपने बच्चों को खुले में शौच ना करायें।
- घर में जल प्रवाहित शौचालय का प्रयोग करें।
- नगर पालिका भूमि पर अतिक्रमण नहीं करें।
- समय पर 21 दिन के अन्दर जन्म मृत्यु का पंजीयन करायें।

पाथेय कण द्वारा प्रकाशित विशेषांक

श्रीराम जन्मभूमि मंदिर संघर्ष से सिद्धि और 'स्व' का जागरण

पर आप सभी को

हार्दिक शुभकामनाएँ

पीयूष महेन्द्र मंत्री
प्रियांशी मंत्री
कोर्ट के पीछे, सीकर (राज.)
मो. 8947972484

महालक्ष्मी बीज भण्डार
सीकर (राज.)

पाथेय कण द्वारा प्रकाशित विशेषांक

श्रीराम जन्मभूमि मंदिर : संघर्ष से सिद्धि और 'स्व' का जागरण

पर आप सभी को

हार्दिक शुभकामनाएँ

श्री नितिन बंसल
प्रधान पंचायत समिति
पिण्डवाड़ा

निदेशक
एन.टी.सी. प्रा. लि.

अलवर जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लि., अलवर

जोराराम कुमावत
कैबिनेट मंत्री

जवाहर बेढम
राज्य मंत्री

संजय शर्मा
राज्य मंत्री स्वतंत्र प्रभार

महंत
बाबा बालकनाथ योगी
राज. विधानसभा सदस्य

आमजन से अपील

'स्वच्छ भारत मिशन'

- स्वच्छ भारत मिशन भारत सरकार द्वारा 2 अक्टूबर, 2014 को आरंभ किया गया। यह एक राष्ट्रीय स्तर का अभियान है, जिसका उद्देश्य गलियों, सड़कों तथा अधोसंरचना को साफ-सुथरा करना है।
- घरों से निकलने वाले गीले, सूखे एवं हानिकारक कचरे का पृथक-पृथक संग्रहण करें।
- कचरे को सड़क एवं सार्वजनिक स्थानों पर ना फेंकें तथा शहर को साफ-सुथरा रखें।
- सिंगल यूज प्लास्टिक एवं कैरी बैग का उपयोग करें।
- अलवर शहर को स्वच्छ एवं सुन्दर बनाने का संकल्प लें।

विश्राम गुर्जर
अध्यक्ष

स्वच्छता, शुद्धता, पुष्टता एवं विश्वसनीयता का वादा

अलवर जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड
भवानी तोप का चौराहा, अलवर
फोन: 0144-2333926, फैक्स: 0144-2342925, ई-मेल: rcdfalw@yahoo.co.in

श्रीराम जन्मभूमि मंदिर

संघर्ष से सिद्धि और 'स्व' का जागरण

विशेषांक के प्रकाशन पर

आप सभी को **हार्दिक शुभकामनाएँ**

राजा राम गुर्जर

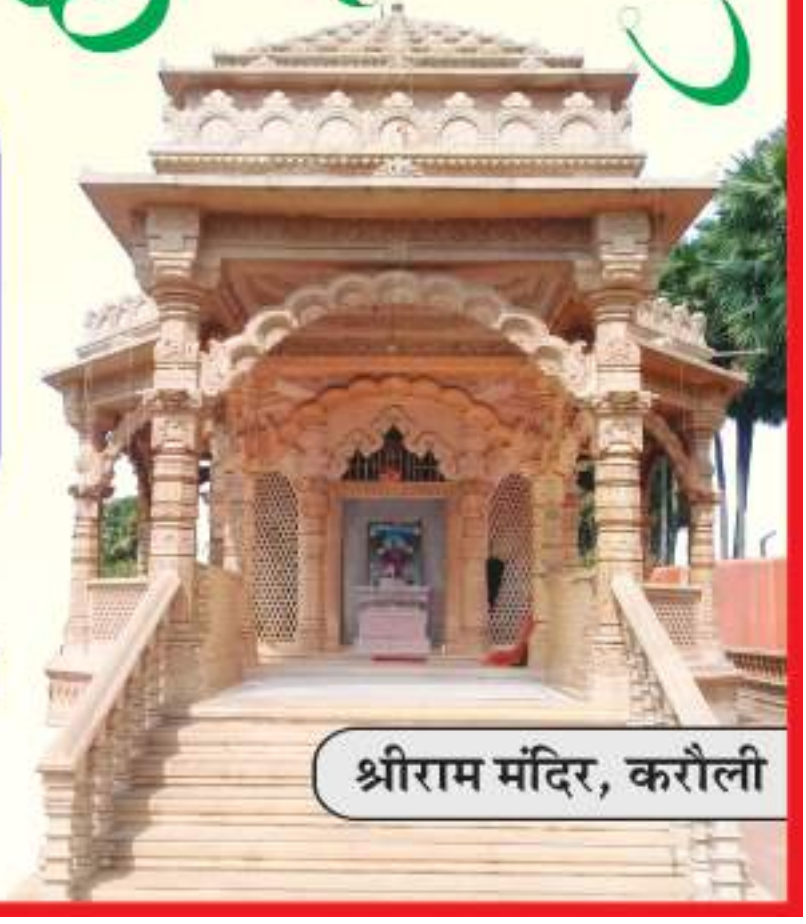

श्रीराम मंदिर, करौली

ULB Code : 900600
श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री
श्री भजनलाल शर्मा
माननीय मुख्यमंत्री, राजस्थान
स्वच्छ सर्वेक्षण
2024
स्वच्छ रहेगा जयपुर
स्वस्थ रहेगा जयपुर
REDUCE
REUSE
RECYCLE
#RRR for life
पुनः उपयोग योग्य (reusable) व पुनःचक्रण योग्य (recyclable) उत्पादों को अपनाकर, हम प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण, प्रदूषण को कम करने और एक हरित, अधिक टिकाऊ भविष्य के निर्माण में सक्रिय रूप से योगदान दे सकते हैं।
स्वच्छ सर्वेक्षण 2024 में भाग लें, जयपुर को नं. 1 बनाएं
स्वच्छ सर्वेक्षण
जहां आएंगे राम
स्वच्छ रहे हर धाम
निवेदक
डॉ. सौम्या गुर्जर, महापौर
नगर निगम ग्रेटर, जयपुर
नगर निगम ग्रेटर जयपुर

सेठ गिरधारी लाल बिहाणी सनातन धर्म शिक्षा ट्रस्ट

सुखाड़िया सर्किल
श्रीगंगानगर (राज.)
335001

शिशु शिक्षा, विश्वविद्यालय शिक्षा एवं
तकनीकी शिक्षा का प्रमुख केन्द्र

- सेठ गिरधारी लाल बिहाणी स.ध. स्नातकोत्तर महाविद्यालय
- सेठ गिरधारी लाल बिहाणी स.ध. विधि स्नातकोत्तर महाविद्यालय
- सेठ गिरधारी लाल बिहाणी स.ध. तकनीकी शिक्षा महाविद्यालय
- सेठ सुशील कुमार बिहाणी स.ध. शिक्षा महाविद्यालय
- बिहाणी चिल्ड्रन्स एकेडमी
- सेठ गिरधारी लाल बिहाणी स.ध. उच्च माध्यमिक विद्यालय
- भामाशाह सुशील कुमार बिहाणी ब्लड सैंटर
- श्रीमती तीजां देवी बिहाणी महिला छात्रावास
- सेठ सुशील कुमार बिहाणी क्रिकेट एकेडमी
- सेठ गिरधारी लाल बिहाणी स्मृति शिव मन्दिर एवं सत्संग भवन
- श्री धर्मसंघ संस्कृत महाविद्यालय (गौशाला), श्रीगंगानगर

जयदीप बिहाणी
विधायक, श्रीगंगानगर
अध्यक्ष, सेठ गिरधारी लाल बिहाणी सनातन धर्म शिक्षा ट्रस्ट

केन्द्रीय कार्यालय :- 0154-2466773, 2466774

SETH GIRDHARI LAL
Since 1961
BIHANI
SD SHIKSHA TRUST

पाक्षिक
पाथेय कण
16 फरवरी,2024(संयुक्तांक)
(10 फरवरी को प्रकाशित)

आर.एन.आई पंजीयन क्र. 48760/87
डाक पंजीयन संख्या JAIPUR CITY 202/2024-26

अग्रिम शुल्क बिना प्रेषण की अनुमति लाइसेंस संख्या
JAIPUR CITY/WPP 01/2024-26

श्री राम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा पर

हार्दिक शुभकामनाएं

राव प्रेमसिंह
जालोर - सिरोही

@RaoPremSingh
@RaoPremOfficial
@RaoPremSinghOfficial

स्वत्वाधिकारी पाथेय कण संस्थान के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक माणकचन्द
द्वारा कुमार एण्ड कम्पनी, ए-10, 22 गोदाम औद्योगिक क्षेत्र, जयपुर से मुद्रित
प्रकाशकीय कार्यालय : पाथेय भवन, 4 मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, मालवीय नगर, जयपुर-302017
सम्पादक- रामस्वरूप अग्रवाल
प्रेषण दिनांक 16,17,18,19 व 20 फरवरी, 2024 आर.एम.एस.(पी.एस.ओ.) जयपुर

प्रतिष्ठा में,